विखरे तिनके



मूल्य पच्चीस रुपये (25 00)

प्रथम संस्करण 1982,
Bikhare Tinke (Novel) *by* Amritlal Nagar

बिखरे तिनके

अमृतलाल नागर

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

मनागत की छठ गुरसरनलाल का जन्मदिन है और पिछले पाँच वर्षों से पितर पक्खी सराधों में उनके पिता का श्राद्ध दिन भी। आज उनका छप्पनवाँ जन्मदिवस है। नगरपालिका के स्वास्थ्य विभाग में हेल्थ अफसर पी० ए० के पद पर काम करने का अंतिम दिन शायद एक्सटेंशन के लिए आर्डर आ जाए। कल तक तो हर सुबह आशा की पतंग खूब दौर दम्भकर उड़ाई और हर शाम एक निसास ढील कर शायद कल आए की आशा के साथ नीचे उतार ली। दिन टल गए परन्तु आज अपने जन्म दिवस के दिन झूठी चाहत भरे झूठे सपनों की धुंध मिट चुकी है। वस्तु सत्य साफ-साफ झलक उठा है आज तुम्हारा अंतिम दिन है। आज तुम रिटायर हो जाओगे। समय आड़े आ रहा है। शायद है आ भी जाए। परसों राजधानी जाकर लोकल सेल्फ के जनसंघी मंत्री से भी मिल आए थे। जगदीशनर शास्त्री के साथ गए थे मंत्री जी के समधी हैं मंत्री जी ने आश्वासन भी दिया था। शायद तीन बरस के लिए नौकरी बहाल हो जाए। देखो।

गुरसरन बाबू का मन ऊँचा-नीचा हो रहा है। साढ़े आठ बज रहे हैं। रघुवर महाराज के यहाँ बिल्लू को भेजा है कि बुला लाए। पता नहीं मनागत में बाम्हन और चढ़ती उमरिया में लौंडिया के नक्शे नहीं मिलते हैं।—स्माल[1] नीचे का आधा मकान किराये पर एक प्रेस वाले को दे दिया है। बैठक का एक दरवाज़ा किरायेदार का मुख्य द्वार बन गया है बैठक से धुरभीतर तक दीवार खिंचवा दी है इसलिए बैठक और आँगन दालान छोटे हो गए हैं। बुरा क्या है, तीन सौ रुपये किराये के आते हैं, दीवार उठवाने का खर्च भी किरायेदार ने दिया था। बस सतसाई बाबा की दया से इस समय गुरसरन बाबू की तीन कोठियाँ सिविल लाइंस में हैं दरीबे में एक छह दुकानों वाली इमारत है। ऊपर, तीन फ्लैट बने हैं जिनमें उनके तीन बेटे अपनी-अपनी गिरस्ती के साथ रहते हैं। बल्कि तीसरा लड़का

संतोषी प्रसाद तो अब पसंवाला हो गया है विशननारायण रोड पर कोठी बनवा रहा है। दुकानों का किराया आप वसूलते हैं। सब मिलाकर दो सवा सौ हजार किराये की आमदनी है। चार लड़कियों के ब्याह किए इसलिए बैंक बैलेंस बहुत नहीं बन पाया। पत्नी भी विरासत में एक गाँव लेकर आई थी उस जमींदारी अबालिशन से डेढ़ बरस पहले बेच कर लाख रुपये जमा किए थे उसका ब्याज भी आता है। खाद के लिए बिकने वाली शहर भर की मैला गाड़ियों की कमाई में गुरसरन बाबू और चीफ सेनेटरी इंस्पेक्टर तो बड़ी दाढ़ वाले बने ही मेहतर महावीर चौधरी भी लखपती बन गया। म्युनिसिपल अस्पतालों के लिए दवाओं और इंजेक्शनों आदि सामान की खरीद होने पर भी अच्छा कमीशन डकारा है। हर फूड इंस्पेक्टर की आमदनी इनकी मुट्ठी गरम किए बिना हो ही नहीं सकती। शहर भर के फूड इंस्पेक्टरों को अच्छी आमदनी वाले क्षेत्र में अपनी नियुक्ति के लिए गुरसरन बाबू के द्वारा आयोजित खुफिया नीलाम में सबसे ऊंची बोली लगानी पड़ती है। या खाते तो सभी हैं परन्तु गुरसरन बाबू जैसे सबको बोटी-बोटी नोच कर खाते रहे वैसा कोई बड़ा बेदिल वाला ही खा पाता है।

गुरसरन बाबू ने जूनियर क्लर्क की नौकरी से शुरू किया था। तरक्की करते-करते हेल्थ अफसर के पी०ए० के पद पर पहुंचे चीटा भसा बनकर रिटायर हो रहा है अगर आड़से न आए तो? ये साला हेल्थ अफसर हरामी है सोशलिस्टों जनसंघियों दोनों को पटाये हुए है और इन्हें बेहद सताता है। हर हफ्ते दो चक्कर राजधानी के मार आता है। दफ्तर में इनके खिलाफ ऐसी पालिटिक्स फलाई है कि यही हैं जो पिछले तीन वर्षों से शान के साथ खेल रहे हैं। अगर गुरसरन बाबू दो बरसों का एक्सटेंशन पा गए तो हेल्थ अफसर को ऐसे ठौर पर मारेंगे जहां पानी भी न मिले। बस अगर आज रिटायर भी हुए तो भी उसकी जनमपत्री ऐसी बिगाड़ जाएंगे जैसी तेजाब से सूरत बिगड़ती है। पिछले पौने दो बरसों में गुरसरन बाबू को फमाने के लिए एच०ओ० (हेल्थ अफसर) ने क्या क्या जाल फैलाए हैं कि बस उनका कलेजा ही जानता है। वह तो कहो कि मारने वाले हाथ से बचाने वाला हाथ बड़ा साबित हुआ बड़े दामाद उन दिनों शहर के सुप्रिंटेंडेंट पुलिस थे। अपने ससुर को बचाने के लिए उसने एच० ओ० का बिछाया जाल बार बार काट कर फेंक दिया। दफ्तर के हर क्लर्क हर इंस्पेक्टर के पीछे पुलिस की जूतामार धमकियां छोड़ दी थीं। इमरजेंसी

ही नहीं उसके बाद भी छः आठ महीनों तक न तो जनता वाले इनके दामाद को ही हटा पाए और न इनका एक बाल भी बाँका हो पाया। तब तक गुरसरन बाबू ने पण्डित जटाशंकर का दरबार भी साध लिया था। इस बीच में एच०आ० खराब तो बहुत मारते रहे पर उन्हें घायल न कर पाये। देखो, आज एच०आ० जीतता है कि मैं जीतता हूँ!

बैठक जब से एक दर वाली हो गई है तब से कोठरीनुमा हो गई है। बाप दादे की एक छोटी आरामकुर्सी, तीन मूढ़े और एक गोल मेज़ से भरी भरी लगती है। ऊपर जाने का एक रास्ता इस कोठरीनुमा बैठक से जुड़ा है। गुरसरन बाबू ने अपनी चिन्ता समाधि से उबर कर एक खोई हुई नज़र घड़ी पर, दूसरी सीढ़ी पर, तीसरी दीवार पर टंगे कलेंडर पर डाली। वहाँ उचटती अकुलाई नज़रें एकाएक ठहर सी आ गई। 13 सितम्बर। साली अंग्रेजी तारीख में भी आज का दिन मनहूस ही साबित हो रहा है। बिल्लू को बाहर बुलाने भेजा, वह वहीं चिपक गया। अब तो बजने में सात मिनट हैं। सवा नौ की बस नहीं छूटनी चाहिए। खैर, आज रिक्शे से भी चला जाऊँ तो कम से कम खाना खाकर तो घर से निकल सकता हूँ। तेलहीन दीये की बुझती बाती की चुनौती-सी लौ जैसा गुरसरन बाबू का मन इस मनहूसियत बोध से विवश होकर अपने आपको अनिवार्य अंत के प्रति समर्पित करने लगा। लेकिन गुरसरन बाबू को आज आफिस तो करेक्ट रेडियो टाइम से पहुँचना ही है। भले रिटायर हो जाएँ पर आज अगर दफ्तर के तीन चार चिड़ीमारों को जाल में फँसी चिड़िया बनाकर न छोड़ा तो असल बाप से पैदा नहीं। हम तो डूबेंगे सनम यार को ले डूबेंगे। एच०आ० साले के ख़िलाफ़ ऐसे डाक्यूमेण्ट्स हैं कि असम्बली तक में तहलका मच जाएगा। दूसरे, इस्टेब्लिशमेंट क्लर्क नौबतराय की नौबत बजानी है। कमीना अपने जातिभाई के ख़िलाफ़ एक कमीनुलकमीन बनिये का समर्थन कर रहा है। इस कम्बख्त की तो नौकरी ही ले बीतना है। हेल्थ अफसर को भी त्यागपत्र देने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।

कपिला केमीकल एण्ड फार्मेस्युटिकल कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड में इनके दूसरे दामाद का सगा छोटा भाई काम करता है। सेठ का पी०ए० है। पीने की लत है। एक बार अपने सेठ के नाम एच०आ० गोयल की एक चिट्ठी गुरसरन बाबू के हाथ पिछहत्तर रुपये में बेच गया था। दफ्तर के छपे कागज़ पर गोयल ने लिखा था— मैंने आपका भला करने के लिए आदेश-पत्र टाइप करवा लिया है। आप लंच टाइम में आफिस आकर

संतोषी प्रसाद तो अब पैसेवाला हो गया है विशननारायण रोड पर कोठी बनवा रहा है। दुकानों का किराया आप वसूलते हैं। सब मिलाकर दो सवा दो हजार किराये की आमदनी है। चार लड़कियों के ब्याह किए इसलिए बैंक बैलेंस बहुत नहीं बन पाया। पत्नी भी विरासत में एक गाँव लेकर आई थी उसे जमींदारी अबालिशन से डेढ़ बरस पहले बेच कर लाख रुपये जमा किए थे उसका ब्याज भी आता है। खाद के लिए बिकने वाली शहर भर की मैला गाड़ियों की कमाई में गुरसरन बाबू और चीफ सैनेटरी इंस्पेक्टर तो बड़ा नाम वाले बने ही मेहतर महावीर चौधरी भी लखपती बन गया। म्युनिसिपल अस्पताल के लिए दवाओं और इंजेक्शनों आदि सामान की खरीद होने पर भी अच्छा कमीशन डकारा है। हर फूड इंस्पेक्टर की आमदनी इनकी मुट्ठी गरम किए बिना हो ही नहीं सकती। शहर भर के फूड इंस्पेक्टरों को अच्छी आमदनी वाले क्षेत्र में अपनी नियुक्ति के लिए गुरसरन बाबू के द्वारा आयोजित खुफिया नीलाम में सबसे ऊँची बोली लगानी पड़ती है। यों खाते तो सभी हैं परंतु गुरसरन बाबू जैसे सबको बोटी-बोटी नोच कर खाते रहे वैसा कोई बड़ा बेदिल वाला ही खा पाता है।

गुरसरन बाबू ने जूनियर क्लर्क की नौकरी से शुरू किया था। तरक्की करते-करते हेल्थ अफसर के पी०ए० के पद पर पहुँचे चीटा भैंसा बनकर रिटायर हो रहा है अगर आड़ेस न आए तो? ये साला हेल्थ अफसर हरामी है सोशलिस्टों जनसंघियों दोनों को पटाये हुए है और इन्हें बेहद सताता है। हर हफ्ते दो चक्कर राजधानी के मार आता है। दफ्तर में इनके खिलाफ ऐसी पॉलिटिक्स फैलाई है कि यही हैं जो पिछले तीन वर्षों से शान के साथ खेल रहे हैं। अगर गुरसरन बाबू दो बरसों का एक्सटेंशन पा गए तो हेल्थ अफसर को ऐसे ठौर पर मारेंगे जहाँ पानी भी न मिले। बस अगर आज रिटायर भी हुए तो भी उसकी जनमपत्री ऐसी बिगाड़ जाएँगे जैसी तेजाब से सूरत बिगड़ती है। पिछले पौने दो बरसों में गुरसरन बाबू को फँसाने के लिए एच०ओ० (हेल्थ अफसर) ने क्या क्या जाल फैलाए हैं कि बस उनका कलेजा ही जानता है। वह तो कहो कि मारने वाले हाथ से बचाने वाला हाथ बड़ा साबित हुआ बड़े दामाद उन दिनों शहर के सुपरिंटेंडेंट पुलिस थे। अपने ससुर को बचाने के लिए उसने एच० ओ० का बिछाया जाल तार तार काट कर फेंक दिया। दफ्तर के हर क्लर्क हर इंस्पेक्टर के पीछे पुलिस की जूतामार धमकियाँ छोड़ दी थीं। इमरजेंसी

हो रही उसके बाद भी छः आठ महीनों तक न तो जनता वाले इनके दामाद को ही हटा पाए और न इनका एक बाल भी बांका हो पाया। तब तक गुरसरन बाबू ने पण्डित जटाशंकर का दरबार भी साध लिया था। इस बीच में एच०आ० खरोंचें तो बहुत मारते रहे पर उन्हें घायल न कर पाये। देखो, आज एच०आ० जीतता है कि मैं जीतता हूं!

बैठक जब से एक दर वाली हो गई है तब से कोठरीनुमा हो गई है। बाप राज की एक छोटी आरामकुर्सी, तीन मूढ़े और एक गोल मेज में भरी भरी लगती है। ऊपर जाने का एक रास्ता इस कोठरीनुमा बैठक में जुड़ा है। गुरसरन बाबू ने अपनी चिन्ता समाधि से उबर कर एक खाई हुई नज़र घड़ी पर, दूसरी सीढ़ी पर तीसरी दीवार पर टंगे कलेंडर पर डाली। यहां उचटती अकुलाई नज़रें एकाएक हाथ में आ गई। 13 सितम्बर। साला अंग्रेजी तारीख में भी आज का दिन मनहूस ही साबित हो रहा है। बिल्लू को बाहान बुलाने भेजा, वह वहीं चिपक गया। अब नौ बजने में सात मिनट है। सवा नौ की बस नहीं छूटनी चाहिए। खैर आज रिक्शे से भी चला जाऊं तो कम से कम खाना खाकर तो घर से निकल सकता हूं। तलहीन दीये की बुझती बाती की चुन्नी सी लौ जैसा गुरसरन बाबू का मन इस मनहूसियत बोध से विवश होकर अपने आपको अनिवार्य अंत के प्रति समर्पित करने लगा। लेकिन गुरसरन बाबू को आज आफिस तो करवट रेडियो टाइम से पहुंचना ही है। भले रिटायर हो जाए पर आज अगर दफ्तर के तीन चार चिड़ीमारों को जाल में फंसी चिड़िया बनाकर न छोड़ा तो असल बाप से पैदा नहीं। हम तो डूबेंगे सनम यार को ले डूबेंगे। एच०आ० साले के खिलाफ ऐसे डाक्यूमेण्ट्स हैं कि असम्बली तक में तहलका मच जाएगा। दूसरे, इस्टैब्लिशमेंट क्लर्क नौबतराय की नौबत बजानी है। कमीना अपने जातिभाई के खिलाफ एक कमीने-कमीन बनिये का समर्थन कर रहा है। इस कम्बख्त को तो नौकरी ही से बीतना है। ह्यूथ अफसर को भी त्यागपत्र देने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।

कपिला केमीकल एण्ड फार्मेस्युटिकल कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड में इनके दूसरे दामाद का सगा छोटा भाई काम करता है। सेठ का पी०ए० है। पीने की लत है। एक बार अपने सेठ के नाम एच०आ० गोयल की एक चिट्ठी गुरसरन बाबू के हाथ पिछहत्तर रुपये में बेच गया था। दफ्तर के छपे कागज पर गोयल ने लिखा था— मैंने आपका भला करने के लिए आदेश-पत्र टाइप करवा लिया है। आप लंच टाइम में आफिस आकर

मुझसे उसपर दस्तखत करा ले जाइए। यह ध्यान रखिएगा कि वस्तु छोटी छोटी गड्डियों में आए बड़ी में नहीं गिनती पूरी हो, धन्यवाद। बीस बीस रुपये हर बार देकर तीन स्लिपें गुरसरन बाबू ने और भी खरीद रखी हैं। कपिला कम्पनी के मालिक धीमूमल जैन को पर्ची भेज कर डा० गोयल ने नगरपालिका अस्पताल की मेट्रन सुनन्दा धूरेलाल को रुपये देने को कहा था। सुनन्दा डा० गोयल की रखैल है यह सब जानते हैं पर यह कोई नहीं जानता कि बाबू गुरसरन लाल ने उन सभी पर्चियों की फोटो स्टेट कापियां ही नहीं उनके ब्लाक भी बनवाकर तयार रखे हैं। दैनिक आजकल के चीफ रिपोर्टर को गुरसरन बाबू के तीसरे बेटे सनातो ने पहले से ही पटा और पटा रखा है। अगर आज गुरसरन बाबू रिटायर हुए तो कल सबेरे के आजकल में ये ब्लाक छप जाएंगे। लिखित न सही पर यह परम्परा बन गई थी कि लूट का माल एच०आ० की जेब में उनके पी०ए० की मार्फत पहुंचता था परन्तु डा० गोयल की अपने पी०ए० से कुछ बिगड़ गई तब से ही नौबतराय की मार्फत यह काम होने लगा। नौबतराय की भी एक चिट्ठी इनके पास है। सुनन्दा के नाम लिखी गई यह चिट्ठी भी गुरसरन बाबू ने गुरदीन चपरासी से दस रुपये देकर खरीद ली थी।

गुरसरन बाबू ऐसी कारसाजियों में आरम्भ से ही बड़े तेज रहे हैं। शुरू में कई बरसों तक एक स्थानीय नेता के लिए ऐसा बहुत-सा काम करके उन्हें लौहपुरुष बनने में बड़ी सहायता पहुंचाई थी। फिर जब लौह पुरुष मंत्री बनकर लखनऊ जा बसे और एक बार इनके सिर पर भी अपना लोहा बजाया तो दूसरे दिन से ही उनके पर्चे भी अखबारों में छप गए। लौहपुरुष मंत्री जी ने तुरन्त मोम बनकर इन्हें भी पिघला लिया। चालाक से चालाक मनुष्य बेहोशी में कभी न कभी और कहीं न कहीं चूक कर ही बैठता है। गुरसरन बाबू चतुरों के उन्हीं बेहोश क्षणों की चूकों का संग्रह किया करते हैं। अपनी इसी आन्त के कारण गुरसरन बाबू से दफ्तर में ऊपर से लेकर नीचे तक सब लोग आतंकित रहते हैं। परन्तु इस समय तो वह दफ्तर में लेट हो जाने की आशंका से स्वयं आतंकित हैं लगता है भूखे ही जाना पड़ेगा। कैसी मनहूस है मेरी जन्मतिथि। बीस हाथों वाला रावण दो हाथों वाले के तीरों से मरा जा रहा है—वही रावण जिसने काल को भी बांधकर पटक रखा था। एक गहरी सांस मुंह से निकल पड़ी। हड़बड़ाकर घड़ी पर दृष्टि डाली। इधर नौ की लकीर पर सुई आई उधर

बिल्लू ने एक लड़के के साथ बैठक में प्रवेश किया कहा, ' रघबर महाराज ने कहा है रोजीने के दो पाठ करके ही आवेंगे।"

"कमीना !

"मैं उनके भतीजे को पटा लाया हूं। जनऊ बहुत मैला था इसलिए एक नया जनेऊ भी पहना दिया है। आप इसे लेकर ऊपर चलें।'

तभी बिल्लू को मां सीढ़ी के दरवाजे पर दिखलाई दी। बिल्लू हड़बड़ा कर बोला, 'मम्मी रघबर तो पापा का टाइम साध न सकेंगे। उनके भतीजे को ले आया हूं।

"रघबर के कोई भाई ही नहीं भतीजा कहां से हो गया। यह तो मुनुआ महाबामन का भांजा है।'

'हां है पर पण्डित तो है ममी।

'बिल्लू इसे दस पैसे दे के विदा कर ! महाबामन को सराध नहीं जेवाऊंगी। फिर पति से कहा 'तुम पण्डित की पत्तल मंस के खाना खाओ। जनमदिन के दिन भूखे नहीं जाने दूंगी।'

महाबाह्मन का भांजा पैसों के लिए अड़ गया। चवन्नी लेकर ही टला।

टन !

दफ्तरी घड़ी की आवाज आज अरसे बाद गुरसरन बाबू के कानों में पड़ी, अपनी रिस्टवाच पर दृष्टि डाली ढाई बजे थे। उनके मन में इस समय संतोष का सागर आनन्द-तरंगों से लहरा रहा है। अभी आधे-पौन घण्टे पहले ही वह अपने सर्विस करियर की सर्वोत्तम उपलब्धि प्राप्त कर चुके हैं। बाईस फाइलों के बोझ में सबसे नीचे अपनी नई कारगुजारी की फाइल लेकर डा० गोयल के पास पहुंचे। थोड़ी देर पहले उन्होंने एच०ओ० को किसी आत्मीय स्वजन किस्म के व्यक्ति से फोन पर यह कहते सुना था कि मैं ठीक सवा बारह बजे दफ्तर से उठ पड़ूंगा। गुरसरन बाबू ठीक बारह बजे के दस मिनट पर साहब के पास पहुंचे। गुरसरन बाबू को देखते ही साहब की त्यौरियां आमतौर से चढ़ जाया करती थीं लेकिन आज अच्छे मूड में थे बोले कहिए गुरसरन बाबू कैसे तकलीफ की ?

हुजूर नौकरी का अंतिम दिन है, अपना पूरा नमक अदा कर जाने की चिंता से आपको यह कष्ट देने आया हूं।'

इतनी फाइलें। पर मुझे तो अभी पांच मिनट में जाना है, भई।"

पाच ही मिनट का काम है सर, सिफ साइन करना है आपको, बडी मामूली सी फाइलें हैं। कहते हुए पहली फाइल पेश की। गुरसरन बाबू की मनोयोजनानुसार ही पहली फाइल ही डाक्टर साहब का दुर्वासा बना गई। लगभग बीस-बाईस दिन पहले पालिका अस्पताल की मेट्रेन सुनन्दा के पति घूरेलाल (जो सयोग से दफ्तर म जनम मरन रजिस्टर सम्भालने वाले क्लर्क है) के विरुद्ध नाइट-सॉयल क्लर्क माताप्रसाद की शिकायत पर साहब ने अपने पी० ए० को जांच के लिए आदेश दिया था। गुरसरन बाबू जानते थे कि उस समय सुनन्दा और डा० गोयल के अवध रिश्ते से दुखी घूरेलाल ने अपनी नसबन्दी करवाके अपनी पत्नी को यह धमकी दी थी कि अब जो तुम्हारे बच्चे होंगे उनका बाप कानूनी तौर पर मैं नही तुम्हारा यार ही कहलाएगा। सुनन्दा ने डर कर यह बात अपने यार से कह दी। यार ने दुष्ट पति को दण्डित करने के लिए उसके विरुद्ध शिकायत लिखवाकर फाइल चलवा दी। बाद म घूरेलाल अपनी पत्नी और उसके प्रतापी प्रेमी के चरणो म पाहिमाम हो चुके थे और एच०ओ० ने मौखिक रूप से गुरसरन बाबू से यह कह भी दिया था कि घूरेलाल की शिकायत फाड कर फेंक दें इक्वायरी न करें। फिर भी फाइल पेश थी और घूरेलाल सुलफेबाज जुआरी और लडाका साबित कर दिया गया था साथ ही यह नोट भी था कि इस बार घूरलाल को केवल कठोर चेतावनी ही दी जाए। यह फाइल दखते ही डा० साहब का मूड आफ हो गया मैंने आपसे कहा था कि इस लटर को डिस्ट्राय कर दीजिए।

गलती हो गई सर सुन नहा पाया था। इसे अभी खतम कर दूगा। बाकी फाइलें—

गुरसरन बाबू का चलाया तीर अपने ठीक निशाने पर लगा। घूरेलाल प्रकरण साहब के काले क्रोध को जगा गया। जाने की जल्दी भी थी इस लिए गुरसरन बाबू की मनहूस सूरत का जल्द से जल्द टालने की उतावली म आखें मीच कर दस्तखत करते चले गए। घूरेलाल के कागज फाइल से नोच कर गुरसरन बाबू ने साहब के सामने ही फाड फेंके और हाथ जोड कर कहा आज मेरा आखिरी दिन है सर मुझस जो अपराध हुए हा उन्हे क्षमा करें।

एच०ओ० यह कहते हुए निकल गए कि बाबू नौबतराय को चाज देकर जाइएगा। साहब के जाने के बाद मनोवैज्ञानिक धोखाधडी स जिस सादे कागज पर साहब के दस्तखत करा लाए थे उसपर गुरसरन बाबू ने

डा० गोयल के खासुलखास चमचों के विरुद्ध एक बडा ही सख्त नोट टाइप किया। साहब की दस्तखती चिड़िया के ऊपर प्रशासक के नाम यह नोट लिखा कि इन लोगों के विरुद्ध कुछ प्रमाण एकत्र किए जा चुके हैं जा सलग्न हैं। इनके विरुद्ध उच्चस्तरीय जाच करने के आदेश दिए जाए। प्रमाणा की फोटोस्टेट प्रतियों के साथ चार व्यक्तियों पर आरोप लगाए गए थ पालिका अस्पताल की मेट्रन सुनन्दा घूरेलाल, इस्टेब्लिशमट क्लर्क नौबत राय फूड इस्पेक्टर गुरुवचन सिंह और नाइट सायल क्लर्क मातांप्रसाद।

किसीको कबूतर पालने का शौक हाता है किसीको टिकट जमा करने का गुरसरन बाबू की हॉबी दूसरों की कमजोरिया के प्रमाण एकत्र करने की रही है। उसी शौक की बदौलत अपने सेवा काल की यह अतिम फाइल लेकर ढाई बजे वह प्रशासक के पी०ए० चद्रप्रकाश अग्रवाल के पास गए। चद्रप्रकाश और डा० गोयल सजातीय और सम्बन्धी अवश्य हैं पर उनके चद्रमा आठवें-बारहवें पडे हुए हैं। गुरसरन बाबू न बातों मे मिठास घोलकर एच०ओ० और पी०ए० की आपसी कडुवाहट का उभारा। रखल सुनन्दा को कमीसफाई से उसके यार के हाथों ही कत्ल करवाया है कि उसे दखकर चद्रप्रकाश बाबू गुरसरन बाबू को अपना गुरु मान गए। प्रशासक महोदय सवा तीन बजे लच से लौटे। चद्रप्रकाश फाइल पर एक हफ्ते मे रिपाट देने के आदेश लिखकर अपने बडे साहब के दस्तखत करा लाए। चलते चलाते गुरसरन बाबू भी बडे साहब को अपना विदा प्रणाम निवेदन करा गए। बडे साहब ने कहा 'मिस्टर गुरसरन, मुझे दुख है कि आपको एक्सटेंशन न मिल सका। मेरे पास ऊपर से भी आपके लिए फोन आया था मगर चूकि डा० गोयल का नोट आपके बहुत खिलाफ था इसलिए "

' कोई बात नही हुजूर, आपके दिल म मेरा ख्याल है यही बहुत है।"

लगभग पौन चार बजे अपने विभाग म पहुचे। स्वास्थ्य विभाग दर-असल राज इसी समय गुलजार होता है। विभिन्न क्षेत्रा के खाद्य सफाई आदि के निरीक्षकगण तीन बजे के बाद ही यहा अपनी रिपोर्ट देन आते है। केसरगज वाड के फूड इस्पेक्टर मानस महोदधि पडित रामखेलावन मिश्र गुरसरन बाबू स लगभग पाच-सात सकेण्ड पहले कमरे म आए थे। क्रय विक्रय क्लर्क एम०डी० शर्मा की मेज के सामने पडी कुर्सी खाच कर बठ ही रहे थ कि गुरसरन बाबू ने प्रवेश किया। उन्हें देखत ही मिश्र जी बोले, ' अरे गुरसरन बाबू बडी उमर हो आपकी मैं अभी रास्ते म आप ही

पाच ही मिनट का काम है सर सिर्फ साइन करना है आपको, बडी मामूली सी फाइलें हैं।' कहते हुए पहली फाइल पश की। गुरसरन बाबू की मनोयोजनानुसार ही पहली फाइल ही डाक्टर साहब का दुर्वासा बना गई। लगभग बीस-बाईस दिन पहले पालिका अस्पताल की मेट्रेनसुन्दा के पति घूरेलाल (जा सयोग से दफ्तर में जनम मरन रजिस्टर सम्भालने वाले क्लर्क है) के विरुद्ध नाइट-सायल' क्लर्क माताप्रसाद की शिकायत पर साहब ने अपने पी० ए० को जाच के लिए आदेश दिया था। गुरसरन बाबू जानते थे कि उस समय सुन्दा और डा० गोयल के अवध रिश्ते से दुखी घूरेलाल न अपनी नसबन्दी करवाके अपनी पत्नी को यह धमकी दी थी कि अब जो तुम्हारे बच्चे होंगे उनका बाप कानूनी तौर पर मैं नही तुम्हारा यार ही कहलाएगा। सुन्दा ने डर कर यह बात अपने यार से कह दी। यार ने दुष्ट पति को दण्डित करने के लिए उसके विरुद्ध शिकायत लिखवाकर फाइल चलवा दी। बाद म घूरेलाल अपनी पत्नी और उसके प्रतापी प्रमी के चरणों म पाहिमाम हो चुके थे और एच०ओ० ने मौखिक रूप स गुरसरन बाबू मे यह कह भी दिया था कि घूरेलाल की शिकायत फाड कर फेंक दें, इक्वायरी न करें। फिर भी फाइल पेश थी और घूरेलाल सुलफेबाज, जुआरी और नडाका साबित कर दिया गया था साथ हा यह नोट भी था कि इस बार घूरेलाल को केवल कठोर चेतावनी ही दी जाए। यह फाइल देखते ही डा० साहब का मूड आफ हो गया मैंने आपसे कहा था कि इस लटर का डिस्ट्राय कर दीजिए।

गलती हो गई सर सुन नहा पाया था। इसे अभी खतम कर दूगा। बाकी फाइलें—

गुरसरन बाबू का चलाया तीर अपन ठीक निशाने पर लगा। घूरेलाल प्रकरण साहब के काले क्रोध का जगा गया। जाने की जल्दी भी थी इस लिए गुरसरन बाबू की मनहूस सूरत को जल्द से जल्द टालने की उतावली म आखें मीच कर दस्तखत करते चले गए। घूरेलाल के कागज फाइल स नोच कर गुरसरन बाबू ने साहब के सामने ही फाड फेंके और हाथ जोड कर कहा, आज मेरा आखिरी दिन है सर मुझस जो अपराध हुए हा उन्हे क्षमा करें।

एच०ओ० यह कहते हुए निकल गए कि बाबू नौबतराय का चाज देकर जाइएगा। साहब के जान के बाद मनोवैज्ञानिक धाखाधडी स जिस सादे कागज पर साहब के दस्तखत करा लाए थे उसपर गुरसरन बाबू ने

डा० गोयल व खासुलखास चमचों के विरुद्ध एक बडा ही सख्त नोट टाइप किया। साहब की दस्तखती चिडिया के ऊपर प्रशासक के नाम यह नोट लिखा कि इन लोगों के विरुद्ध कुछ प्रमाण एकत्र किए जा चुके हैं जो सलग्न हैं। इनके विरुद्ध उच्चस्तरीय जाच करने के आदेश दिए जाए। प्रमाणों की फोटोस्टेट प्रतियों के साथ चार व्यक्तियों पर आरोप लगाए गए थे पालिका अस्पताल की मेट्रन सुनन्दा घूरेलाल, इस्टेब्लिशमेंट क्लर्क नौबत राय फूड इस्पेक्टर गुरुवचन सिंह और नाइट सायल क्लर्क मातप्रसाद।

किसीको कबूतर पालन का शौक होता है किसीको टिकट जमा करने का। गुरसरन बाबू की हॉबी दूसरों की कमजोरियों के प्रमाण एकत्र करने की रही है। उसी शौक की बदौलत अपने सेवा काल की यह अतिम फाइल लेकर ढाई बजे वह प्रशासक के पी०ए० चंद्रप्रकाश अग्रवाल के पास गए। चंद्रप्रकाश और डा० गोयल सजातीय और सम्बन्धी अवश्य हैं पर उनके चंद्रमा आठवें-बारहवें पड़े हुए हैं। गुरसरन बाबू ने बातों म मिठास घोल-कर एच०ओ० और पी०ए० की आपसी बड़वाहट को उभारा। रखल सुनन्दा को कमी सफाई में उसके यार के हाथों ही कत्ल करवाया है कि उसे देखकर चंद्रप्रकाश बाबू गुरसरन बाबू को अपना गुरु मान गए। प्रशासक महोदय सवा तीन बजे लच से लौटे। चंद्रप्रकाश फाइल पर एक हफ्ते मे रिपोर्ट देने के आदेश लिखकर अपने बड़े साहब के दस्तखत करा लाए। चलते चलाते गुरसरन बाबू भी बड़े साहब को अपना विदा प्रणाम निवेदन करने गए। बड़े साहब ने कहा, 'मिस्टर गुरसरन मुझे दुख है कि आपको एक्सटेंशन न मिल सका। मेरे पास ऊपर से भी आपके लिए फोन आया था मगर चूंकि डा० गोयल का नोट आपके बहुत खिलाफ था इसलिए'

'कोई बात नही हुजूर, आपके दिल म मेरा ख्याल है यही बहुत है।'

लगभग पौने चार बजे अपने विभाग मे पहुचे। स्वास्थ्य विभाग दर असल रोज इसी समय गुलजार होता है। विभिन्न क्षेत्रों के खाद्य, सफाई आदि के निरीक्षकगण तीन बजे के बाद ही यहा अपनी रिपोर्ट देने आते है। केसरगज वार्ड के फूड इस्पेक्टर मानस महोदधि पडित रामखलावन मिश्र गुरसरन बाबू से लगभग पाच-दस सेकेण्ड पहले कमरे म आए थे। क्रय विक्रय क्लर्क एस०डी० शर्मा की मेज के सामने पडी कुर्सी खीच कर बैठ ही रहे थे कि गुरसरन बाबू ने प्रवेश किया। उन्हे देखते ही मिश्र जी बोले अरे गुरसरन बाबू, बडी उमर हो आपकी, मैं अभी रास्ते मे आप ही

के विषय म चिंता करता जा रहा था पहले बनलाइए शुभादेश आ गया ?

आमतौर स गम्भीर रहनेवाले गुरसरन बाबू इस समय परम प्रसन्न थे। दायें हाथ की फाइल बाइ बगल म दबाकर तपाक से शेकहैंड के लिए हाथ बढ़ाया और कहा आफिस म आज आपसे पाटिंग शेकहैंड कर लू पडित जी। ब्राह्मन है इसलिए चरन भी

अरे अर आप आयु म पद म मुझसे ज्येष्ठ है। गुरसरन बाबू को चरणा तक न झुक्त उठकर दोना हाथो से खीचकर छाती स कसकर लगा लिया। फिर नौबतराय की मेज़ के पास रखी कुर्सी खीचकर गुरसरन बाबू का हाथ पकडकर बठाया। फिर कहा अरे हम ता बडे विश्वस्त सूत्रा स पता चला था कि आपको अटठावन वष

वह सत्य था मगर यह भी सत्य है मिश्र जी। हमारे माननीय बास ने बहुत एडवस कमण्टस दिए थे। प्रशासक बचारे क्या करते। वह ता बहुत ही इसाफ्पसद और सज्जन पुरुष हैं।

एच० ओ० की निंदा सुनकर उनके सबसे बडे चमचे नौबतराय उचके बोल बडी-बडी रमायनें बाचते है आप पडित जा न्याय की कहिए। भला काल नाग को पालने के लिए भी कोई उसे दूध पिलायगा।

दफ्तर म सन्नाटा छा गया। प्रसग को आध्यात्मिक बनाते हुए मिश्र जी बोल देखिए बाबू नौबतरायजी किसीको दोष दना उचित नही है। मैं ता सच पूछिए यह मानता हू कि न तो डाक्टर साहब का दोष है और न हमार माननीय गुरसरन बाबू का ही श्रीराम सरकार की मर्जी अब कुछ और है। वह यह देखते हैं कि म्युनिसिपल सर्विस स पाई हुई लक्ष्मी से अब यह काई धन्धा करें कि जिसस इनका और सकडा बेकारा का भला हो

अपना भला य अवश्य करेंगे मगर दूसरो का भला ?—यह इनके धरम म लिखा ही नही। एक लडका स्मगलर प्रिंस हा ही गया। भारत हागकाग स एस आता-जाता है जस घर-आगन म घूमता हो।

दखिए नाइट सायल बाबू अपने काम की सडाध सज्जनो के बीच म मत फलाइए

अरे उसीकी बदौलत ता कोठिया खडी की हैं इन्हाने। कहत-कहत नाइट सॉयल बाबू अपनी कुर्सी पर दोनो पर उठाकर उचककर बठ गए।

गुरसरन बाबू कुर्सी से उठे, "अच्छा, मिश्र जी "

'अरे वाह इस प्रकार कैसे ? बघुआ आज हमारे बाबू गुरसरन लाल जी श्रीवास्तव हमारे कार्यालय से विदा ले रहे हैं, उनके लिए अपशब्द बोलना उचित नहीं है। हमें कम से कम अपने कार्यालय की परम्परा रखते हुए एक फेयरवेल पार्टी लेनी चाहिए। लाइए एक एक रुपया निकालिए फटाफट।"

नहीं पंडित जी आपने अपने श्रीमुख से ये जो शब्द कह दिए यही फेयरवल बहुत है। अब आज्ञा दीजिए। चलने के लिए खड़े होकर एक बार नौबतराय की ओर मुड़े मुस्कराकर कहा, आपने भी एच० ओ० न कहा होगा। मुझे भी आदेश दिया है कि नौबतरायजी को चार्ज दे दो। पांच बजे तक जब चाहिए चार्ज ले लीजिए।'

नौबतराय भी अब नम पड़ चुके थे कहा "चार्ज में लेना ही क्या है। टाइप राइटर रहेगा ही। स्टेशनरी हां फाइलें "

'मैंने आज ही सब सादन कराके रख ली हैं एक भी पेंडिंग में नहीं रखी। आप कल से कल का काम ही शुरू करेंगे।' गुरसरन बाबू एक बार मानस महोदधि मिश्र जी को दूसरी बार सबको एक घुमौवा हाथ जोड़ करके अपने कमरे में चले गए। उनके जाने के बाद इस्टेब्लिशमेंट बाबू दबी जबान में बोले हजार हरामियों के सांचे जोड़कर ब्रह्मा जी ने इसको ढाला था। इनकी थाह न धरती के भीतर लगती है और न आकाश में।"

मिश्र जी बोले अरे कुछ भी हो यार आफिस का ट्रेडीशन मत बिगाड़ो विदाई समारोह होना ही चाहिए। लाओ सब जन एक एक रुपया निकालो, शर्माजी हां यह बात है। धन्यवाद, बाबू नौबतराय। अरे डाक्टर कुलश्रेष्ठ निकालो भाई।

'एक रुपया बहुत होता है मिश्रा जी'—

मिश्र कहिए मैं स्वीकार थोड़े ही हूं जो मिश्रा कहते हैं।

अरे खैर, मिश्र ही सही ? अमां रुपये में पूरे सौ नये पैसे होते हैं महाराज।'

इतनो बाबू डाक्टर कुलश्रेष्ठ हंस पड़े बोले, आपकी बात पर एक पुराना कवित्त याद आ गया। किसी उन्नीसवीं शताब्दी के कवि ने आप ही की तरह रुपये का बड़प्पन बखाना था।

'अरे सुनाओ यार कविताओं और भविष्यवाणियों के तो तुम बादशाह हो। एम० डी० शर्मा की बात पर और भी एक-सी बातें उठी। डाक्टर

कुलश्रेष्ठ सुनाने लगे 'रुपए की महिमा बखानत हुए कवि कहता है—

जाम दू अधला चार पावली दुअन्नी आठ तामें पुनि आना
सखि सालह समात हैं।
बतिस अधन्नी जामें चौंसठ पसा होत एक सौ अट्ठाइस अधेला
गुनमात हैं।।
जुग सत छप्पन छदाम तामें लेखियत दमडी सु पाच सत बारह
लखात है।
कठिन समया कलिकाल की कुटिल दया सलग रुपया भया
काप दियो जात है।।

अरे वाह कुलश्रेष्ठ नौबतराय तो केवल सौ तक ही गिन पाए परन्तु तुमने ता सकडा से रुपये का वजन बढा दिया। देख लिया मिश्र जी कोई रुपया न्विया यहा दिखलाई नही पडता। चाहे तो मेरे रुपये से आप फेयरवेल दे सकते हैं।

अरे यार रखो भी अपना रुपया आफिस म किसीका भी फेयरवेल देने का मूड नहा है। नौबतराय बोले।

स्टेनो बाबू न कहा अरे ये तो अपनी मर्जी से जा रहे हैं चुनाव के बाद बड-बडे यहा स बेआबरू होकर निकाले जाएगे तब फयरवेल का मूड बनाइएगा बाबू नौबतराय जी।'

ता क्या तुम समझते हो कि तुम्हारी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध होगी ?" मिश्र जी ने बडे रौब के साथ पूछा।

स्नो बाबू भी उसी तरह रौबीले शब्दों म (कुछ-कुछ मुस्कराते हुए भी) बोले मान्यवर आप कुलदीप कुलश्रेष्ठ की बात पर अविश्वास कर रहे है। क्या आपको यह स्मरण नही है कि मैंने ही पहले वाले मुख्यमत्री का तख्ता पलटने की भविष्यवाणी सबसे पहले की थी तब आप ही की तरह तीन चार भविष्यवक्ताओ के कमण्टस मेरी भविष्यवाणी के विरुद्ध निकले थे।—'

नाइट सायल बाबू माताप्रसाद गदगद होकर बोले हम खूब याद है कि डाक्टर साहब तब आपने भी उन पडितो की लाजिक काटने म अपना शास्त्रीय दिखलाया था, बल्कि हमे अच्छी तरह याद है कि आपने ये जो प्रेजेण्ट चीफ मिनिस्टर हैं उनके आने की बात भी प्रडिक्ट कर दी थी।

मानस महोदधि पडित रामखिलावन मिश्र कुछ उखडी उखडी सी अदा म बोले भई तुम्हारी वो भविष्यवाणी सही थी, हम याद है। मगर

हमारा भी यह ब्रह्मवाक्य आज की दिनाक म नोट कर लो स्टेनो बाबू कि इन्दिरा कांग्रेस जीत भले ही जाए परन्तु उसे बहुमत कदापि नहीं मिलेगा।'

स्टेनो बाबू डा० कुलदीप,कुलश्रेष्ठ हस, हाथ जोडकर बोले 'अपना ब्रह्मवाक्य अभी रिजर्व रखिए, मिश्र जी, क्याकि आप सब जगह दिसम्बर के अन्त म इस अकिंचन कुलश्रेष्ठ की भविष्यवाणी को सत्य प्रतिफलित होत हुए देखेंगे। इन्दिरा गाधी उतनी ही प्रबल मजारिटी से जीतेंगी जसी पिछली बार जनता जीती थी।"

'अमा, कोउ नृप होय हम का हानी। हम तो वसे क वसे नाइट सायल बाबू ही बने रहेंगे। हा, यह हमारे इस्टेब्लिशमेण्ट बाबू कल से एच०ओ० के पी०ए०—"

"इस भ्रम म न रहिएगा बाबू माताप्रसाद, मैं बडे रिलायबिल सोस से पहल ही जान चुका हू कि कौन पी०ए० बनकर आ रहा है। मुझे तो खाली नोमीनल चाज लेना है। कल स दो चार रोज एच०ओ० की चिटिठया विटिठया हमारे कुलश्रेष्ठ बाबू टाइप कर दिया करेंगे बाकी जब फिर पन्नालाल आवेंगे तभी गुरसरन बाबू की जगह भरगी। मैं तो जो हू वही रहूगा। अमा कौन क्या बनेगा क्या बिगडेगा इसकी चिन्ता क्यो करें, *हुइहै वहै जो राम रचि राखा। क्या भई मिश्र जी?*

मानस महोदधि मिश्र जी ने बात का प्रसग ही बदल दिया, कहा, 'शर्मा जी हम रोटरीवाला के यहा शडो प्ले क साथ रामायणपाठ करेंगे। आप अवश्य दखन आइएगा। लखनऊ के कलाकार हैं उनके झण्डे बम्बई तक गडे हुए हैं।'

रामदीन चपरासी के हाथा सारी चिटिठया और फाइलें यथास्थाना पर भिजवा कर गुरसरन बाबू न अपनी सब खाली दराजें झडवाइ और उसके बाद दाहिने हाथ की दराज म नई फाइल रखकर और जेब से चालीस पसे का एक छोटा-सा ताला निकालकर उस बन्द किया। उसकी चाबी बायें हाथ की सबसे नीचे वाला दराज म पीछे की ओर फेंक दी, फिर मुस्कराए घडी देखी चार बजकर पच्चीस मिनट हुए थे। सोचा, चलें। पर जिस कमरे म, जिस कुर्सी मेज पर पिछले आठ-नौ वर्षों म उन्होंने भल बुरे काम करत हुए अपने दिन बिताए हैं उससे उसे एकाएक छोडने को उनका जी नहीं चाह रहा था। एक जगह गुरसरन बाबू के मन म यह कष्ट भी था कि उनका विदाई समारोह नहीं हुआ। खर, न सही। उन्होने

दफ्तर म एक ऐसा टाइम बम रख दिया है जो सम्भवत व न-ए
ऐसा विस्फोट करेगा कि अच्छे अच्छे बिना विदाई समारोह म ही
विदा होने पर मजबूर होग। यह सोचकर उनका मन भीतर ही
अट्टहास कर उठा। उसी आह्लाद म यह ध्यान भी आया कि सत
मिलकर 'आजकल के रिपोर्टर का मसाला देना है। सतापी के स्प
फान किया और बतलाया कि वह आ रहे हैं। चलो यह काम भ
लिया अब चलना चाहिए। चपरासी को आवाज दी रामदीन।

रामदीन सामने आ गया। गुरमरन बाबू ने अपना दफ्तर का गि
उठाकर अपनी कोट की जेब म डालत हुए कहा, सुनो, तुम्हारी व
बुक म मैं बहुत ही अच्छा नोट लगाकर चला हू तुमने मेरी बहुत सव
है।'

'अरे हजूर आप एस हाकिम बडे भाग से ही आत हैं। क्या
साहिब इन आफिस वालो की नीचता कि आपको फेयरवल पारटी भी

रामदीन के कध पर हाथ रखकर थपथपाते हुए अरे भया छोटा
यह चकल्लस तुम शाम को हमार यहा आना। खाना वही होगा समझे
कहकर एक नजर अपने कमरे की हर चीज पर डाली और तेजी से बा
निकल आए। दफ्तर वाला ने उन्हें जात हुए देखा। मानस महोदधि मि
जो उस समय कमरे म नही थ बाकी लाग उन्ह देखकर चिडीचुप हो गए
एक नाइट सायल बाबू ही चहक कर बोल उठ ' निकलना खुल्द से आद
का सुनत आए थे लेकिन बहुत बे आबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले।

दरवाजे से निकलत हुए गुरसरन बाबू पलटकर मुस्कराए मन म
कह रहे थे कल देखना बच्चू मैं बे आबरू होकर निकला हू या तुम लोग
निकलोगे।

दो

मुंशी भगवानसहाय एक गांव के मालिक और एक क्वांरी कन्या के पिता थे। उन्हें अपनी बिन मां की बड़ी लाडली बेटी गुलाब कुंवर के लिए उपयुक्त वर की तलाश थी। बिरादरी के बड़े बड़े लोगों के पढ़े लिखे लड़के गांव की लालच में जब काली बीबी को स्वीकार करने के लिए तयार नहीं हुए तब हारकर उन्होंने म्युनिसिपैलिटी में एक विभाग के सुपरिंटेंडेंट बाबू श्यामसरन लाल के इकलौते पुत्र गुरुसरन बाबू को अपना दामाद बनाने के लिए कन्धे डाले। दो बेटियों के ब्याह में श्यामसरन बाबू पहले ही अपनी तिजोरी की तली झाड चुके थे। इसलिए उन्हें साठ सत्तर हजार की वारिस कानी पतोहू को लाने में कोई आपत्ति नहीं दिखलाई दी। किन्तु गुरुसरन की अम्मा को अपने इकलौते बेटे के लिए कानी बहू पसन्द न थी। गुरुसरन बाबू की उम्र तब केवल सोलह बरस की थी दसवें दर्जे में ही पढ़ रहे थे मगर दुनियादारी के ज्ञान में बड़े आलिम फाजिल थे। पिता से बोले, 'लाला, मेरे स्कूल के हेडमास्टर ने भी अपनी एक आंख पत्थर की बनवाई है। चश्मा लगा लेने पर नकली और असली आंख में कोई भेद ही नहीं दिखलाई देता। अम्मा से कह दीजिए कि लड़की के बाप ने आपरेशन के बाद आंख ठीक करवाके ही ब्याहने का वचन दिया है।

बाबू श्यामसरन ने बेटे को कलेजे से लगा लिया, कहा, तू बड़ा होनहार है, जरूर लखपती बनेगा।

सन '39 में ब्याह हुआ, गुलाब कुंवर बहू लक्ष्मी बनकर आई। 40 में हाईस्कूल पास किया। स्कूल छोड़ा, इधर-उधर कभी कुछ एजेंसी की नौकरियां कभी ट्यूशन करते हुए प्राइवेट तरीके से इंटर किया। उसी साल गौना हुआ। गुलाब कुंवर ने अपने सवाभाव और मीठे व्यवहार से अपनी कानी आंख को सास के मन से निकाल दी। इंटर करके ससुर ने कहा कि बेटा थोड़ा जमींदारी का काम भी समझ लो, आगे तुम्हें ही करना है। वह समझा और शार्टहैंड-टाइपराइटिंग भी सीखी। उन्होंने 42

क आदोलन म नेताओ की पकडा धक्डी हिटलर मुसोलिनी की चर्चा, बढती महगाई और कीतना या फिलमा क चस्का म न पडकर केवल अपने ही दा टका की कमाई का ध्यान किया—अपने मा-बाप को एक पोते का उपहार भी दिया। यह गुलाब कुवर पर और गुलाब कुवर इनपर हजार जान स रीझ रहे। तभी एक दिन श्योसरन बाबू ने अपने लायक पूत से कहा 'बटा हमार हैल्थ डिपाट मे एक नाइट सायल क्लक की जगह खाली होने वाली है तू उसम बठ जा। तनख्वाह जरूर पच्चीस रुपये ही है पर काम ऐसा है कि लक्ष्मी मया दौडकर आती है। राधेलाल न कम म-कम बीस-बाईस हजार रुपया बनाया है। एक बार तू इस डिपाटमट म घुस भर गया तो समझ ले कि मरी उमर पाने तक तू लाखा म खलने लगेगा। अभी दो वष मेरे रिटायरमट म बाकी है। बठ जाएगा तो मुझे भी तुझे आगे बढाने म कुछ मौक हाथ लग जाएग। पढाई साली मे क्या रखा है। अच्छे अच्छे एम०ए० बी०ए० मारे मारे फिर रहे है।

गुरसरन न अपने पिता क चरन छुए और कहा, लाला, मैं आपको और अम्मा का बुढापे म हर तरह स सुखी बनाना चाहता हू। पढाई से सिफ डिग्री हासिल हागी और आप दोनो की सवा करन स मेरा यह लोक और वह लोक दानो ही बन जाएग।

बेटे को लाखो आशीषें देकर बाबू श्योसरन ने पढाई छुडवाकर गुरसरन का अपने यहा नाइट सायल क्लक बनवाया। यह सन 1945 की बात है।

और आज 13 सितम्बर 80 के दिन नौकरी के सारे पापड बेलकर लगभग ढाई-तीन लाख की सम्पत्ति आठ बटे बटियो और उनके परिवारा स सुखी जीवन बिताते हुए व नौकरी स रिटायर हुए है। दफ्तर म बहुतो के लिए यमदूत और अपन तथा हाकिमो क लिए सफल लक्ष्मीवाहक बनकर व आज दफ्तर से विदा होकर रिक्शे पर बठ रह है। दो-तीन बरस का एक्स टेंशन मिल जाता 58 पर रिटायर होते तो कुछ और लाभ होता। खर सतसाइ बाबा जा सोचत है वह भल के लिए ही सोचते हैं और उनके मन मे यह सताप क्या कम है कि चलत चलात अपने कट्टर दुश्मन हैल्थ अफसर डा० गायल और उसके खास खास चमचो के विरुद्ध ऐसा टाइमबम बनाकर रख आए हैं कि कल परसा म जब जारदार धडाका होगा तब दुष्टो की समझ म आयेगा कि बाबू गुरसरन लाल क्या हस्ती है।

अपने तीसरे पुत्र सतोषीप्रसाद उफ छुटकन्नू के कार्यालय की ओर जाते

हुए गुरसरन बाबू अपनी महिमा से आप ही फूले हुए थे। उन्हें अपने रिटायर होने का तनिक भी गम नहीं। दो-दो मकान हैं, कोठियां हैं, दुकानें हैं। बेटे बेटियों से उऋण हो ही चुके हैं। बस एक चौथी बेटी को लेकर ही मन में तीखा कचोट उठा करती है। उसकी ससुराल वालों ने, खास करके पति ने ही गुरसरन बाबू को अधिक-से अधिक पैसा खींचने के लोभ में दुख दे-देकर उसे जलाकर मार डाला। पिछले साल भर से गुरसरन बाबू उनसे मुकदमा लड़ रहे हैं और अपनी स्वर्गीय बेटी की चिट्ठियों से तथा उसकी ससुराल के पास पड़ोसियों से जस प्रमाण इकट्ठे कर लिए हैं उससे यह आशा है कि वे मुकदमा जीत जाएंगे। हालांकि दुष्ट समधी और दामाद भी कम शातिर नहीं हैं। उन्होंने भी अपने बचाव के लिए कई मोर्चे बड़ी सावधानी से संभाल रखे हैं।

दूसरा गम उन्हें अपने सबसे छोटे चौबीस वर्षीय बेटे चि० सतसाई प्रसाद उर्फ बिल्लू की ओर से है। एम०ए० पास कर चुका है एल०एल०बी० में दाखिला ले रखा है और प्रायः हर काम बाप की मर्जी के खिलाफ ही करता रहता है। यहां से लेकर राजधानी तक के छात्रों का नेता है। पूंजीपतियों और अफसरशाही के खिलाफ उसकी तलवार सदा तनी ही रहती है। कई अखबारों में रिपोर्टिंग भी करता है। अब तो घर में भी नहीं रहता है। एक अलग कमरा ले रखा है। अपनी मां के कारण ही जब-तब दो चार दिन आकर रह लेता है। बाप से एक पैसा भी लेने की इच्छा नहीं रखता। उसकी लोकप्रियता गुरसरन बाबू को सदा डराती रहती है। ससुरा नालायक ही सही पर बेटा तो अपना ही है।

सतसाई उर्फ बिल्लू से गुरसरन बाबू जितने ही असंतुष्ट हैं उतने ही उसके मझले बड़े भाई सतायीप्रसाद उर्फ छुटकन्नू से प्रसन्न भी हैं। यह बेटा उनके चारों बेटों में सबसे अधिक कमाऊ पूत निकला। यही बेटा एक दिन करोड़पति बनकर उनके कलेजे को शीतल करेगा।

गुरसरन बाबू के तीसरे बेटे सतायीप्रसाद का एक्सपोर्ट इम्पोर्ट ट्रेडर्स कार्यालय चौक सर्राफे से लगभग तीन फर्लांग दूर शेषनाग मार्ग पर स्थित है। इस दफ्तर से चूंकि डेढ़ किलोमीटर दूर दूसरी शताब्दी ईस्वी का एक शेषनाग मन्दिर अभी आठ वर्ष ही पहले पुरातत्त्व विभाग ने उद्घाटित किया है इसलिए उस मार्ग का महत्त्व भी बढ़ गया है। वहां एक बड़ी सी बावली निकली है जिसके तीन खंड अब भी शेष हैं। बावली के ऊपर बनी हुई मंजिलें संयोग से इस तरह ध्वस्त हुई थीं कि बावली के तल में बनी हुई शेषनाग की भव्य मूर्ति टूटने से प्रायः बच ही गई। केवल बायें भाग के

के आदोलन म नेताआ की पकडा धक्डी, हिटलर मुसोलिनी की चर्चा, बढती महगाई और कीतना या फिल्मा के चस्को मे न पडकर केवल अपने ही दा टका की कमाइ का ध्यान किया—अपन मा-बाप को एक पोत का उपहार भी दिया। यह गुनाव कुवर पर और गुलाब कुवर इनपर हजार जान म राजे रहे। तभी एक न्नि श्यासरन बाबू न अपने लायक पूत से कहा, 'बटा हमार हैल्थ डिपाट म एक नाइट सायल क्लक की जगह खाली हाने वाली है तू उसमे बठ जा। तनख्वाह जरूर पच्चीस रुपये ही है पर काम ऐसा है कि लक्ष्मी मया दौडकर आती है। राधेलाल न कम से-कम बीस-बाईस हजार रुपया बनाया है। एक बार तू इस डिपाटमट म घुस भर गया तो समझ ल कि मरी उमर पान तक तू लाखा म खेलने लगेगा। अभी दो वप मेरे रिटायरमट म बाकी है। बठ जाएगा तो मुझे भी तुझे आग बढाने म कुछ मौक हाय लग जाएगे। पढाई साली म क्या रखा है। अच्छे-अच्छे एम०ए० बी०ए० मारे मारे फिर रह हैं।

गुरसरन न अपने पिता के चरन छूए और कहा लाला मैं आपको और अम्मा का बुढापे म हर तरह स सुखी बनाना चाहता हू। पढाई से सिफ डिग्री हासिल हागी और आप दानो की सेवा करने स मेरा यह लोक और वह लोक दोना ही बन जाएग।

बटे का लाखो आशीषें दकर बाबू श्योसरन ने पढाई छुडवाकर गुरसरन को अपन यहा नाइट सायल क्लक बनवाया। यह सन 1945 की बात है।

और आज 13 सितम्बर 80 के दिन नौकरी के सारे पापड बेलकर लगभग ढाई-तीन लाख की सम्पत्ति आठ बेटे-बेटिया और उनके परिवारो स सुखी जीवन बिताते हुए व नौकरी स रिटायर हुए हैं। दफ्तर म बहुता के लिए यमदूत और अपने तथा हाकिमो क लिए सफल लक्ष्मीवाहक बनकर व आज दफ्तर स विदा होकर रिक्शे पर बठ रह हैं। दा-तीन बरस का एक्स टेंशन मिल जाता 58 पर रिटायर हाते तो कुछ और लाभ होता। खर, सतसाइ बाबा जो साचते है वह भले के लिए ही सोचते हैं और उनके मन मे यह सताप क्या कम है कि चलते चलात अपन कट्टर दुश्मन हैल्थ अफसर डा० गायन और उसके खास खास चमचा के विरुद्ध ऐसा टाइमबम बनाकर रख आए हैं कि कल परसा म जब ज़ोरदार धडाका होगा तब दुष्टा की समझ मे आयगा कि बाबू गुरसरन लाल क्या हस्ती है।

अपने तीसरे पुत्र सतोषीप्रसाद उफ छुटकन्नू के कार्यालय की आर जाते

हुए गुरसरन बाबू अपनी महिमा से आप ही फूले हुए थे। उन्हें अपने रिटायर होने का तनिक भी गम नहीं। दो-दो मकान हैं कोठियाँ हैं दूकानें हैं। बेटे-बेटियों से उऋण हो ही चुके हैं। बस एक चौथी बेटी की खबर ही मन में तीखी कचोट उठा करती है। उसकी ससुराल वालों ने, खास कर के पति ने ही गुरसरन बाबू का अधिक-से-अधिक पैसा खींचने के लोभ में दुष्ट देन्देकर उसे जलाकर मार डाला। पिछले साल भर से गुरसरन बाबू उनसे मुकदमा लड़ रहे हैं और अपनी स्वर्गीय बेटी की चिट्ठियों से तथा उसकी ससुराल के पास पड़ोसियों से जो प्रमाण इकट्ठे कर लिए हैं उनसे यह आशा है कि वे मुकदमा जीत जाएंगे। हालांकि दुष्ट समधी और दामाद भी कम शातिर नहीं हैं। उन्होंने भी अपने बचाव के लिए कई मोर्चे बड़ी सावधानी से सँभाल रखे हैं।

दूसरा गम उन्हें अपने सबसे छोटे चौबीस वर्षीय बेटे चि० सतसाइ प्रसाद उर्फ बिल्लू की ओर से है। एम०ए० पास कर चुका है एल०एल०बी० में दाखिला ले रखा है और प्रायः हर काम बाप की मर्जी के खिलाफ ही करता रहता है। यहाँ से लेकर राजधानी तक वे छात्रों का नेता है। पूँजीपतियों और अफसरशाही के खिलाफ उसकी तलवार सदा तनी ही रहती है। कई अखबारों में रिपोर्टिंग भी करता है। अब तो घर में भी नहीं रहता है। एक अलग कमरा ले रखा है। अपनी माँ के कारण ही जब-तब दो चार दिन आकर रह लेता है। बाप से एक पैसा भी लेने की इच्छा नहीं रखता। उसकी लोकप्रियता गुरसरन बाबू को सदा डराती रहती है। ससुरा नालायक ही सही पर बेटा तो अपना ही है।

सतसाइ उर्फ बिल्लू से गुरसरन बाबू जितने ही असंतुष्ट हैं उतने ही उसके मझले बड़े भाई सतोपीप्रसाद उर्फ छुटकन्नू से प्रसन्न भी हैं। यह बेटा उनके चारों बेटों में सबसे अधिक कमाऊ पूत निकला। यही बेटा एक दिन करोड़पति बनकर उनके कलेजे को शीतल करेगा।

गुरसरन बाबू के तीसरे बेटे सतोपीप्रसाद का 'एक्सपोर्ट इम्पोर्ट ट्रेडर्स' कार्यालय चौक सर्राफे से लगभग तीन फर्लांग दूर शेषनाग मार्ग पर स्थित है। इस दफ्तर से चूंकि डेढ़ किलोमीटर दूर दूसरी शताब्दी ईस्वी का एक शेषनाग मंदिर अभी आठ वर्ष ही पहले पुरातत्त्व विभाग ने उद्घाटित किया है इसलिए उस मार्ग का महत्त्व भी बढ़ गया है। वहाँ एक बड़ी सी बावली निकली है जिसके तीन खंड अब भी शेष हैं। बावली के ऊपर बनी हुई मंजिलें सयाग से इस तरह ध्वस्त हुई थीं कि बावली के तल में बनी हुई शेषनाग की भव्य मूर्ति टूटने से प्रायः बच ही गई। केवल बायें भाग के

वड फनो वाला हिस्सा टूट गया है। इसी शेषनाग के टीले की खुदाई से सतापीप्रसाद का भाग्य चमका पुरानी मूर्तिया के धधे म बरबस ही नियति न धकल दिया। मूर्तिया के धध के बहान स्मगलिंग के धधे स जान पहचान हुइ फिर मूर्तिया के अलावा सोने की तस्करी स भी घनिष्टता जुडी। पिछन छ वर्षो म सतापी बाबू प द्रह बीस बार हागकाग हा आए हैं। जापान और अमरीका भी तीन चार बार घूम चुके है। शेषनाग के टीले की तरफ ही कान म रायबहादुर प्रभुदयाल की कोठी थी जिसे उहान कभी अपन आमाद भवन क रूप म ही बनवाया हागा। उसी काठी म सतापी के एक्सपार्ट इम्पोट टेडस का आफिस है। पुरानी ढग की वस्तुए हिदुस्तानी ढग के सोने चादी के ऐस आभूषण जा विदशी सला नियो को आकृष्ट कर सकें भारतीय पोशाकें कालीनें झाडफानूस पुरानी तस्वीरें आदि सामान अलग अलग कमरा म सजा हुआ है। पीछे क हिस्से म पहल बार भी था और अब जनता राज म केवल उपहार गह है। इसी तरफ दा कमरा म सतोपीप्रमाद का दफ्तर है। एक मे स्वय बठते हैं दूसरे म उनके दा भाई और एक स्टेना।

गुरसरन बाबू का रिक्श म आया देखकर दरवाज़े पर खडे गारखा चौकीदार न उ ह तनकर सलाम किया और फाटक खोल दिया। गुरसरन बाबू का रिक्शा कोठी के पिछवाडे तक चला गया। सतोपी अपन आफिस के बाहरी बरामदे म निकल आया था।

पम आप न दीजिएगा पापा मेरा आदमी इसी पर आजकल प्रेस चला जाएगा सब पेमट एक साथ कर देंगे। पिता को साथ लेकर क्लर्कों वाल कमर मे गया। एक बाबू को कही जान और कुछ करन के आदेश दिए फिर पिता के साथ अपन आफिस मे प्रवश किया।

बेटे क दफ्तर म घुसते ही गुरसरन बाबू का गव हुआ। पालिका क प्रशासक का कार्यालय भी इतना भव्य नहा है। चीनी जापानी और भार तीय शली क चार वडे बडे चित्र दीवारा पर टग हुए थ पूरे कमरे म कालीन बिछी थी अति उत्तम फर्नीचर से कमरा चमचमा रहा था। गुरसरन बाबू न वठते हुए कहा भइ प्रशासक क आडर वाला कागज लाना मैंन मुनासिब नहा समझा। दफ्तर तो जाना नही था, कागज फाइल मे पहुचता कसे ?

ठीक है पापा मरे पास बाकी कागजा की फोटोस्टट कापिया है ही एक न सही। ओरिजनल लटस भी रखे है और उनके ब्लाक भी बन मेरा

आदमी लने ही जा रहा है। कहिए तो चक्करपानी चौबे को अभी ही बुलवा लूं।

"हां बेटे मैं दरअसल उसीके लिए सीधे तुम्हारे पास आया हूं बल्कि आज तो सच पूछो तो मैं अपने उसूल के खिलाफ दफ्तर से आधा घण्टा पहले ही चला आया। यह ब्लाक मैंने इसीलिए तुमसे तैयार करवाने को कहा था कि वह तुम्हारा चक्करपानी यहां बैठकर मेरे सामने ही रिपोर्ट लिखे और उन ब्लाकों के साथ आज रात ही छप जाए। मेरी यह आज वाली फाइल कल दफ्तर में खुलने से पहले ही नगर में तहलका मच जाना चाहिए।'

'ट द प्वाइन्ट काम होगा पापा आप निश्चिन्त रहें। मैं चक्करपानी को अभी बुलाता हूं" बैठे-बैठे ही घण्टी बजाई, चपरासी आया, उससे अपनी टेबुल का फोन सोफे के पास मंगवाकर रखा और कहा "आपरेटर से कह दो आजकल के रिपोर्टर चक्रपाणि जी से लाइन मिला दे।' दो मिनट के बाद ही चौबे चक्रपाणि टेलीफोन लाइन पर आ गए। सतोषी ने कहा 'मैं गाडी भेज रहा हूं चौबे जी, तुरन्त चले आइए हां वहीं बल्कि अपने ब्लाक डिपार्टमेण्ट में यह भी कह आइएगा कि मेरा आदमी उन्हें लेने के लिए यहां से चल पड़ा है। आप फौरन से पेश्तर आइए। हां-हां भई, बढ़िया चाय पिलवाऊंगा।' टेलीफोन रख दिया और पिता से पूछा पापा आपके लिए नाश्ता अभी मंगवाऊं या ?'

'अभी तो खाली एक प्याला चाय ही मंगवा दो।' फिर घण्टी पर उंगली पड़ी, फिर चपरासी आया और उसे आदेश देने के बाद ही बाप बेटे में बातें शुरू हुई। सतोषी ने कहा आपका ये हेल्थ डिपार्टमेण्ट का सेन्सेशन बबलू के इलेक्शन को चमका देगा। बबलू उर्फ कुंवर उत्तमसिंह इन्दिरा कांग्रेस के उम्मीदवार थे और सतोषी उनके चुनाव आन्दोलन का विधाता था। संतोषीप्रसाद अपने क्षेत्र का प्रसिद्ध युवा नेता था। राजनीति की आड़ में उसके धन्धे बड़ी सफलतापूर्वक चलते रहते हैं। संतोषी बोला 'मैंने शिक्षा विभाग की भी एक जबरदस्त चाल पकड़ी है।'

'क्या ?

'रामेश्वर सोनथलिया ने जिस जगह अपना होटल बनवाया है न, वह पिछले गवर्नर के राज में गवर्नमेण्ट ने बाल क्रीडांगन बनवाने के लिए एक्वायर की थी, आपका अनुकरण करते हुए मैंने भी सोनथलिया और डिप्टी एजूकेशन सेक्रेट्री के दो लटम और गुमानसिंह एम० एल० ए० का

एक सिफारशी पत्र एक हजार रुपये मे खरीदे हैं। उनके ब्लाक्स भी आप वाले ब्लाक्स के साथ ही तयार करवाए हैं। कल स्थानीय म्युनिसपलिटी की खबर और परसा शिक्षा विभाग का यह भ्रष्टाचार आजकल मे प्रकाशित होगा। मरे आदमी पी० डब्लू० डी० और सिंचाई विभाग स भी कुछ इम्पॉर्टेण्ट डाक्यूमेण्टस जल्दी ही लाने वाल है।

चक्रपाणि आए। इस कस्बे क अनूठ रत्न हैं। जहा सुइ न समाय वहा फावडा चलाने की कला मे बडे ही निपुण है। दनिक 'आजकल म आजकल काम करत है कवि हैं सन 42 मे जेल भी गए थे इसलिए कुछ नेतागीरी भी कर लत है। आजकल का प्रकाशन एक तरह स कहा जाए तो इन्ही की प्रेरणा से आरम्भ हुआ था। हुआ यह कि अपन कस्बे के ही और अब कलकत्त म रहने वाल एक सफल उद्योगपति का यह प्ररणा देने म सफल हो गए कि उन्ह अपन कस्बे से भी कोई अखबार निकालना चाहिए। उद्योग पति महोदय का उद्योग के रूप म ही यह बात पस द आई थी। यह कस्बा प्रदेश की राजधानी स लगभग बीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। एक तरह स यह कहना चाहिए कि यह कस्बा राजधानी का ही एक उप नगर है। राजमाग कवल आधे घण्टे के फासल पर दोना को जोड देता है। यह सुविधा विचार कर उद्योगपति महोदय न इस कस्ब मे एक बहुत बडी जमीन खरीद ली। कलकत्ते के एक साधनविहीन उग्र राष्ट्रवादी का प्रेस और मुर्शिदाबाद म बद पडी हुई दो पुरानी मशीनें खरीद कर यहा फिट करवा दी। दफ्तर बड सुनियोजित ढग से चला। 'आजकल' पत्र भी लगभग उसी समय स प्रकाशित होना शुरू हुआ जबकि दूसर महायुद्ध के बाद बडे-बडे काग्रेसी नेता जेल से छूटे थे। देश मे एक बार फिर राष्ट्रीय उमगों की ताजा बहार आई थी। इस तरह चक्रपाणि की कल्पना से प्रसूत आजकल निकला ता सही लकिन उसक सम्पादक और सम्पादकीय विभाग म चक्रपाणि जी का कही स्थान न था। उनके लिए मालिक ने एक सम्मानजनक वेतनराशि और रिपोटर का ओहदा दे दिया था। अपने कस्बे और आसपास के गावो म होन वाली हर तरह की खबरा के यही मालिक थे। पहले अखबार मालिक ने इन्ह साइकिल दी थी और अब तीन चार वर्षों स स्कूटर दिला दिया है। इस छोटे स नगर की राजनीतिक उठा-पटक म बडा सक्रिय भाग लिया करते है इसी अखबारी शक्ति पर चक्रपाणि जी अपन यहा के बड-बड आढतिये दूकानदार और सामत वग के लोगा के बडे काम आते हैं। उनकी आयु भी अब लगभग साठ के पास पहुच

तफारशी पत्र एक हजार रुपये म खरीद है। उनके ब्लाक्स भी आप
ब्लाक्स के साथ ही तयार करवाए हैं। कल स्थानीय म्युनिसपलिटी
वर और परमा शिक्षा विभाग का यह भ्रष्टाचार आजकल म
शत होगा। मरे आदमी पी० डब्लू० डी० और सिंचाई विभाग से भी
म्पॉर्टेण्ट डाकूमेण्टस जल्दी ही लाने वाले हैं।
चक्रपाणि आए। इस कस्बे के अनूठे रत्न हैं। जहा सुइ न समाय वहा
ा चलाने की कला म बडे ही निपुण है। दनिक आजकल म आजकल
करते है कवि है सन 42 मे जेल भी गए थ इसलिए कुछ नेतागीरी
र लत हैं। आजकल' का प्रकाशन एक तरह स कहा जाए तो इन्ही
रणा से आरम्भ हुआ था। हुआ यह कि अपने कस्बे के ही और अब
त्ते म रहन वाल एक सफल उद्योगपति को यह प्रेरणा दने म सफल
ह कि उन्हें अपन कस्बे स भी कोई अखबार निकालना चाहिए। उद्योग
महादय को उद्योग के रूप म ही यह बात पसन्द आई थी। यह कस्बा
की राजधानी से लगभग बीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।
रह स यह कहना चाहिए कि यह कस्बा राजधानी का हो एक उप
है। राजमाग केवल आधे घण्टे के फासले पर दोनो को जोड देता है।
ुविधा विचार कर उद्योगपति महादय ने इस कस्बे मे एक बहुत बडो
न खरीद ली। कलकत्ते के एक साधनविहीन उग्र राष्ट्रवादी का प्रेस,
मुर्शिदाबाद म बद पडी हुई दा पुरानी मशीनें खरीद कर यहा फिट
ा दी। दफ्तर बड सुनियोजित ढग स चला। 'आजकल पत्र भी
ग उसी समय स प्रकाशित होना शुरू हुआ जबकि दूसरे महायुद्ध के
बडे-बडे काग्रसी नेता जेल से छूटे थे। देश म एक बार फिर राष्ट्रीय
ो की ताजा बहार आई थी। इस तरह चक्रपाणि की कल्पना से प्रसूत
कल निकला तो सही लेकिन उसके सम्पादक और सम्पादकीय
ग म चक्रपाणि जी का कही स्थान न था। उनके लिए मालिक ने
सम्मानजनक वतनराशि और रिपाटर का ओहदा दे दिया था। अपने
और आसपास के गावो म हाने वाली हर तरह की खबरो के यही
क थे। पहले अखबार मालिक न इ ह साइकिल दी थी और अब तीन
वर्षों स स्कूटर दिला दिया है। इस छाटे से नगर की राजनीतिक
पटक म बडा सक्रिय भाग लिया करते हैं इसी अखबारी शक्ति पर
ाणि जी अपने यहा के बडे-बडे आढतिय दूकानदार और सामत वग के
ो के बडे काम आते हैं। उनकी आयु भी अब लगभग साठ के पास पहुच

चुकी है लेकिन हराम की खा-खाकर लाल बूद बन हुए हैं।

जब चक्रपाणि जी आए तो गुरसरन बाबू ने झुक के उनके घुटन छुए मगर सतोपी ने अपनी कुर्सी पर बठे-बठे ही पालागी गुरुजी' कहकर अपना कत्तव्य निभा दिया। बठने ही गुरसरन बाबू से बोल, 'आपके ब्लाकों के प्रूफ मैं उठवा लाया हू। यह देखिये।' अपन ब्रीफकेस से निकालकर प्रूफ उनके हाथ मे लिए फिर सतोपीप्रसाद से बोल, "आपके ब्लाक मैंन सब अपने सामन पक करवा के ब्लाक डिपाट के मनजर की मज पर रखवा दिए हैं और यह देखिए एजुकेशन मिनिस्ट्री वाल कागजो के प्रूफ य हैं।' उठकर सतोपी बाबू को उनस सबधित प्रूफ दिए।

पिता-पुत्र दोनों सतुष्ट हुए। दोना की आखो म अपनी सफलता की घृत बनिया चमक उठा। सतोपी बोला, 'पापा, आप उनको अपन प्वाइण्टस नाट करा दीजिए। मैंने अपन कस का डाफ्ट बनवाकर टाइप होन क लिए दे दिया है। चक्कर गुरु, तुम उसीको अपनी भाषा म जरा जोरदार नमक मिच लगाकर इन ब्लाको के साथ छाप देना। मैं अब जाऊगा।"

'वाह अभी कसे, पहले इस ब्राह्मण का सतुष्ट तो करो, तब जाने पाओगे।'

"अरे गुरु तुम्हारे लिए मैंने पहले ही से आडर दे रखा है। भग की कचौडिया बनवाई हैं मगर पहले तुम लिख लो नव ।'

'यह सब चालबाजी हमसे न चलेगी। पहले जलपान करेंगे तब लिखने लिखाने की बात सोचेंगे।"

'अच्छा भई, पण्डित देवता की पेट-पूजा ही पहले करवाए देते हैं। पापा, आप भी खाइएगा एकाध भाग की कचौडी।'

'नइ बाबा मुझे तो नाम सुनकर ही नशा आ जाता है।'

चक्रपाणि बोल बाबू जी जरा बिल्लू का अपने काबू म रखिए, किसी दिन उसके कारण आपको कोई करारा आघात भी लग सकता है। मैं पहले से ही चेतावनी दिए देता हू।'

सुनकर गुरसरन बाबू चुप हो रहे।

सतोपी एक ठण्डी सास भरकर बाल, 'पापा बेचारे क्या करें। वह घर म रहता ही नहीं। हम लोगो से कोई खास मतलब उसका है नहीं। अपनी मर्जी का मालिक है भाई और क्या कह सकता हू।'

आज दोपहर म उसने जानते हैं चुन्नीलाल से क्या कहा है। कहा है कि लाला तुम्हारे गोदाम पर आठो पहर मरी नजर है। तुम जनता को

खुलेआम नही बेचते हो तो हम तुम्हे उस माल को कही भी नही बेचन देंगे। रात बिरात भी माल निकालकर ले जाना चाहोगे तो तुम्हारे आदमियो का हमारी गालियो का सामना करना पडेगा। अब भला बताइए अपन पिता की उमर के पुरुष से और वह भी ऐसा धर्मप्राण व्यक्ति, गो-ब्राह्मण प्रति पालक, तिस पर हमारे सचालक जी का सगा मौसेरा भाई। उन्होने पुलिस म रिपोर्ट करा दी है। हमारे यहा भी छपने आई है। अब भला बतलाइए एक तरफ मैं सतोपी बाबू को अपना परम मित्र समझता हू दूसरी तरफ आपके प्रति मेरे मन म इतना आदर भाव है अगर छापू तो बुरा न छापू तो बुरा। मेरी तो दोनो ही टागें उघाडी हो रही हैं। बताइए क्या करू ?

गुरसरन लाल बोले आप छापिए हम कोई दु ख नही होगा। अधिक स अधिक आप मेरी ओर स इतना इस्टटमेण्ट जोड सकते है कि बिल्लू स मेरा या मेरे किसी दूसरे बेटे का कोई सम्बन्ध नही रहा बल्कि पिछले आठ दस महीनो से वह घर रहता भी नही है। हा कभी-कभी अपनी मा से मिलने आ जाया करता है।

सतोपी बोला, नहा पापा की तरफ से कोई वक्तव्य नहा जाएगा।

क्या ? चक्रपाणि की त्योरिया चढी।

क्योकि उसकी एक्टिविटीज बबलू के इलक्शन म सहायक भी है। मैं इस समय उसे नही छेडना चाहता।

' मगर चुन्नी हमारे मालिक का

मालिक का नमक भले अदा करो मगर बिल्लू का बचाकर। वैसे बिल्लू मरी या बबलू की पकड म भी नही आ रहा है पर उसका यह एक्शन हमारे पक्ष मे है।

गुरसरन बाबू चुपचाप सुनते रहे फिर चक्रपाणि की जाघ पर थपकी देकर कहा, ' पण्डित जी आप तो जानते होगे कि जब द्रौपदी स्वयवर मे तीर चलाने से पहले श्रीकृष्ण भगवान का ध्यान किया तो उन्होने अर्जुन से कहा कि हे अर्जुन, तू इस समय मेरा ध्यान भी मत कर सिर्फ नाचती हुई मछली की आख का ध्यान म रख। सो पण्डित जी मैं तो सामने के काम म ही अपना ध्यान रखता हू। यह फाइल जो मेहनत से बनाकर मैं तैयार करके रख आया हू वह गायब न हो जाए। कल सवेरे अखबार मे यह खबर छप गई तो फिर गोयल को फसना ही पडेगा। अभी तो मुझे सिर्फ उसीका ध्यान

है। बिल्लू अपने कामों का जो फल पाये सो पाये, मैं भला क्या कर सकता हूं। बाकी जो अभी छुटकनू ने कहा है, उसे भी ध्यान में रखना।"

गुरसरन बाबू केवल अपने जीवनादर्श की चिंता कर रहे थे। उन्हें और कोई चिंता नहीं थी।

तीन

चार-पाच बरस पहले अहीर के बेट सुहागी और करमू हरिजन की बेवा बेटी की आखें लड गई थी। दोना जवान अरमाना भरे न्लि वाले। हरसुख और सुहागी बचपन स साथ खल पढ और सजातीय भी थ। बाद म हरसुख तो कालेज और यूनीवर्सिटी तक पहुच गया था लकिन सहागी ने पहलवानी और घर की भसे चराने मे ही एम० ए० पास किया। सुहागी ने ही अपने प्रेम-काण्ड की चर्चा हरमुख स की थी और उपाय पूछा था।

हरमुख बोला अमा तो परेशानी क्या है ? दोना जन ब्याह कर लो। दोना ही बालिग हो।

बप्पा मार डालेंगे।

मरने स डरत हो तो छाडो साली को। लला न सही भोरी सही।'

न्लिलगी की बात नही हरसुख, मरा मन बावला हो रहा है। सरसुतिया हमस कहती थी कि कही भाग चलें। हमने कहा भाग तो चलें पर खाएग क्या। अरे जब पिरम करेंगे तो लौडे बच्चे तो होएग ही ससुरे। क्या झूठ कहता हू ?

हरसुख बोला यार बात तो तुम्हारी सही है लेकिन हमारी सलाह तो यही है कि तुम दोनो ब्याह कर लो। अब तो साले ऊची ऊची जातो वाले भी अतर्जातीय ब्याह करत है।

सुहागी ठण्डी सास भरकर बोला करते ता हैं। हमारी बिरान्री म ही लल्लू वकील ने मुसलमानी का हिन्दू बना के ब्याह किया। काई साला नही बोला न हिन्दू न मुसलमान—क्योकि लल्लू अब पस वाला की बिरादरी का हो गया है न। हम ता ससुर गरीबा की बिरादरी के हैं न। और फिर लल्लू ता रहत है राजधानी म। उसकी बीबी भा वकीलन है। शहर म ता सब चल जाता है मगर अभी गावा म यह बात दूर-दूर तक

पहुच जाएगी ।"

हरसुख ऊबकर बोला 'तब भई हम तुमको क्या सलाह दे सकते हैं या बिरान्री से डर लो या प्रेम कर लो। हा तुम्हारा यह तक मेरे दिल म जम गया है कि अब भारत मे सिफ दो ही जातिया रह गई हैं—एक अमीर एक गरीब। (कुछ सोचकर) सुनो सुहागी, आज शाम को सात-साढे सात बजे तुम बिल्लू के यहा आ जाओ।"

'गुरसरन बाबू के घर ?'

नही यार बिल्लू अब अपने घर म रहता कहा है। नेताजी सुभाप माग जानते हो न ?'

जानता हू ।

वहा तरकारी वाला की दुकाना के बाद जो चरही पडती है। चरही सडक के बायें हाथ है उसके ठीक सामने ही जो गला है ।'

'पकरिया टोल वाली ?

हा बेटे तुम ठीक पहुच गए। जहा पकरिया का पेड है। उसके ठीक सामने ही परभू तली की दुकान के ऊपर बिल्लू बाबू का कमरा है। शाम का हम लाग सब वही जुटते हैं। कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेंग पटठे। लला मजनू का ब्याह हो जाएगा।'

रात को बिल्लू के यहा जुडने वाली मित्र मण्डली ने यह तय किया कि सरसुतिया को गाजे-बाजे के साथ सुहागी की सौभाग्यवती बनाया जाएगा। चौहान बोला, 'तुम लोगो को शायद एक बात नही मालूम मगर यह हरसुख जानता है कि सरसुतिया की मन्र ठाकुर रिपुदमन सिंह की बील बेड है और यह लडकी भी शायद रिपुन्मन सिंह की ही है।

बिल्लू हसकर बोला तब फिर क्या है यार रिपुदमन सिंह स ही कहग कि बेटा आओ तुम्ही कन्यादान करो।

सब लोग हस पडे। सुहागी बोला, "बाबू आप जानत नही है। कटारीपुर के यह सारे हरिजन ठाकुर रिपुदमन सिंह के कब्जे म हैं और सुराज हो जान के बाद भी उनकी मर्जी के खिलाफ वहा के किसी पेड का एक पत्ता तक नही हिल पाता। पूछो हरसुख स।

हरसुख बोला लखन पासी, कल्लू माझी और छिद्दा अहीर क गिरोह उसीन पाल रखे हैं। रिपुन्मन के दामाद आखिर मत्री किस बूत पर बने हैं।

बिल्लू ताव खा गया, 'झाडू मारो साले मत्री और इन तीनो शातिर

डाकुओं को। मैं कहता हूँ कि हमारी स्टूडेण्ट कम्युनिटी अगर एकजुट हो जाए तो मैं सुहागी और सरसुतिया का ब्याह करा दूंगा।'

चौहान ने कहा हमारी विद्यार्थियों की संस्थाएं भी अब सब की सब किसी न किसी पोलिटिकल पार्टी की रखैलें बन गई है। इन बेईमानों के बल पर क्या तुम रिपुदमन के इन तीन शातिर डाकुओं से सुहागी को बचा सकते हो'

अब्दुल सत्तार ने अपनी सिगरेट ताव में एकाएक चाय की खाली तश्तरी में दबा कर बुझा दी और बोला तुम इनकी शादी का इन्तजाम करो जी हमारे यहां और राजधानी के दो-तीन होस्टलों में भी गुण्डों की कमी नहीं। बिल्लू अगर उन्हें ताव पर चढ़ा दे तो हम लोग लखन कल्लू और छिद्दा तीनों सालों के गिरोह के छक्के छुड़ा सकते हैं।

तुम शादी का अरेंजमेंट कराओ जी मैं पांच पांच रुपया चन्दा हर एक से कलेक्ट कर लेने का वादा करता हूं। लव-मैरिज में हम साले मंगे मन काम न आएंगे तो क्या बूढ़े खुर्राट काम आएंगे। चौहान बड़े ताव से बोला।

सुहागी चुपचाप बैठा सुन रहा था अब बोला, शादी के लिए सौ पचास रुपए तो मैं भी खरच कर सकता हूं। सवाल तो उस बात का है जो हरसुख ने पहले कही थी। रहने के लिए घर चाहिए और पेट पालने के लिए धन्धा भी जरूरी है। यह जो भैया ने पांच-पांच रुपये जमा करने की बात कही उस रकम से मुझे एक भैंस दिलवा दो तो उपकार मानूंगा। गांव छोड़कर मैं सरसुतिया के साथ इसी कस्बे में आ जाना चाहता हूं और जो यह सब न कर सकते हो तो हम दोनों जने एक साथ माहुर खाकर सो जाएंगे और भगवान के बैकुण्ठ में अपनी शादी रचाएंगे।

अमां प्रेम जीने के लिए होता है या मरने के लिए। बहरहाल तुम्हारी बात मेरी अक्ल में आ गई। तुम्हें इस कस्बे में घर भी दिलवाया जाएगा और शादी के उपहार में लकमनी भी मिलेगा।

'ब्लकमनी क्यों?

अबे साले भैंस।

चौहान की इस बात पर सब जने हंस पड़े। सत्तार ने कहा 'एक बात और कहूं। तुम लोग बुरा तो नहीं मानोगे?

"कहो-कहो।

सुहागी के रहने के लिए मुस्लिम मोहल्लों के पास वाला कोई

महल्ला ही ठीक रहेगा। अगर रिपुदमन इस शादी का विरोधी हो गया तो हमारे कस्बे म भी आपके बहुत म हिन्दू इनके कस्टमर हरगिज नहीं बनेंगे।'

सुहागी फिर बोला, 'अकेले रिपुदमन की ही बात नहीं है भया खुद मेरा बाप और मेरी बिरादरी ही मरी दुश्मन बन जाएगी।

रमेश, जो बडी देर से चुप बठा हुआ बातें सुन रहा था एकाएक सिर झटकाकर बोला सुहागी को बसा घर, जसा तुम लोग प्रपोज करते हो मैं दूगा।

'अरे वाह रे मेरे अलाद्दीन के चिराग। ऐसा घर कहा स लाओगे बेट्टा?'

रमेश बोला अभी तीन ही चार दिन हुए हैं हमारे फादर ने कयाने म एक मकान खरीदा है। खरीदा क्या इनके पास रेहन रखा गया था और वह पार्टी उस बचकर चली ही गई क्योंकि राजधानी म उस जाब भी मिल गई है और मोहिनीपुर कालोनी म एक मकान भी इन्स्टालमेंट पर खरीद लिया है।"

'मगर तेरे वालिद-बुजु गवार वह मकान सुहागी को क्या देंग? अरे किराय पर चलाएग या बेचेंगे कि

रमेश बोला 'यार किराया मैं दूगा। बाद म जब इसका काम चलने लगगा तब यह दने लगगा। घर क हाते मे थाडी सी जमीन भी है। बस वहीं बाघ ली जाएगी। बहरहाल हम लोग लला मजनू की शादी करेंग।'

सुहागी ने भावावेश म सबके आगे अपना मत्था टेक दिया। भर गले स कहा, 'आप लोगों का उपकार सात जनम नहीं भूलूगा भया, मगर यह इसकीम चलेगी नहीं। रिपुदमन का सरसुतिया की बिरादरी वालो पर बडा जोर है और सतरी महेसनाथ सिंह

"एसी-तैसी साले मक्खियो की। वो पालिटिक्स लाएगा तो हम भी लाएगे। कटटेबाजी की भी कमी नहीं और इस समय चुनाव म मलू राठौर भी फाइनेंशल हेल्प कर देगा। क्योंकि रिपुदमन और महेसनाथसिंह दोनो ही स उसकी पुरानी दुश्मनी है।' बिल्लू न कहा और सुहागी सरसुतिया के प्रेम विवाह की पूरी योजना फटाफट बन गई।

चार

सरसुतिया घर स भाग गई। क्टारीपुर क हरिजनो म कुछ हल्ला गुल्ला ज़रूर मचा सुहागी और सरसुतिया के बार बार छिप छिपकर मिलन जुलन की बात अब छिपी न रह सकी फल गई। लखन उक्त सरसुतिया का मामा लगता है उसकी मा रुक्मा का सगा चचरा भाई। सरसुतिया क भागने के चार दिन बाद लखन न आजकल म सुहागी और सरसुतिया के विवाह का चित्र देखा ता भडक उठा। लखन को लगा कि उसकी भाजी को भगाकर अहीरा ने मानो उसकी नाक काटी है। छिद्दा अहीरकी टोली स उसका कुछ खिचाव भी था। उसने सोचा कि इसम छिद्दा का हाथ भी कही न कही अवश्य ही है। ताव और अपने घमड म अकेन ही चल पन्ा।

क्टारीपुर म हरदोई माग के किनारे सुहागी क बाप ने दूध मिठाई की दुकान भी खाल रखी थी और सवेरे शाम गोशाला के बड आगन म दूध बकता था। एक दिन सवेरे ही सवेरे वह सुहागी के पिता क घर आ धमका। सुहागी का पिता शिउदयाल अपनी गाहकी के काम म फसा था। उसन लखन की आर तब देखा जब लखन ने उसकी गदन पर छुरा रखकर पूछा बता वे तरा लौंडा कहा है ?

शिउदयाल और उसके गाहक एकाएक चौंक पडे। गदन पर रखे छरे स कुछ सनसनाहट भी फली। मगर शिउदयाल भी कुछ कम नही था। छुरे की चुभन क साथ ही दूध बेचत-बेचते उसकी आखें लखन स मिली और जादू का मा करिश्मा दिखाते हुए झटका लेकर जिस नपने स दूध नाप रहा था वह भरा का भरा अचानक लखन की आखा पर फेंक दिया। लखन का क्षण भर क लिए झपकना था कि शिउदयाल के छाटे भाई ने दूध काढना छोड करपीछ स उसे गपची म भर लिया। गाहकों का भीड म स भी कुछ लोग तब वीर बनकर झपट पडे। हा-हुल्लड ने महल्ले भर को आनन फानन ही चारा तरफ इक्टठा कर दिया। लखन सशक्त होने हुए भी पूरे घेराव म आ

चुका था। उसके छुरे वाले हाथ पर पर रखकर बाबू पा लिया गया था। महल्ले क एक सीकिया पहलवान को जोश चढा तो पगहा बाधने वाली रस्सी उठाकर ले आया कि साले के पर बाध दो। यों महल्ले के शाहमदारो ने मरे हुए को बाधकर मारना शुरू किया। लखन पासी के हाथ-पाव बाध कर भी एक बस्ती के एक 'इण्टेलेक्चुअल' टाइप मुशीजी ने कहा, "तखत पर लिटाकर दोना पायो से साले को बाध दो। मारो मत वरना कानून तुम्हारे हाथ मे निकल जाएगा।' इस बात पर हल्का सा शास्त्राथ हुआ। बधे हुए लखन के मुह पर शिउदयाल के तडातड तमाचे पड रहे थे। और जब उसने करवट ली तो आगे-पीछे की भीड ने दोना ओर से उसपर अपनी लातो क प्रहार किए।

पुलिस आ गई। डाकू लखन पासी तब तक बेहोश हो चुका था। लग भग पुलिस के साथ ही साथ 'आजकल' के नगर रिपाटर चक्रपाणि चौबे भी अपने स्कूटर पर कमरा सहित आ पहुचे। सरकारी और पत्रकारी पूछताछें हुई। गवाहों के नाम लिखे गए। लखन बेहोश था इसलिए उसे थानेवाली तक उठाकर ले जाने के लिए किसीके यहा से दरी आई। चक्रपाणि फोटो पर फोटो ले रहे थ।

दूसरे दिन 'आजकल' म लखन पासी क पकडे जाने और किसी गहरी चोट क कारण हवालात म उसके मर जाने की खबर उसकी तस्वीरा क साथ छपी। राजधानी के दो अखबारा म इसक साथ ही साथ एक खबर और भी छपी थी कि वित्तमत्री महेसनाथ सिंह लखन पासी को देखने क लिए अस्पताल गए थे। और लखन पासी रोते हुए जब उनके गले म हाथ डाल रहा था तभी उसका प्राणान्त हुआ।

दूसरे दिन सवेरे नौ-साढे नौ बजे के लगभग सतोषीप्रसाद और बबलू राठौर गुरसरन बाबू के यहा आए। अवकाश प्राप्त गुरसरन बाबू क पास अब पढ़ने का समय चूकि अधिक निकल आया था इसलिए दो अखबारों की एक एक खबर चुन चुन कर पढ़ते थ। कुवर साहब को देखकर उनका सामन्ती मन आदर और प्रसन्नता से खिल उठा। हाथ का अखबार फेंक हडबडाकर हाथ जोडे उठते हुए अपनी अध आरामकुर्सी छोडते हुए खडे हो गए। विराजिये विराजिये। अपनी कुर्सी की ओर हाथ बढ़ाया। बबलू ने साग्रह उन्हें उन्हींकी जगह बिठलाते हुए पूछा, 'बिन्नू घर म है?

गुरसरन बाबू चौंक गए। पूछा, 'हा मेरे ख्याल म कल रात आया

तो था। शायद सोया भी यहीं था। छुटकन्नू तुम अपनी अम्मा से जाकर पूछो और चाय-वाय बनवाओ झटपट।'

सतोषी उफ छुटकन्नू भीतर गया। बबलू गुरसरन बाबू से कह रहा था आप मेरे लिए कोई कष्ट न करें बाबूजी। आप मेरे बड़े हैं। सतोषी मेरा कितना गहरा मित्र है यह भी आप जानते हैं।

जी-हां जी हां। वो तो सब है कुंवर साहब मगर मेरी इन बूढ़ी रगों में जो आप राजे महाराजों का नमक घुला हुआ है वह आखिर कहां जाएगा। हे हे हे। आप समझें कि हमारे बाबा परबाबा सभी आपकी रियासत का नमक खा चुके हैं। ये जो महेसनाथ सिंह लखन पासी के मरने पर उसके तन लिपटकर रोये थे वह खबर सच हो सकती है कुंवर साहब?

'इसमें झूठ क्या है बाबू जी। महेसनाथ सिंह इसीके बूते पर इलेक्शन लड़ रहे हैं। एक तरह से उनका दाहिना हाथ कट गया है। आप जानते नहीं झूठे गवाह बनाये जा रहे हैं कि बिल्लू ने सरसुतिया को गायब करवाया और उसी ने उन दोनों की सिविल मैरिज का अरेंजमेण्ट भी किया था। बिल्लू की मार से लखन पासी के मारे जाने की झूठी गवाहियों पर पुलिस उसे गिरफ्तार करने आ सकती है। इसीलिए चेतावनी देने आया हूं।'

बाबू गुरसरन गम्भीर हो गए फिर बोले "मुझे एक मिनट की इजाजत दीजिए। मैं अभी अन्दर जाकर तलाश करूं कि बिल्लू है या नहीं क्योंकि मैं नहीं चाहता कि पुलिस मेरे दरवाज़े पर आए। गुरसरन बाबू उठे ही थे कि सतोषी और बिल्लू भीतर से बैठक में आए। बिल्लू बबलू से हाथ जोड़कर हुआ। बबलू बोले तुम इसी समय हमारे साथ चलो।"

मैं कायर नहीं हूं बबलू भैया। क्या तुम यह सस्पेक्ट नहीं करते कि कटारीपुर के पासियों में सुहागी के बाप और हमारे कस्बे के अहीरों के घर तबाह करवाये जा सकते हैं? मैं

'तुम चलो तो सही। मैं यही सब प्लान डिस्कस करने के लिए इस समय आया हूं। महेशनाथ सिंह के साथ खाली पासियों का गिरोह ही नहीं छिद्दा अहीर का गिरोह भी है। अभी मामला बहुत टेढ़ा होने वाला है। तुम जल्दी हमारे साथ चलो।

तीनों चलने लगे तो गुरसरन बाबू ने उठकर पहले तो कुंवर उत्तम सिंह राठौर उफ बबलू को सविनय झुककर हाथ जोड़े फिर सतोषी से कहा, 'छुटकन्नू!

' जी पापा।

' भई सुना वो डा० गायल वाले मामले '

सतापी के उत्तर देने से पहले ही बबलू बोल उठे, बावूजी घबराइये मत जरा इस केस को निपट जान दीजिए। दो-एक दिना म फिर गायल भी गो केन्ट गान हो जाएगे। आप निमा खातिर रहिए।'

नही गोयल वाले मामले का भी साथ ही साथ उठाना चाहिए।"

उनकी बात पर हा हा का टालमटोली लगाकर वे लोग ता चल गए पर गुरसरन बाबू के मन म यह कचोट बनी ही रही कि इन लागा के मन मे केवल अपना ही पालिटिक्स व प्रपच का महत्त्व है। कसा घोर कलजुग आ गया है सतमाइ बाबा ?

कुवर उत्तमसिंह की काठी सातनेश्वर प्रासाद' म बबलू और विल्लू म देर तक बातें होती रही। विल्लू ने कहा देखिए बबलू भया, अब ता मैं इस बात पर डट गया हू कि इन दोना की शादी बाकायदा वदिक ढग से भी हो और मैं धूमधाम स रचा कर रहूगा। अन्तर्जातीय प्रेम विवाह अब पाप नही है सारे हिन्दू समाज म होन लगे है।'

माई डियर तुम इस समय इस प्वाइण्ट पर जोर मत दा। मैं प्रामिस करता हू "

प्रामिस-प्रामिस कुछ नही। मैं अच्छी तरह जानता हू कि स्व० लखन के साथी हमारे अहीर पाड पर खास तौर से और कटारीपुर मुहागी के बाप के यहा भी अवश्य आक्रमण करेंगे। महेशनाथ सिंह इस मुद्दे पर चुप नही बठगा। मैंने कटारीपुर और यहा भी छात्रा की टोलिया लगा दी हैं। आज से उनका पहरा लग जाएगा।

सतोपी बोला, तुम समझत क्या नही बबलू हम इस समय छिद्दा अहीर के गग का रिपुदमन और महेसनाथ सिंह क कण्ट्रोल से निकाल भी सकते हैं।

'भई बिरादरी का मामला है कही छिद्दा छिटक गया तब आफत हो जाएगी।'

बबलू भया, इस मामले का मैं अच्छी तरह समझता हू। बडी मेहनत से मैंने छात्रों पर कण्ट्रोल किया है। हमारी उस शक्ति को भी मत भूलो। लखन पासी का बचा-खुचा गिरोह हमारे अहीर पाडे पर आक्रमण करगा, उसके पहले ही मैं यहा धूमधाम म खुलेआम दोना की शादी करवा देना चाहता हू।

पासी जब उसपर अटैक करेंगे तो

छिद्दा का जातिवाद सुहागी और उसके बाप के साथ होगा महेश नाथ सिंह के साथ नहीं। एक बार क्लैश हो जाए तो मैं कोई नहीं बचा पाएगा और इससे मेरे ख्याल से आपकी पोजीशन स्ट्रांग ही बनेगा। महेश नाथ फिर अपनी जमानत जब्त न कराए तो मुझसे कहना।

नहीं बिल्लू यह जिन्दगी और मौत का मामला है। मैं छिद्दा को अपने खिलाफ नहीं जाने देना चाहता हूं। हां सुहागी और उसकी पत्नी को सुरक्षित रूप से अण्डरग्राउण्ड कर देना मेरे और मतापी के बस में खूब है। इलेक्शन जीत लें फिर ममता रंग देने वाला था।

छिद्दा को अपने हाथ में करने के लिए भी मेरे पास एक तगड़ा सोर्स है। हरगुन साहब मेरा साथी है। वह मूलरूप से है तो कटारीपुर का ही। उसके फादर बेकार बनकर यहां आ बसे थे मगर गांव से कान्टेक्ट्स अभी टूटे नहीं हैं। और जहां तक मुझे मालूम है कि हरगुन की छिद्दा से कुछ रिश्तेदारी भी है। मैं आज शाम कल में हरगुन के साथ छिद्दा से मिल आऊंगा

बिल्लू तू बेवकूफ है। छिद्दा से कान्टेक्ट कर पाना तेरे बस की बात नहीं। मतापी बोला।

बिल्लू ताव खा गया। कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और कहा छुन्नू दादा अगर मैं असल बाप का बेटा हूं तो चौबीस घण्टे के अन्दर छिद्दा से मिल लूंगा और यही नहीं अस्सी प्रतिशत यह वादा भी करता हूं कि छिद्दा अब महेशनाथ के चुनाव को सपोर्ट करेगा। मेरी भी अपनी कुछ नीतियां हैं।

बबलू बोला करके देख लो भई लेकिन तुम यह जानते हो कि मेरे लिए यह जीवन मरण का प्रश्न है। अगर कांग (आई) जीत गई तो मेरे मन्त्री बनने के चांसेज हैं।

बबलू भैया, मैं तुम्हारे इलेक्शन के विरुद्ध कुछ नहीं करूंगा। बल्कि सच मानो अगर सुहागी और सरसुतिया के खुलेआम विवाह-समारोह में तुम अपनी पार्टी के लोगों को भी हमारे साथ जोड़ लोगे तो फायदे में ही रहोगे। हीरो बन जाओगे हीरो।

ठीक है। तुम छिद्दा से मिल लो फिर देखूंगा। मगर यह चेतावनी दिए देता हूं कि पुलिस तुम तीन चार लड़कों को गिरफ्तार करने के लिए

अभी मुझे गिरफ्तार करने वाला पैदा नहीं हुआ। मैं बिल्लू हूँ बिल्लू और मेरा नाम भी किसी बड़ी से बड़ी सत्ता की शक्ति से कम नहीं है।

बिल्लू बबलू राठौर की कोठी से रिक्शेवार सवेरे पहुँच अब्दुल गफ्फार के यहाँ पहुँचा। उसने बातें कीं। गफ्फार पर पुलिस की नज़र अभी तक लगी है। इसलिए बिल्लू तो यहीं बैठा रहा बिल्लू गफ्फार हरगुप्त मोहल्ला और रमेश को बुलाने के लिए चला गया। घण्टे भर में सभी लोग जमा हो गए। बिल्लू ने बबलू राठौर से हुई अपनी बातें सबको बताईं और कहा मैं हरगुप्त को लेकर छिद्दा अहीर से मिलना चाहता हूँ। तुम लोगों की क्या राय है?

रमेश बोला यार हम छात्रों को देखने के साथ

तो छात्र देखने के साथ क्या रहेगी हालत आ रहे हैं? छात्र छात्रों के अलग-अलग संगठन क्या पॉलिटिक्स देखने के साथ नहीं है। और क्या यह बात सच नहीं कि इस समय कांग्रेस पार्टी के खिलाफ छात्रों में भारी असंतोष है। महेन्द्रनाथ सिंह मरने हुए नव्वा पार्टी के गले में हाथ डालकर रोते थे। उस चक्रपाणि यादव ने उनकी पोल भी अच्छी खोली होगी। मैं उसकी नब्ज़ को भलीभाँति जानता हूँ। छोटा नहीं सका होगा क्योंकि 'आजकल के स्वामी बोस (आई) विरोधी है। अगर उनसे बात पास्ता हुआ तो मैं प्रॉमिस करता हूँ कि चौथे दसवें दिन छिद्दा हमारे साथ हो जाएगा।

बिल्लू की इस आशीली भाषणनुमा बात ने सबको सम्मत कर लिया। हरगुप्त बोला, छिद्दा से हमारी कुछ दूर की रिश्तेदारी भी है। मैं कटारीपुर में अपने चचेरे भाई रामेश्वर को साथ लेकर छिद्दा से तुम्हें मिला देने का प्रॉमिस करता हूँ। पर यही है कि तुम चक्रपाणि पर अपना पानी फेर दो और सफल हो जाओ।

रमेश बोला, "और मान लो चक्रपाणि के पास फोटोग्राफ न भी निकले तो राजधानी के दोनों अखबारों की रिपोर्टें तो हमारे साथ होंगी।'

बिल्लू बोला 'जीता रह मेरा यार। तूने मुझे समय की बचत के लिहाज से अच्छी राय सुनाई है। मगर एक बात है—मान लो हम चारों पाँचों लोग एक डेपुटेशन बनाकर छिद्दा से मिलने जाएँ तो क्या उस पर प्रभाव नहीं पड़ेगा।"

चलो फिर साइकिलें उठाओ। हम सब कटारीपुर चलते हैं। मामला वहीं पर तय होगा।

नहीं पहले चक्रपाणि से चक्र लाने की कोशिश करो। पाव भर गुलाबजामुनें लेकर जाना उसके पास। समझे !

इधर बबलू राठौर और सतायीप्रसाद की राजनीति भी चुप नहीं बैठी थी। मीडिया और रणभेरी में प्रकाशित महेशनाथ सिंह और लखन पासी की मिलन भेंट के समाचारों का प्रचार कटारीपुर तथा आसपास के इलाके में लाउडस्पीकरों पर घूम घूमकर सुनाया जा रहा था। चक्रपाणि चौबे से फाटा लेने में रमेश सफल हो गया। राजधानी में पचास सरकार विरोधी कट्टे छुरेबाज साथी भी आ गए। बिल्लू एण्ड कम्पनी तथा कटारीपुर की रक्षा के लिए आई हुई छात्रों की टोली कटारीपुर की ओर जब चलने को ही थी तब अचानक यह खबर आई कि लखन पासी के साथियों ने सुहागी के बाप शिउदयाल तथा कटारीपुर के अहीरों पर हमला कर दिया है। सुनते ही जवानों में जोश आ गया। साइकिलें हवाई जहाज बनकर उड चलीं।'

पासियों ने सुहागी के बाप शिउदयाल के हाथ पर बाधकर उसको जलती हुई गौशाला में फेंक दिया। यह सयोग ही था कि आग में न गिरा। दिन दहाड़े अहीरों की बस्ती में क्या हुआ और क्या न हुआ इसका हिसाब किताब भला मानवता का कौन-सा आदर्श करेगा ! बदमस्त और खूख्वार डकैत जब कटारीपुर में उत्पात मचा ही रहे थे तब तक बिल्लू की टोली पहुच गई। उनके हुल्लड और कट्टों की तडतड ने अहीर बस्ती के आतक कारियों को सावधान किया लेकिन लुटेरे व्यभिचारी अब चूकि घर घर में बटे हुए थे आधी बस्ती में आग भी फली हुई थी इसलिए छात्रों के अकस्मात आक्रमण से दो चार लोग मारे गए बाकी भाग। छिद्दा अहीर सयोग से उस समय पडोस के गाव हरखपुर में ही मौजूद था। कटारीपुर में आक्रमण की खबर मिली तो उसका यादव रक्त खौल उठा। फूक दो सारे पासियों के घर।

एक साथी ने कहा 'उनसे बदला लेने के लिए राजधानी से लडके भी आए हैं।'

ठीक है, उनको पीछा करने दो। तुम वहा के पासियों की बस्ती उजाडो। उस लौंडिया की अम्मा महेशनाथ सिंह की रखैल साली को तो कुतिया बनाकर छोडना और महेशनाथ सिंह के यहा से अगर कोई बोले

तो भी साले को भूनके रख देना।

जब पासी डकैतों का सफाया करके लड़के जलती हुई पासी बस्ती के पास आए तो छिद्दा खड़ा ललकार रहा था। हरसुख हिम्मत करके अपने चचेरे भाइयों के साथ आगे बढ़ा छिद्दा से कहा, "मौसा जी पहले मेरी एक बात सुन लीजिए।'

'कौन हो तुम?'

"रामनाथ यादव वकील का लड़का। हम लोग शहर से आप ही से मिलने आए हैं।

क्या?'

महेशनाथ सिंह '

महेशनाथ सिंह के नाम पर ही छिद्दा के मुख से एक भद्दी गाली निकल पड़ी। बिल्लू छूटते ही छिद्दा के चरण छूकर हाथ जोड़कर बोला, उसका बड़ा जवाब हम देंगे। बस हम आपका आशीर्वाद भर चाहिए।'

क्या करोगे?"

आप ये पासियों के घर जलाने की आज्ञा वापस ले लीजिए। अब बड़े-बड़ों में अन्तर्जातीय विवाह हो रहे हैं। सुहागी ने अगर कर भी लिया "

इन सालों ने अभी अभी बजुआ के घर में घुसकर हमारी औरतों की बेइज्जती करनी चाही। मैं यह सह नहीं सकता। इन सबका वंश नाश कर दूंगा। महेसनाथ सिंह साला समझता क्या है। उसका मंत्री मैंने बनाया था लखन पासी ने कहा और साला गले मिलने गया उस कमीने से जो हमारे ही एक भाई का मारने के लिए पहुंचा था।"

'मैं इसलिए आपसे प्रार्थना करता हूं कि हम लोग राजधानी के और कस्बे के लगभग एक हजार छात्र सुहागी और सरसुतिया की वैदिक रीति से खुलआम शादी करना चाहते हैं। आप वहां मौके पर पहुंच दोनों को आशीर्वाद दे दीजिएगा। बस इतना ही चाहते हैं। फिर कोई कटारी पुर या हमारे कस्बे के अहीर पाड़े पर हमला करने की हिम्मत नहीं करेगा।

साली नीच बिरादरी की लड़की

देखिए यादव जी अब अन्तर्जातीय ब्याह खूब हो रहे हैं। आपकी बिरादरी में पहले भी एक ब्याह हो चुका है और जिससे हुआ है वह आपका वकील है। है कि नहीं?

छिद्दा चुप हो गया। थोड़ी देर तक गंभीर खड़ा रहा। फिर पूछा

'यह ब्याह कब करना चाहते हो ? '

आज या कल जब आप आज्ञा दें । '

मैं अग्या दने वाला कौन हू । पडतो से महूरत सुनवाओ ।

वो सब हम कल ही सुझवा चुके । अच्छी साइत म ही तो कल उनकी सिविल मरिज करवाइ थी । आज भी अच्छी साइत है और कल भी रहेगी । जब आप आज्ञा दें । हरमुख न अपनी नीति भरी बातो स अपने तथाकथित मौसाजी को ठडा कर लिया ।

बडी-बडी मूछा पर ताव न्त हुए छिद्दा वाला करा ब्याह मैं मौके पर ही सामन आऊगा । बाकी पीछ ही रहूगा । अभी पुलिस स सीधी मुठ भेड लन का समय नही आया है ।

ठीक ठीक बिल्कुल ठीक । कल शाम रामलीला क मदान म ब्याह की घोषणा आज ही लाउडस्पीकरा से कर दते हैं ।

कर दो बजरगबली सब भला करेंगे । छिद्दा ने फिर मूछा पर ताव दिया और पतलून से सिगरट की डिबिया निकाली सुलगाई और धुआ उडाता हुआ चला गया ।

पाच

ऐन चुनाव की गर्मी के दिना म लखन का मारा जाना और छिद्दा का जातिवाद भडक उठना इस क्षेत्र क दूसरे प्रत्याशी मत्री महेशनाथ सिंह के लिए बडी चिन्ता का विषय बन गया। बेटी क चले जाने और अपन माव जनिक अपमान के कारण अपनी प्रेमिका के अथक विलाप से रिपुदमन सिंह भी अत्यन्त क्षुब्ध हुए। तभी अखबारा म यह सूचना प्रकाशित हुई कि छात्र सघ के आयोजन म सुहागी और सरसुतिया का कन्यादान क्षेत्र के लोकप्रिय नेता और काग्रेस (आई) के प्रत्याशी कुवर उत्तमसिंह राठौर उर्फ बबलू बाबू करेंगे। सुहागी-सरसुतिया का विवाह चुनाव की राजनीति मे जुड गया। वित्तमत्री महेशनाथ सिंह स्वर्गीय लखा भासी स अस्पताल म मिलन गए थे। इस खबर न विशेष रूप से चक्रपाणि के पीछे चिह्न क प्रचार ने शासक पार्टी की हुलिया बिगाड रखी थी। बबलू राठौर और वित्तमत्री महेशनाथ सिंह के परस्पर विरोधी वक्तव्य जोरदार शब्दों म लाउड स्पीकरों स प्रसारित किए जा रहे थे।

रामलीला मदान म पुलिस की ट्रक आकर खडी हो गई। विरोधी राजनीतिक मतो क लडका की टोलिया भी हाकी स्टिकें लेकर मदान के आसपास घिर आई। सारा दिन सुहागी सरसुतिया के विवाह की वाता म ही बीतता रहा। ब्याह होगा तो मारपीट होगी। काफी दगा फसाद मचने की सम्भावना भी व्यक्त की जान लगी। रामलीला मदान म दिन भर कुरुक्षेत्र जस मोर्चे बधने रहे। सब यही सोचें कि लडके जब मण्डप की सजावट के लिए आएग तो कस युद्ध होगा।

साझ ढल गई। मोर्चा साध हुए विद्यार्थी राह तकत ही रह गए किंतु मदान म विवाह पक्ष का एक चिडी का पूत भी न झाका। गोधूलि का समय हुआ। एकाएक शहर भर म विवाह मत्रा क स्वर लाउडस्पीकरा से सुनाई पडन लगे। लडने क लिए आतुर विरोधी पक्ष क लडके बौखलाए से विवाह-स्थल की खोज म जहा-तहा घूम रह थ लेकिन कुछ ही देर म यह

'यह ब्याह कब करना चाहते हो ?'

आज या कल जब आप आज्ञा दें।

मैं आज्ञा देने वाला कौन हूं। पंडता से महूरत सुझवाओ।

वो सब हम कल ही सुझवा चुके। अच्छी साइत में ही तो कल उनकी सिविल मैरिज करवाई थी। आज भी अच्छी साइत है और कल भी रहेगी। जब आप आज्ञा दें। हरसुख ने अपनी नीति भरी बातों से अपने तथाकथित मौसाजी को ठंडा कर लिया।

बडी-बडी मूछों पर ताव देते हुए छिद्दा बोला मेरा ब्याह में मौके पर ही सामने आऊंगा। बाकी पीछे ही रहूंगा। अभी पुलिस से सीधी मुठभेड लेने का समय नहीं आया है।

ठीक ठीक बिल्कुल ठीक। कल शाम रामलीला के मैदान में ब्याह की घोषणा आज ही लाउडस्पीकरों से कर देते हैं।

कर दो बजरंगबली सब भला करेंगे। छिद्दा ने फिर मूछों पर ताव दिया और पतलून से सिगरेट की डिबिया निकाली सुलगाई और धुआं उडाता हुआ चला गया।

पाच

ऐन चुनाव की गर्मी के दिनो म लखन का मारा जाना और छिद्दा का जातिवाद भडक उठना इस क्षेत्र के दूसरे प्रत्याशी मत्री महेशनाथ सिंह के लिए बडी चिन्ता का विषय बन गया। बेटी के चले जाने और अपने साव जनिक अपमान के कारण अपनी प्रेमिका के अथक विलाप स रिपुदमन सिंह भी अत्यन्त क्षुब्ध हुए। तभी अखबारो म यह सूचना प्रकाशित हुई कि छात्र सघ के आयोजन म सुहागी और सरसुतिया का कन्यादान क्षत्र के लोकप्रिय नेता और कांग्रेस (आई) के प्रत्याशी कुवर उत्तमसिंह राठौर उर्फ बबलू बाबू करेंगे। सुहागी-सरसुतिया का विवाह चुनाव की राजनीति म जुड गया। वित्तमत्री महेशनाथ सिंह स्वर्गीय लखन पासी स अस्पताल म मिलने गए थे। इस खबर न विशेष रूप से चक्रपाणि के खीचे चित्र के प्रचार न शासक पार्टी की हुलिया बिगाड रखी थी। बबलू राठौर और वित्तमत्री महेशनाथ सिंह के परस्पर विरोधी वक्तव्य जोरदार शब्दो म लाउड स्पीकरो से प्रसारित किए जा रहे थे।

रामलीला मदान म पुलिस की ट्रकें आकर खडी हो गई। विरोधी राजनीतिक मतों के लडको की टोलिया भी हाकी स्टिकें लेकर मदान क आसपास घिर आइ। सारा दिन सुहागी सरसुतिया के विवाह की वाता म ही बीतता रहा। ब्याह होगा तो मारपीट होगी। काफी दगा फसाद मचने की सम्भावना भी व्यक्त की जान लगी। रामलीला मदान म दिन भर कुरुक्षेत्र जस मोर्चे बधन रहे। सब यही सोचें कि लडके जब मण्डप की सजावट के लिए आएग तो कस युद्ध होगा।

साझ ढल गई। मोर्चा साधे हुए विद्यार्थी राह तकते ही रह गए किंतु मदान म विवाह पक्ष का एक चिडी का पूत भी न झाका। गोधूलि का समय हुआ। एकाएक शहर भर म विवाह मत्रा क स्वर लाउडस्पीकरो स सुनाई पडने लग। लडने क लिए आतुर विरोधी पक्ष के लडके बौखलाए स विवाह-स्थल की खोज म जहा-तहा घूम रहे थ लकिन कुछ ही दर म यह

पता चल गया कि सुहागी और सरसुतिया का विवाह बबलू राठौर की कोठी के भीतर हो रहा है और लगभग हजार डेढ़ हजार छात्र और गावों के लठैत कोठी की रक्षा कर रहे हैं।

बिल्लू ने ही लाउडस्पीकरों की योजना बनाई थी। चार लाउडस्पीकर तो बबलू राठौर की कोठी सातनेश्वर प्रासाद की छत पर लम्बे बांसों में बंधे हुए सरसुतिया और सुहागी के विवाह मंत्र प्रसारित कर रहे थे और कस्बे के कुछ घरों में अलग अलग लाउडस्पीकर और माइक्रोफोन भी लगे हुए थे। बबलू की कोठी से विवाह मन्त्र प्रसारित हो रहे थे और विभिन्न महल्लों के कांग्रेस-समर्थक घरों से यह नारे लग रहे थे— 'जो हमसे टकराएगा चूर चूर हो जाएगा।

पुलिस सातनेश्वर प्रासाद में घुस नहीं सकती थी क्योंकि वहां कोई असंवैधानिक कार्य नहीं हो रहा था। विरोधी पक्ष के छात्र बबलू राठौर की कोठी पर आक्रमण करने के लिए बहुत-बहुत उकसाय गए परन्तु सुरक्षा के प्रबल मोर्चे देखकर उनकी हाकी स्टिकें उठ न सकीं। उनके पास यही एक अस्त्र बचा था कि विभिन्न टोलियों में बटकर कस्बे भर की गलियों में 'हाय हाय' चिल्लाते हुए घूमें और उस हाय हाय का जवाब देने के लिए ही बिल्लू ने अलग अलग घरों में लाउडस्पीकरों का प्रबन्ध किया था जहां से उसके समर्थक युवक टक्कर का हाय हायात्मक जवाब दे रहे थे।

विवाह वैदिक रीति से सम्पन्न हो गया। बबलू राठौर की कोठी से यह घोषणा की गई कि नव दम्पति को जीविका चलाने के लिए उपहार स्वरूप दो भैंसें भी दी गई हैं।

सुहागी-सरसुतिया के विवाह की घटना ने बबलू राठौर का महत्त्व विशेष रूप से बना दिया। एक तो शहर में पहले ही से इन्दिरा कांग्रेस के पक्ष में जनमत संगठित हो रहा था। उसमें इस अन्तर्जातीय विवाह के रोमांस ने अपनी सुगन्धि और भर दी। छिद्दा अहीर के महेशनारायसिंह का साथ छोड़ देने से भी चुनाव पर गहरा असर पड़ा।

चुनाव की सरगर्मियां दिनोंदिन बढ़ रही थीं। चुनाव के चार छह दिनों के बाद ही रमेश ने अपने पिता से कहकर सुहागी को मकान भी दिलवा दिया। सुहागी को दो जगह दूध काढ़ने का काम भी मिल गया था। घर में दूध बचने का धंधा सरसुतिया ही सम्भालती थी। बहुत से लोग उसे देखने के लिए ही सुहागी के गाहक बन गए थे। इससे सरसुतिया की सुन्दरता की चर्चा फैल रही थी।

महीना-सवा महीना बडे आराम से बीत गया। चुनाव प्रचार के गीतों में सुहागी-सरसुतिया के प्रेम पर भी गीत बने और गाये गए। एक गीत बडा लोकप्रिय हुआ 'गलबहियां में झूला झूलत रे सुहागी-सरसुतिया को।

गन्ने और वनस्पति के सबसे बडे व्यापारी सेठ चुन्नीलाल के इकलौते पुत्र स्वतंत्र कुमार लक्ष्मी की कृपावश अपने लिए अनेक प्रकार की सुख-सुविधाएं जोड देने के लिए नैतिकता के सारे बंधनों से भी स्वतंत्र थे। सरसुतिया नया माल है कस्बे की हीरोइन है उसपर स्वतंत्र कुमार के न्यायानुसार स्वयं उनका ही पहला हक होना है। यारों ने तरकीब सुझाई। सुहागी स्वतंत्र के यहां भी गाय दुहने के लिए नियुक्त हो गया। पन्द्रह-बीस दिनों के बाद ही एक दिन एकाएक सुहागी के घर पर पुलिस का छापा पडा। पता लगा कि स्वतंत्र कुमार के यहां से उनकी कीमती घडी, अंगूठियां तथा सोने की चेन जो उनके कमरे में रखी थी, चोरी चली गई थी और इस समय छापे में सुहागी के घर की एक कोठरी में मिल गई। सुहागी चोर साबित हुआ और पकडा गया।

सरसुतिया बावली-सी गुहार मचाती रही पर कौन सुनता। वह बिल्लू के घर दौडी गई। उस दिन वह राजधानी में था। हरसुख के घर भी गई किंतु उसके वकील यादव पिता ने अपनी जाति के एक युवक को भ्रष्ट करनेवाली युवती को बडी घृणा से भद्दे शब्द कहकर अपने नौकर के द्वारा घर से बाहर निकलवा दिया। जब दोनों सहारे न मिले तो बबलू राठौर की कोठी पर पहुंची। परंतु वहां तो प्रशंसकों की भीड जुडी हुई थी। चुनाव के नतीजे आ रहे थे। रेडियो की घोषणाओं के अनुसार बबलू राठौर महेशनाथ सिंह से बाईस हजार वोटों से अधिक की जीत में जा रहे थे। प्रशंसकों की भीड में बेचारी सरसुतिया की गुहार भला कौन सुनता?

थोडी देर में बबलू तीस हजार मतों से आगे हो गए। महेशनाथ सिंह की जमानत तो जब्त होने से बच गई लेकिन वे बुरी तरह से हारे। सारे कस्बे में बबलू के समर्थकों के जुलूस निकल रहे थे। पिटी हुई पार्टी के समर्थकों के दरवाजे बंद थे। बिल्लू राजधानी से लौट आया था किंतु वह भी जोश में बबलू के यहां बधाइयां देने और मिठाइयों से अपना मुंह मीठा करने के लिए ही सीधा चला गया।

दैनिक 'आजकल' में कांग्रेस की जीत की खबरों के साथ ही साथ दूसरे

पृष्ठ पर नगरपालिका के स्वास्थ्य विभाग के निदेशक डाक्टर गायल की गर कानूनी कायवाहियां के और भी बहुत से प्रमाण प्रकाशित हुए थे। आज कल' के नगरदूत चक्रपाणि चौबे का गुरसरन बाबू ने मिठाइयों के बक्से म एक सौ एक रुपया की गुप्त दक्षिणा भी अर्पित की थी फिर भला उनके परम शत्रु की कलक कथा का वरीयता क्यों न मिलती ! बेचारे सुहागी के पकडे जाने का समाचार उसके महल्ले के ही कुछ लोगा तक सीमित रहा। कस्बे म भी खबर न फल सकी।

उसी दिन तीसरे पहर सयोगवश हरसुख को अपन नौकर स मालूम हुआ कि सुहागी की औरतिया रोती हुई घर आई थी कि तु हरसुख के पप्पा ने उसे घर स बाहर निकलवा दिया था। हरसुख पहला व्यक्ति था जो सर-सुतिया से मिलने गया। सहागी के घर के आगे वाले मदान म छप्पर के नीचे उसकी भस बधा करती थी। हरसुख को वह छप्पर भी सूना मिला। एक महल्ले वाल स उस सुहागी के चारी के अपराध म गिरफ्तार हाने की सूचना मिली। उसन सरसुतिया के घर की कुडी खटखटाई। हरसुख को देखत ही सरसुतिया उसके परा पर सिर रखकर फूट फूट कर रो पडी। बहुत समझाने क बाद हरसुख को पूरी बात का पता लगा। सरसुतिया की तरह उसे भी सुहागी के चोर होने की बात पर विश्वास नहीं हुआ। यह कोई चाल चली गई है। उत्तेजित हरसुख बोला तुम घबराओ मत भौजी मैं वचन देता हू कि स्वतत्र कुमार स अवश्य बदला ले लूगा। मैं अभी ही जाकर अपने मित्रा को यह सूचना देता हू। तुम घर के दरवाज ब द करके ही बठना। आज शाम या कल सबेरे तक हम सुहागी को जमानत देकर अवश्य छुडा लाएगे।"

छह

दैनिक 'आजकल' आज सवेरे कस्बे के लिए चौकोना चुवक लिए आया था। उस समय बबलू राठौर वतमान जनताई मत्री महेशनाथ सिंह से सात हजार वोटो से आगे थे। बधाई देनेवालो की भीड 'सातनेश्वर प्रासाद' मे घुसी पड रही थी। बबलू ने वोटो की गिनती के समय राजधानी के बजाय अपने कस्बे मे ही रहना उचित माना था। सतोषीप्रसाद उनके प्रतिनिधि बनकर राजधानी मे वोटो की गिनती करा रहे थे।

सुहागी चोरी के झूठ आरोप मे गिरफ्तार हो गया बचारी सरसुतिया अपनी घबराहट मे इधर उधर फाके मारती डोलती रही। शाम को हरसुख से मिलन के पहले उसके जीवन मे निपट अधेरा छाया हुआ था।

गुरसरन बाबू के लिए आजकल सुनहरा प्रभात लेकर आया था और सुनदा घूरेनाल के लिए आज सबेर की धूप कटीली झाडियो के जगल की तरह फैली थी।

'आजकल' हाथ मे लिए हुए गुरसरन बाबू विश्वविजयी सिकदर की तरह सवेरे सट्टी बाजार से डाक्टर कुलदीप कुलश्रेष्ठ के यहा जा रहे थे। एक हॉकर ने गुरसरन बाबू को देखकर जोर से आवाज उछाली हेल्थ अफसर की नस रखने वाले कारनामे पढिये।' गुरसरन बाबू का सावला चेहरा भोर के उजाले सा चमक उठा। रास्ता चलते जाने-पहचाने लोग रामजुहार करके यही पूछते, 'बाबूजी, यह सुनदा और गायल की खबर क्या सच है?' तो बाबू गुरसरन मुस्करा पडते। सट्टी बाजार मे घुसते ही जब एक ने यही प्रश्न किया तो बाबूजी ने एक दुकान पर खडे तरकारिया छाटते हुए भगत जी० लाल की ओर हाथ उठाकर कहा, वो सुनदा मेडम के ब्याहुता हसबण्ड खडे हैं। उनसे पूछिए।

पूछने वाले साहब मिजाज के मसखरे थे। आगे बढकर भगत जी के पास गए।

मैंने कहा जराम जी की भगत जी?'

"जै सदगुर साहब की। कहिए कसे याद किया ?

आज का 'आजकल' पढा ?

बबलू राठौर जीत रहे होगे और क्या खास बात होगी !

नहा साहब चुनाव के नतीजा से अधिक एक महत्त्वपूण खबर है। आज ता आप भी बबलू राठौर की तरह ही अखबार म हीरो बनाए गए है ?"

कौन मैं ?

जी हा आप ही भगत जी॰ लाल साहब है न ?

ता ?

डाक्टर गोयल और श्रीमती सुनन्दा जी॰ लाल की कहानी छपी है। मरे ख्याल म सुनन्दा तो आप ही की श्रीमती जी का नाम

होगा। मुझे मालूम नही ? तरकारी की दुकान से झाला उठाकर भगत जी सनसनाते हुए उठे। तरकारिया खरीदना भूल पतीस पसे का आजकल बगल म दबाया और एक सन्नाटे की जगह म बठकर पूरा काड पढा। मकान खरीदने के लिए सुनन्दा को बारह हजार रुपया देकर नगर पालिका से लाखो का लाभ करा देने का जो प्रलोभन गोयल ने कपिला कम्पनी वाला का सकेतो भरा पत्र लिखा था, उसकी व्याख्या चक्रपाणि चौरे ने खूब ही नमक मिच लगाकर छापी थी। सुनन्दा क ऊपर कोई सीधा आक्षेप न करते हुए भी उस महुए की शराब की तरह पेश किया था जिस दाम दकर कोई भी खरीद सकता है। भगत घूरेलाल तो गायल साहब क जरखरीद गुलाम स भी बदतर चित्रित किए थे। उनके दफ्तर म होन वाले अपमानो का प्रामाणिक चिटठा और घूरे भगत की नपुसक भगताई का तो ऐसा रोचक वणन किया गया था कि गोयल काड के इस महान उन्घाटन मे भगत घूरेलाल को अपना रोल बिल्कुल विदूषक जसा नजर आता था।

कबीर साहब की सारी साखिया भगत जी के क्रोध चक्र म बडी तेजी स चकरघिन्निया खान लगी पर मन का उबाल दबाए न दबा। सुनन्दा के प्रति भयकर क्रोध के बगूल उठ उठकर भी उसके भय की तग कालकोठरी म कट म पडकर घुट घुट जात थ। फिर भी सुनन्दा की मनपसद तरकारिया खरीदना न भूल।

तरकारिया का झोला और दनिक आजकल लिए हुए भगत घूरेलाल बडे ताव स सुनन्दा निवास' म घुसे। बेटी लता स्कूल जाने वाली थी। उसके जूता पर पालिश नही हुई थी। इसलिए तथाकथित पिता के घर म

घुसते ही उसने उनकी आवरू धुलाई शुरू कर दी। भगत जी बोले, "तुम्हारे जूते भी चमकाता हू राजकुमारी जी, पहले तुम्हारी मम्मी को उनकी महिमाए ता पढ़ने के लिए दे दू। लीजिए देवी जी अपने खमम न० दो के साथ-साथ अपनी महिमा का दूसरा अध्याय भी पढ़िये अखबार म।'

मेटन सुनन्दा के लिए अखबार का पना खोलकर भगत जी न रख दिया फिर लता के जूता पर पालिश करन के लिए डिब्बिया-बुरुश आदि लेकर बठ गए और कबीर की साखी सुनान लग

वाप पूत की एक नारी औ एक माय वियाय।

ऐसा पूत सपूत न देखा जो वाप चीन्हे धाय॥

कबीरदास जी तिरकाल के गुरु थे। बरम्हा, बिम्नू महेस के गुरु उनसे बड़ा है कौन ? कोई नही। बाप का धाय के चीन्हे भी तो कसे। पापा नही कहती अकर कहती है ससुरी। मा बाप की लडाइया म भी कइ बार यह सुन चुकी थी कि उसका असली पापा ठाकुर एक नामी नेता है। घूरेलाल के लिए उनके और सुनन्दा के सामने ही वह कह दिया करती है कि "यू आर नॉट मार्ई पापा। यू आर माई मम्मीज सर्वेंट ओनली।"

जूते चमक उठे। बीवी की बेटी को पहना भी दिए। फिर हाथ धोकर टिफिन बॉक्स म चिकन सडविचेज सजा कर रख दिए। लता ठीक आठ बजकर पच्चीस मिनट पर घर से मडक के लिए निकल जाती है। बस्ता लेकर भगत ही जाते हैं। जात समय पत्नी की अखबारी तल्लीनता को मुस्करा के देखा सोचा, अब अपने चरनो पर झुका के ही रहूगा सालो को। अब सरकार बदली है ता गोयलवा साला भी निकाला जाएगा और ये भी निकाली जाएगी। अच्छा है, तभी मेरे काबू म आएगी यह कलमुही।

लता के जूते चमकाए। फिर उसका बस्ता उठाकर स्कूल की बस तक पहुचा आए। जब लौटे तो देखा कि उनकी अखड सौभाग्यवती मानो सौ जूते खाके बैठी हैं। आजकल' उनके चरणो के पास पडा है। सुनन्दा ने पति को देखा, कुछ न बोली। भगत जी न पास ही रख झोले म से सब्जियां निकालकर डलिया मे रखी। कपडे उतारे अगोछा पहना फिर चूना-तम्बाकू मलत हुए बोले, 'यह सब कारस्तानी उस गुरमरनव साल का है। साले ने इबकजन पे मौके पर ही उस उल्लू के पट्ठे के साथ-साथ हमारा-तुम्हारा मुह भी काला कर दिया। गुरु महाराज सच कह गए हैं

हिरदा भीतरि आरसी, मुख देखा नहिं जाय।

मुख तो तबही देखिये जब मन की दुविधा जाय॥

तमाखू मल गई। दो-तीन बार फट फट किया। फिर उसे होठ के नीचे दबा कर बठ गए और पत्नी के उत्तर की प्रतीक्षा करते रहे। मन ही मन जानते थे कि सदा रुआब दिखलाने वाली सुनन्दा इस समय उनसे भलमनसाहत से बात करेगी। परन्तु सुनन्दा एक शब्द न बोली। हारकर खुद ही पूछा, 'अब सरकार चूंकि दूसरी पारटी के हाथ में आएगी इसलिए तुमसे एक्सपिलनेशन तो जरूर मांगा जायगा? क्या जवाब दोगी बोलो?"

कुर्सी से उठते हुए झिडककर सुनन्दा बोली मैं तो साफ कह दूंगी कि जो मरद अपनी इस्त्री की कमाई खाता है उसीसे पूछिए।

भगत जी तड़प। सदा कान दबाकर सुनने वाले के लिए आज बोलने की बारी आई थी सो बोल पड़े तुम समझती हो, मैं फसूगा? अरे मैं साधु-संयासी आदमी पंजे झाड़कर खड़ा हो जाऊंगा कि इसके लड़कों की सूरतें मिलवा लो। हराम की औलादें हैं ससुरी मैं साला हाईस्कूल फेल, तीस रुपल्ली का नौकर ये शानदार हवेली खरीदने की हिम्मत रखता हूं भला? मैं तो भरे चौराहे पर डंका पीटकर कह दूंगा कि जबरदस्ती बनाई गई मेरी नकली धमपत्नी रण्डी है साली। कबिरा सुख को जाय था, आगे मिलिया दुख। तीस रुपल्ली का नौकर चेरमन और हिल्थ अफीसर साला के सामने मेरी मजाल है कि कुछ बोल सकूं। रण्डी का खसम जो बोलूं तो भसम। मैं भी सीधा इसटेटमिंट दे दूंगा कि ब्याह मुझसे जबरदस्ती कराया गया था और इस औरत से मेरा पतनी का नाता कभी नहीं रहा।'

भगत जी कस्बे की नगरपालिका के भूतपूर्व चेयरमैन जमादार ठाकुर नत्थूसिंह के बड़े भाई ठाकुर बच्चूसिंह की अवध सन्तान थे। उनकी दो-दो ठकुराइन बांझ रहीं और घूरेलाल एक तथाकथित नीच जाति की स्त्री से उत्पन्न हुआ। घूरे भगत से पहले भी रखेल के दो बच्चे हुए थे पर वे मर गए। इसीलिए पैदा होते ही भगत जी को घूरे पर डालने का टोटका किया गया। यही नाम भी रखा गया। बच्चूसिंह अपने इस अवध पुत्र को बहुत चाहते थे। चूंकि भगत जी की मां बचपन में ही मर गई थी इसीलिए और भी चाहते थे। इन्हें पढ़ाने की भी कोशिश की लेकिन जल्दी ही मर गए और ठाकुर नत्थूसिंह अपने निसंतान बड़े भाई की पूरी जायदाद के स्वामी बन गए। उनके अवध भतीजे घूरेलाल उनके सेवक बने। इसी दौर में अपनी शहर की जायदाद की एक किरायेदार तमोलिन की बेटी सुनन्दा से ठाकुर नत्थूसिंह को इश्क हो गया। वह तमोलिन भी वस्तुतः जाति की तमोलिन न

थी, कुछ ऐसी-वैसी ही थी। सुनन्दा जब नत्थूसिंह से गर्भवती हुई तो उन्होंने अपने अवैध भतीजे घूरेलाल से उसकी शादी रचा कर उसे अपने ही पास रखा। नत्थूसिंह जब नगरपालिका के चेयरमैन हुए तो हाईस्कूल फेल घूरेलाल जनम मग्न क्लर्क बना दिए गए। शादी के पांच महीने बाद और अपनी नई नौकरी के पहले महीने में ही घूरेलाल को सुनन्दा की पहली बेटी का जन्म रजिस्टर में दर्ज करते समय बेटी के बाप की जगह अपना नाम दर्ज करना पड़ा। लड़की के पैदा होने के पांच छः महीने के बाद ही नत्थूसिंह ने हेल्थ आफिसर डॉ० गोयल की सलाह से सुनन्दा को नर्स की ट्रेनिंग दिलवाई और उसके बाद ही वह सिविल अस्पताल में ही नर्स की हैसियत से नौकर भी हो गई। धीरे धीरे नत्थूसिंह की अवैध पुत्री की मां और भगत घूरेलाल की वधू पत्नी डॉक्टर गोयल की आंखों की पुतली भी बनने लगी।

ढाई बरस बाद नत्थूसिंह की चेयरमैनी समाप्त हुई। नगरपालिका को सरकार ने अपने कब्जे में लेकर एक प्रशासक बैठा दिया। गोयल ने सुनन्दा और घूरेलाल के लिए एक अलग घर का प्रबन्ध कर दिया। नत्थूसिंह अपने दोनों सेवकों से वंचित हो गए। सुनन्दा बीस रोगियों के सिविल अस्पताल की नई मेट्रन बनी। बुढ़िया मेट्रन रिटायर कर दी गई। अस्पताल में तीन कमरे प्राइवेट थे जिनमें गोयल अपने गैरसरकारी सरकारी दोस्तों को सुनन्दा की मार्फत ऐश कराते थे। सुनन्दा गोयल की इतनी अधिक विश्वस्त हो गई थी कि उनके लिए रुपयों का लेन-देन इत्यादि भी वही किया करती थी। चूंकि गुरमरन और गोयल की आपस में चल गई थी इसलिए इस्टेब्लिशमेण्ट क्लर्क बाबू नौबतराय की मार्फत ही ऐसे तमाम काम होते थे। सुनन्दा नौबतराय से डॉक्टर साहब का हिस्सा वसूलती थी।

सुनन्दा के नाम नौबतराय की जिस पर्ची का ब्लाक गुरमरन बाबू ने 'आजकल' में छपवाया था वह इस प्रकार थी— 'मुगल स्टेशनरी वालों ने डॉक्टर साहब के लिए कुछ तोहफे भेजे हैं। अपना कोई भरोसे का आदमी भेजिए या खुद शाम को छः बजे आकर मेरे घर से ले जाइए। प्रेजेण्ट्स कीमती हैं।—नौबतराय'

भगत जी बड़े ताव में थे। नौबतराय को अपनी पत्नी का चौथा खसम बना दिया। घूरे भगत के ऐसे कड़े तेवर सुनन्दा ने पहली बार ही देखे थे। सुनन्दा को पहली बार ही यह अनुभव हुआ कि वह भगत घूरेलाल की विवाहिता पत्नी है और उसके उल्टे-सीधे वक्तव्यों से वह कहीं की भी नहीं रहेगी। यह सोचकर उसने नारी मंत्र साधा और पति के गले में हाथ डाल

कर उसका मुह अपनी ओर घुमाकर प्यार म कहा 'दुर्भाग्य म रहीसों की तावेदारी म रहकर भी जब मौका मिला तब मैंने तुम्हे प्यार किया। मेरी छाती पे हाथ रख के कसम खाओ मैं तुम्हारी नही रही।'

नारी शरीर का स्पश सुखद था परन्तु भगत घूरेलाल इस समय उस नारी स पूणरूपण विमुख थ जिसस जबदस्ती उसका विवाह कराया गया था और जिसन अपने यारो के साथ बेशरमी से बठकर उसपर हुक्म चलाए थ जिसने अपने बच्चो के मन म उसके लिए नौकर जसा अनादर का हीन भाव भरा था और जो सब तरह म निर्दोष होत हुए भी वह आज अपनी कुलटा पत्नी के कारण कितना बदनाम हो रहा है। यह विचार आते ही उसने सुनन्दा का हाथ झटक दिया और दूर सरककर बठ गया। सुनन्दा भी हतप्रभ हो खिसियानी मुद्रा म बठ गई। एकाएक साइलेंसर चढ़ी हुई पिस्तौल-सी दगी कहा मेरे पास भी तुम्हारा एक कागज रखा है ?

कसा कागज ?

जो तुमन गुस्से म लिखकर उस वक्त भिजवाया था जब मैं अस्पताल म डाक्टर साहब के पास था।

मुझ याद नहा पडता क्या लिखा था ?

तुमने लिखा था कि मुझे तुम्हारे और डाक्टर साहब के रिश्ते से कोई आपत्ति नही है। मुझे उनस क्षमादान दिलवा दो।

घूरेलाल का चेहरा उतर गया। देखकर सुनन्दा और तेज पडी बोली मैं भी यह स्टेटमेण्ट दे सकती हू कि अपने स्वारथ के लिए तुमने मुझ वश्या बनने पर मजबूर किया।

भगत घूरेलाल उदास हो गए। दो बार ठडी सासें छोडा फिर आप ही आप कह उठे घायल घूमैं गह भरा, राखी रहै न ओट। जतन किया जीव नही लगी मरम की चोट। तुम मलकिन हो जो चाहे कर सकती हो। मगर हमको सबस बडी चिन्ता यही लगी है कि मेरी इज्जत आबरू तो साली उसी दिन खतम हुय गई जिस दिन नत्य ने तुम्ह मेरी खोपडी पर निठलाय दिया। अब चौराहे पर बठा के गिन गिनकर जूते मारो भाई, मगर फिर भी बेशरम होके कहता हू कि जिस काले नाग ने हम काटा है वही अपना जहर चस भी सकता है। गुरसरन के सिवाय हमारे बचाव का कोई रास्ता अब नही है।'

'गुरसरन क्या करेंगे। वह तो हमारी सुख शान्ति म आग लगाय के अलग खडे हो गए हैं।'

'अरे महारानी जी, यह न भूलो कि इलक्सन की पालिसी चल रही है। गुरसरनव के दाता लड़के बबलू राठौर के साथ हैं। यह सारा हंगामा उसे इलक्सन म जिताने क लिए ही किया गया। या ता सतोषी काम आएगे या फिर बबल से आखें लड़ाओ। तभी इज्जत बच सकती है।

सुनन्दा तड़पकर बोली, 'बड़े अच्छे भगत हो तुम वाह्-वाह। गाली देते वक्त हम रण्डी बनाना और सलाह दते वक्त भी कहाय कि छि मुझ तुमसे घणा है। चले जाओ हट जाओ मेरी आखो के सामन से।'

भगत पूरेलाल भी गर्मा गए बोले 'ठीक है तुम्हारी आखो के सामने स ही नही, दुनिया म ही हटा जाता हू। पुलिस म चिट्ठी लिख जाऊगा कि मैं आतम हत्या कर रहा हू।'

सुनन्दा हसी बोली 'वह तो तुम पहल ही कर चुके हो और तुम्हारे मर जान के बाद भी मुझे विधवा ब्याह करन से कोई रोक नही सकता।"

सुनन्दा के गोद के लड़के मजुल को लेकर उसी समय आया ने प्रवेश किया। सुनन्दा बानी 'छिम्मो भया उठे तो दूध पिला देना अपने लिए खिचडी विचडी कुछ डाल लो।'

'और आप? बाबूजी?

मेरी चिन्ता छोडो और ये खाए चाहे न खाए भूखे रहे या मर जाए इनकी मुझे तनिक भी चिन्ता नही है।' कहकर सुनन्दा अपन कमरे म साडी बदलने के लिए चली गई।

सात

सुनन्दा सीधे बबलू राठौर की कोठी पर पहुंची। बाहर के बरामदे में बड़े तखत पर तीन चार व्यक्ति बैठे हुए थे। उनमें से एक व्यक्ति सुनन्दा देवी को पहचानता था हाथ जोड़े और पूछा, 'आप अच्छी तो हैं देवी जी?

मुझे कुंवर साहब से मिलना है।'

कुंवर साहब!' दिमाग में जैसे कुछ हिसाब-सा फैलाते हुए वह व्यक्ति उठकर भीतर गया। फिर पांच मिनट बाद लौटकर आया और बोला 'आइए।

सुनन्दा उस व्यक्ति के साथ कोठी के अन्दर ड्राइंग रूम में पहुंची। बड़े ताल्लुकेदार की कोठी उसकी मध्यमवर्गीय सजावट की कल्पना के अनुसार सभी सजी-बजी न लगी। एक बड़ी आरामकुर्सी दो हाफ ईजी चेयरें एक बड़ा तखत जिसपर मैली-सी चादनी और मैला धब्बेदार गोल तकिया रखा था। इसके अलावा तीन चार मामूली-सी कुर्सियां और भी इधर उधर पड़ी थीं। बीच में एक बड़ी सी गोल मेज़ निर्धन विधवा की तरह अकेली नज़र आ रही थी। एक आरामकुर्सी पर कोई बैठा था लेकिन उसका चेहरा खुले हुए अखबार से ढका था। सुनन्दा कमरे में आई बैठे हुए आदमी के चेहरे का अखबार हटा। सुनन्दा पहचान गई। शहर में नये रईस सतोपीप्रसाद को कौन नहीं जानता। उजला खादी का कुर्ता पाजामा अंगूठियों से लदी दोनों हाथ की अंगुलियां। सुनन्दा ने बड़ी ही गिड़गिड़ाई हुई मुखमुद्रा के साथ उन्हें प्रणाम किया।

जवाब में सतोपी का अखबार थोड़ा उठ गया। मानो सतोपी के हाथों के बजाय अखबार ही उसे नमस्कार करने के लिए उठा हो। फिर कमरे में सन्नाटा छा गया। सिर्फ एक आध बार अखबार के पन्ने पलटने की खरखराहट हुई।

सुनन्दा के भीतर प्रश्नों और कल्पनाओं का एक ऐसा बवंडर नाच

रहा था जो मन का न सोचने देता है और न निश्चिन्त ही रहने देता है। फिर भी अनिश्चय ने निश्चय की एक गति ले ली। उठी, सतोपी की कुर्सी के पास तक गई। उसे आया देखकर सतोपी के सांवले किन्तु सुहावने चेहरे के सामने से अखबार हटा। मुस्कराकर बोला बबलू बाबू के लिए अभी आपको पन्द्रह-बीस मिनट इन्तजार करना पड़ेगा, शायद इससे भी ज्यादा समय लग जाए।" कहकर सीधे सुनन्दा से आंख मिला दी। वह पनापन अचम्भे से भरा था सूजे की तरह कलेजे के आर-पार निकल निकल गया। सतोपी ने पूछा 'आज की घटना से आप बबलू के पास क्या आईं?'

सुनन्दा अदा से मुस्कराई कहा, 'नौकरी से तो अब सस्पण्ड होना ही है। मैं कुंवर साहब को दो एक ऐसी बातें बतलाने आई हूं—यानी मेरा स्वारथ साफ है मैं तो नौकरी से अब जाऊंगी ही लेकिन डाक्टर गोयल की नौकरी—और नौकरी ही नहीं इस शहर में इनकी प्रेक्टिस भी ठप कर दूंगी।'

सतोपी ने सिगरेटकेस और लाइटर निकाला एक सिगरेट सुलगाई दो-तीन गहरे कश लिए फिर पूछा 'जिस प्रेमी ने आपको तीस चालीस हजार रुपये कमाने के मौके दिए जो आपके एकाध बच्चे का बाप भी है, उसके पास क्यों नहीं गई? उनसे बदला क्या ले रही हैं?

उससे क्यों बदला ले रही हूं? तीन बरस पहले जब मेरा इनका अफेयर शुरू हुआ था तब एक सादे कागज पर दस्तखत करवाए थे। मैंने पूछा क्या? वे बोले, 'वक्त-जरूरत प्यारेलाल से तुम्हारे तलाक की अर्जी लिखवाने के लिए। तलाक की नौबत ही न आई। मेरे पति ने मरे हुए चूहे की आत्मा पाई है। वे उस कागज पर कपिला कम्पनी वालों से मिलकर मेरे नाम से कोई फोजरी भी कर सकते हैं। अपने को बचाने के लिए वे कुछ भी कर सकते हैं। मैं जानती हूं इसलिए उनके पास नहीं गई।' सुनन्दा एक सांस में अंगारे से शब्द उगलने लगी।

तो बबलू इसमें क्या कर सकते हैं?'

'सुना है कि महेशनाथ सिंह की जगह अब वे ही मंत्री बनेंगे। डॉक्टर गोयल ने एक मिनिस्टर की भतीजी के दो बार हमल गिराए थे। अपने यहां महीना रखा। मेरे पास उन दिनों के फोटो हैं। एक दूसरे मंत्री जी की विधवा भावज के गर्भाशय का आपरेशन कराया उसके दो फोटोग्राफ्स मैंने खुद खींचे थे।'

'क्यों ?'

'डाक्टर साहब ने कहा था। फोटो इस ढंग से खींचे हैं कि उसमें डॉक्टर साहब का हाथ भर दिखाई दे। मगर भाबज साहब साफ नजर आए।'

'वह फोटो तो अब डाक्टर गोयल के पास होगा।'

सीधा उत्तर आया लेकिन निगेटिव मेरे पास है। फिर कुछ इतराकर अदाज माशूकाना से गर्दन लचकाकर कहा बड़े लोगों की गुड़िया बन बनकर मैंने भी अनुभव से कुछ-कुछ बुद्धि पाई है। आप जैसे महान पुरुष से भला मैं कुछ छुपा सकती हूं! नजरें लाज और अन्त से नीची हो गई।

सतोषी को लगा यह औरत चालाक है। काम की है। मुस्कराए, उठे पास आए दोनों हाथ उसके कंधों पर रखे यू आर ए रियल डार्लिंग सुनन्दा। मेरे साथ काम करने को राजी हो ?

किस प्रकार ?

य विल बी माई एडीशनल प्राइवेट सेक्रेटरी। सलरी टू थाउजेंड रुपीज पर मथ। एग्री ?

सुनन्दा खड़ी हो गई। दोनों पास पास खड़े हो गए। इस बार आंखों में आंखें डालकर बात करने की बारी सुनन्दा की थी। नारी की सहज सम्मोहक दृष्टि पुरुष की दृष्टि को बांधकर सवाल पूछ बैठी 'क्या आप सीरियस है ?

'आफ कोर्स।

'मेरा काम क्या होगा ?'

फिलहाल इस विचार से तुम्हें इंगेज कर रहा हूं कि मेरी वाइफ बनकर हांगकांग चलोगी।

मैं राजी हूं। आप जो कहिएगा करूंगी। कहीं फंस न जाऊं ?

'एक बार फंस चुकने के बाद अब तुम फंस नहीं सकती—मेरे साथ भी शायद—नहीं। इसलिए तो इंगेज कर रहा हूं। तुम जानती हो वह फोटोग्राफ्स मेरे फादर ने छपाये हैं।

हां मेरा मो ब्राइड हसबण्ड भी यही कह रहा था।

तुम्हारे नये फोटोग्राफ्स कीमती हैं। बबलू से उनका जिक्र करने की जरूरत नहीं। समझी! अगर बबलू पूछे भी तो कहना मेरी इडीशनल पी०ए० बनकर मेरे साथ ही आई हो।'

"और मेरा वह कागज़ जिसके डर से मैं ,"

'उसकी चिंता तुम मत करो। गोयल अब कुछ दिनों के बाद तुम्हारे तलवे चाटने के लिए आएगा। तब वह कागज़ तुम ले सकती हो।'

सुनन्दा की आंखों में आंसू छलछला उठे। सतोषी के चरणों पर अपना सिर टेककर बोली आप देवता हैं।'

आठ

हरगुण ने चिन्टू से सरगुनिया की सारी बातें कहीं। चिन्टू का चेहरा तमतमा उठा। सत्तार, चौहान और रमेश भी बैठे हुए थे। हरगुण की बातें सुनकर अब्दुल सत्तार बोला, "यार, हो न हो यह सारी कारस्तानी घुन्नी के भाई की है। लेकिन घुन्नी को गिरफ्तार करवाने से आखिर उसका क्या इन्तज़ाम हो सकता है?"

"इन्तज़ाम?" चिन्टू गरजकर बोला, "वह साला जरूर सरगुनिया पर अत्याचार करता होगा। हम पहले उसको छुड़ाने का उपाय करना चाहिए, फिर आगे की सोची जाएगी।"

लेकिन बातों-बातों में रात हो गई। अब वे मुहल्ले के घर घर तक खिड़कियाँ उठाई जा चुकी थीं। एक दरवाज़े की चूलें ऊपर और नीचे दोनों ही तरफ से कसी हुई थीं। सरगुनिया के गायब होने की खबर सबों में फैली। मुहल्ले के किसी आदमी ने कहा कि घुन्नी का सरदार भी कम ऐयाश नहीं है। सुना उसकी नौकरानी आज शाम बयान देकर यहाँ गिरफ्तार हुई थी। यह सारा मामला उलझा सा लगता है। चिन्टू और उसके मित्रों को भी यही शक था। चौहान उत्तेजित होकर बोला, "रेड कर दो साले के घर पर।"

"उससे क्या होगा?" चिन्टू बोला, "तुम्हारे पास जब तक सबूत न हो, तब तक तुम कुछ नहीं कर सकते।"

चौहान ने कहा, "हो क्या नहीं सकता? बबलू राठौर की जीत में आखिर हम लोगों का हाथ रहा है। हम उसे मजबूर करके घुन्नी के मकान पर की तलाशी करवा सकते हैं।"

सब लोग बबलू के पास गए। सुनन्दा के साथ सन्तोषी भी वहाँ मौजूद था। सब बातें सुनकर पहले सन्तोषी ही बोला, "इसमें बबलू भला क्या कर सकते हैं?"

चिन्टू तड़प उठा, "जो नई सरकार बनने से पहले ही कस्बे में पुलिस

कप्तान और दो इंस्पेक्टरों को ससपेण्ड करा सकता है वह भला यह काम क्यों नही कर सकता ?'

बिल्लू की बात सुनकर सतोपी चिढ गया। बोला, 'उनके खिलाफ तो इतने स्पष्ट प्रमाण मौजूद हैं कि कोई उगली नही उठा सकता। लेकिन तुम्हारे पास क्या प्रमाण है कि स्वतन्त्र कुमार ने सरसुतिया को उडा लिया। और यह भी आसानी से सिद्ध किया जा सकता है कि सरसुतिया का करक्टर खराब था इसीलिए वह भाग गई। आप लोग एक बार फिर गौर कीजिए। बबलू कल राज्य गृहमन्त्री की शपथ लेने जा रहे है। वह कुछ नही कर सकते।

बिल्लू मन ही मन कसमसाता रहा। सब लोग बबलू से बिना मिले ही उठकर चले आए।

सतोपी की बातो से पूरी मित्र मडली बहुत ही खिन्न हुई। हरसुख बोला, "अब बबलू का इलेक्शन हो गया न तो क्या अकड के बोलते हैं तुम्हारे भया ? आज मुझे अपनी लाइफ का सबसे बडा शाक लगा है।'

बिल्लू बोला, "सवाल तो यह है कि सुहागी को बचाया कैसे जाए। और सबसे बडी बात यह है कि मुझे सरसुतिया के सम्बन्ध में अब बहुत बडा खतरा नजर आता है।"

हरसुख बोला, 'बात तुम ठीक कहते हो। मैं आज पिताजी से एक बार फिर बात करूगा।

चौहान बोला 'कोई लाभ न होगा। हरसुख, हमारी पुरानी पीढी के लोग अब इतने स्वार्थरत हो गए हैं कि उनसे किसी भले काम की आशा नही की जा सकती। तुम्हारे पिताजी को बचाना होता तो वे सुहागी की औरत को इस तरह अपमानित करके घर से न भगाते।"

'ठीक है मैं छिद्दा से मिलूगा।"

तीन चार दिनो मे छिद्दा अहीर से हरसुख और बिल्लू ने सम्पर्क स्थापित कर ही लिया। छिद्दा कटु होकर बोला, "बबलू राठौर तो अब मतरी हुई गए है। पुलिस कप्तान, निसपिट्टर सब के मालिक हैं, उनसे कहो।

'देखिए मौसा जी हम सबसे मिल आए हैं। गुसाइं बाबा कह गए हैं

धीरज धरम मित्र औ नारी आपत काल परखिय चारी।

बबलू राठौर अब अमीरों के मित्र हैं। हम गरीबों के सबसे बडे मित्र,

यानी आपका सेवा म आए हैं और सरसुतिया जी अब कुछ भी कह लीजिए आपकी बहू हैं। हम सबकी इज्जत का सवाल है। अमीर साले अब गरीबों का क्या जीने भी न देंग ?

छिद्दा कुछ न बोला सोचता रहा। बिल्लू और हरमुख बारी-बारी स सरसुतिया और सुहागी के प्रति करुणा जगाते रहे। थोड़ी देर क बाद छिद्दा न कहा तुम सब पच लौ पढ लिखे लाग हौ। अखबारन म बमचख मचाओ।

बिल्लू न कहा, नकिन सबस बड़ा सवाल तो यह है कि इतने दिना म सरसुतिया और सुहागी क सत्तर करम हो जाएगे। मुग सुहागी स भी बहुत अधिक सरसुतिया जी की चिन्ता है।

भाई हमारी जान पहचान के पुलिस वाल तौ बबलू राठौर तुम्हरे कस्ब त हटाय दीन हैं। अब हमार दाव न बठी। हम चुन्नी की काठी प न जाव। तुम अपने छातन का जुगाड बठाव न।

दिक्कत यह है मौसा जा कि यह परीक्षाओ का समय है। लडक—।'

तौ हम का करी। छाडि दव भगवान के भरोसे। जौन हाई तौन हाइ अब का कहा जाय जाआ।'

बिल्लू और उसके साथी घुटकर रह गए। बिल्लू न राजधानी के अखबारा म सरसुतिया-सुहागी क सम्बन्ध म दो लेख लिखे। उसम नये राज्य गहमन्त्री माननीय उत्तमसिंह उर्फ बबलू राठौर पर भी कुछ तीखी छाटाकशी हो गई थी जिसक कारण बबलू और सतोपी दोनों ही बहुत नाराज हुए। जिस दिन राजधानी के पत्र म बिल्लू का लेख आया था उसी दिन सतोपी ने कस्बे म अपनी दुकान वाली कोठी के ही विशाल लान म अपने परम मित्र माननीय राज्य गहमन्त्री जी के सम्मान म एक बहुत बडे समारोह का आयोजन किया था।

वह अपनी एडीशनल प्राइवट सक्रटरी श्रीमती सुनन्दा जी०लाल क साथ राजधानी म सबेरे सबर ही बबलू की कोठी पर गया था। बबलू उस समय नहा रहे थ। उनकी पत्नी सुनन्दा को देखकर मुस्कराइ बोली वाह छुटकन्नू भया भाभी ल आए और हम लागो को पूछा

अरे यह तो मेरी नई प्राइवट सक्रटरी है भाभी। वह हमारे हेल्थ आफीसर दुष्ट गोयल के चक्कर म बेचारी न बडी बेइज्जती और तकलीफें उठाइ हैं। बेचारी की मजबूरिया का लाभ उठाकर गोयल न करीब

करीब इन्हें कानूनी तौर पर फंसा ही दिया था। यह और इनके हसबण्ड बेचारे हमारे बबलू की शरण में आए। बबलू बिजी थे इसलिए मुझसे ही बातें हुईं मैंने गोयल के जाल से निकलने के लिए इन्हें अपनी एडीशनल प्राइवेट सेक्रेटरी बना लिया और गोयल के खिलाफ एक हलफिया बयान दर्ज करवा के सिविल हॉस्पिटल की नौकरी से भी इनको मुक्त करवा लिया। किसी शरीफ औरत को तंग करना आजकल गोयल जैसे ब्यूरोक्रेट्स का बायें हाथ का खेल हो गया है।

कुंवरानी साहब वाली आज यश नशन में बिल्लू भैया का आर्टिकल सुहागी सरसुतिया पर भी तो आया है। बिल्लू भैया ने आपके दोस्त पर भी तो व्यंग्य बाण मारे हैं।'

संतोषी बोले भाभी, बबलू बेचारे इसमें क्या ही क्या सकते हैं, आप ही बतलाइए। अब वे कोरे-कोरे नेता तो हैं नहीं मंत्री हैं। और सरकार तो एवीडेन्सेज पर चलती है। क्या किया जाए? सरसुतिया और सुहागी दोनों ही से मुझे सण्ट परसेण्ट सहानुभूति है पर आप ही बतलाइए, कोरी अफवाहों पर सरकार स्वतन्त्र कुमार को कैसे पकड़ सकती है?

थोड़ी देर बाद माननीय गृह राज्य मंत्री नहा धोकर आए। कुंवरानी साहिबा उस समय चाय नाश्ते का प्रबन्ध करने चली गई थीं। बबलू सुनन्दा के पास बैठते हुए बोला, आप सुनन्दा हैं न?

सुनन्दा ने गर्दन झुका कर शालीन स्वर में कहा, जी।'

'हमारे कस्बे के डा० गोयल से तो इनकी—

मुस्कराकर संतोषी बोला अभी उसे भूलो, अब ये मेरे साथ मेरी मिसेज का रोल प्ले करने के लिए हांगकांग जा रही हैं। इनके पासपोर्ट के लिए आया हूं। एक सिफारिशी पत्र लिख दो पासपोर्ट आफीसर को। शाम के फंक्शन में इनवाइट करने जा रहा हूं। तुम्हारी चिट्ठी देकर वह बात भी साथ ही साथ करता आऊंगा।

श्रीमती सुनन्दा संतोषीप्रसाद और श्री संतोषीप्रसाद के नाम से बने पासपोर्ट पर दोनों एक हफ्ते के बाद ही हांगकांग उड़ गए। बबलू मंत्री के सम्मान में मनोरमा का शानदार पार्टी में जा मिनमिना चला तो पार्टियां होती चली गई। ऐसा लगता था कि अपने-अपने सम्मानों में इन बेशुमार पार्टियों में जाना ही प्रत्येक मंत्री का प्रथम राष्ट्रीय महत्त्व का काम हो गया हो। इस समय हाई स्कूल और इण्टरमीडिएट के इम्तहान चल रहे थे। बिल्लू और चौहान अपनी-अपनी ट्यूशनों में ही अधिक समय देते थे।

रमेश अपन ममेरे भाई के विवाह म सम्मिलित हान क लिए अपनी ननिहाल चला गया था। हरसुख और उसक वकील पिता म अधिक नहा बनती है। दोना एक दूसरे स बचत ही रहत हैं। हरसुख अपन पिता का इकलौता बेटा है इसलिए बहुत नाराज हाकर भी वह उसस सम्बध विच्छेद करन की मन स्थिति म एक क्षण भी नही आ पात। पिता चाहत हैं कि एल०एल०बी० करके वह अपन पतृक पश म ही आ जाए किन्तु हरसुख अपन पिता के मुह पर उनक वकालत क पेशे पर लानत भेजता है। दो वचारिक मा यताओ का सघष चलता ही रहता है।

देखत ही दखत परीक्षाए बीत गइ। गमिया आ गइ।

नौ

बिल्लू का कमरा। शाम का वक्त। गर्मी बेहद। हवा करने के लिए अखबार दफ्ती और एक टूटा हुआ हाथ का पखा। सत्तार को प्यास लगी। उठकर सुराही के पास तक गया। उलटी पूरी ही उलट दी किन्तु एक बूद पानी न निकला। बोला 'लो यार, अपनी ता करबला हो गई।"

बाला की तेजी सत्तार की बात से टूटी। रमेश बिल्लू और चौहान की नजरें उस तरफ गइ। हम पडे।

बिल्लू हसकर बाला, 'जा बेटा, नीचे क पब्लिक नल स अपनी प्यास और गम कर ला। हरसुख कमबख्त आया नही। वही पडोसिया के घरा से चाचा मामा नानी मामी कन्क तेरे लिए ठडा पानी ला सकना था।'

चौहान बोला, आवे नल से सुराही भर ला न यार !

सत्तार न कहा अवे लो जेब से एक अठन्नी भी निकाल दे ताकि एक किलो बरफ भी ले आऊ।

इस बात का उत्तर बिल्लू ने दिया 'बेटा आजकल जेब खाली है। मइ जून म एक भी ट्यूशन नही मिलती।'

चौहान न अपनी जब टटोली, एक चवन्नी निकल ही आई। 'आधा किलो ही ले आना।

हद है यार। यह इन्दिरा सरकार भी महगाई पर कण्ट्रोल नही कर पा रही है।'

अमा इन्दिरा जी क्या कोई भी पार्टी आ जाए मगर महगाइ को ताड न सकेगी।

'महगाई की समस्या तो है ही, देश के विभाजन की समस्या भी आ रही है। असम गल म अटका मछली का काटा बन गया है। फिर भी यह देखो कि वहा विद्यार्थियो का सगठन कसा बना है। सारे अधिकारियो का घेराव किए बठे हैं। सारे काम ठप्प कर दिए।

इससे हम सीखना चाहिए यारो। अखिल असम छात्र सघ न अपनी

सगठन शक्ति स ही सरकार का यहा तक मजबूर किया है कि वहा क राज्यपाल क सलाहकार मशीन अब उनस बिना शत क बातें करन पर तयार हा गए है।

जा भी हा अभी विद्राह की आग वहा पूरी तरह स थमी नहीं है। यह पिछली 21 तारीख का असम क न्द नगरा म सना बुलानी पडी थी जनाव।

चौहान और रमश की बहस म बिल्लू की बीडी क धुए और उसक काना न योगदान दिया। इधर वह अपनी चिंता स भी परशान है। सालाना परीक्षाए पूरी हान ही टयूशनें बन्द हो जाती हैं। कस्बे म दो चार चारीचकारिया क सिवा और काई खबर ही नहा मिलती। तपती धूप और लू म साइकिल पर राजधानी जाकर सचिवालय और सूचना विभाग क फेरे लगाता है। कुछ खबरें बनाता है नय फीचर लिखने क लिए कुछ न कुछ मसाला लकर भरी धूप म चार बजे तक घर लौटता है। हिन्दी और अग्रजी दाना ही भाषाआ म लिखता है। रचा स्वीकृत हो जाने पर उनके छपन और फिर पस आने की प्रतीक्षा म ही उसक दिन कटते हैं। आम तौर स चेकें आता है। दिल्ली कलकत्ता और बबई से आन वाली चेकें कभी म महीने-डढ महीने के बाद ही भुन कर आती हैं। टयूशनें न रहन पर इस आकाशी वत्ति क दिना म कभी भूखे रहने की नौबत भी आ ही जाती है। आज भी यही हालत थी असल म कल शाम से ही वह भूखा है। बीडिया भी चुकने पर आ गई हैं। सोच रहा था कि छुट्टन भया होन ता उन्हें एक्सप्लायट किया जा सकता था। मा के पास जान को जी ता हाना था मगर थकन कुछ एसी थी कि फिर स साइकिल चलान म आलस आ रहा था। चाय का तलब थी मगर उसे भी अपनी कल्पना स ही तप्त कर लेने क सिवा कोई चारा न था। इसलिए बहस म ही अपन आपका उलझा लना ही पसन्द किया। कहन लगा असम क विद्यार्थिया को ऐसी जबरदस्त एकता क लिए बधाई दने को जी तो चाहता है मगर सच पूछो तो राष्ट्र क हक म यह अच्छा नहीं हो रहा।

चौहान गरमा गया क्या अच्छा नहीं हो रहा है जनाव? बचार अपन ही घर म बवस स घुट रह है। बगाली मारवाडी मुसलमान सभी ता उनक घर म बठकर उन्हीं की छाती पर मूग दल रहे है। असमिया लाग बचारे विद्राह न करें तो आखिर क्या कर?

रमश बोला लकिन यार जो बगाली मारवाडी और मुसलमान

वहा सौ-सौ, पचास पचास वर्षों स बसे हुए हैं उन्हे आखिर कसे निकाला जा सकता है।

हरसुख न उसी समय कमरे म प्रवेश किया। देखत ही बिल्लू नाटकीय मुद्रा म बाला, "निकाल साले वरना निकल जा।'

अमा, तुम ता पहेलिया बुझा रहे हो। क्या निकालू ?"

कम स कम एक रुपया जिसम चवन्नी एक पकेट चाय के लिए और पिछहत्तर पम मे जितनी शक्कर आए ल आओ बेटा। सत्तार बरफ लेने गया है। तुम चीनी ले आओगे ता यारा क मिजाज शरबती हा जाएग।'

'अमा बारह आने म आएगी कित्ती ज्यादा से ज्यादा सौ ग्राम। फीका शरबत पीन से भला क्या फायदा।

अमा यार न होने से कान मामा ही भले।'

हरसुख बोला 'अगर तुम्हारे स्टोव म मिटटी का तल है तो मैं चाय का पकेट और पचास ग्राम चीनी लिए आता हू।'

'अबे तल तो ईरान और ईराक पी गए। जाने दो यार बरफ आ ही रही है। ठडा पानी पी-पीकर जमाने को कोस लेंगे।"

ठडा पानी पी-पीकर बहसें फिर गरमा उठी। अचानक आया सुहागी—दुबला थका मगर तमतमाया हुआ। सब लोग उससे गले मिलने के लिए खडे हो गए।

बिल्लू बोला तरे दुर्भाग्य की पीडा का मैं समझ रहा हू दोस्त ।'

'जेल से निकला हू मगर अब चुन्नीलाल के बेट साले की गदन काट कर फासी पर चढने का ही इरादा है। साले न मरी सम्मुतिया को छीनने के लिए ही " फिर वह न सका, फूट फूटकर रो पडा।

बिल्लू ने उसको बाहों म भर लिया, बाला इतन निराश न हो सुहागी हम सब तुम्हारे साथ हैं। '

सुहागी ने बिल्लू के दोना हाथा का बधन दीवान आवश म हटात हुए कहा जब तक मैं उन दोना बाप-बेटो की गर्दनें काटकर उनक घर की बहू-बेटिया की बेइज्जत न कर लूगा तब तक मुझे चन नहा आएगा।

हरसुख भी उत्तेजित हो गया बोला अकेले तुम ही नहीं हम सब बागी बनेंग सुहागी। पूजीपतिया का खून पिय बिना '

बिल्लू बाला, यार इसो कोरी लफ्फाजी से काम नहीं चलेगा। इस पुनछरावे म हम लोग गिरफ्त म आ जाएग।

तुम कायर हा बिल्लू।

मै कायर नहीं बल्कि अक्ल की तलवार से दुश्मनों के गले काटना चाहता हूं। आखिर एक बात बतलाओ कि यह स्वतंत्र कुमार साला किस बूते पर अपनी राक्षसी लिप्साए पूरी किया करता है ? काली कमाई की धनशक्ति पर ही न ! इन सालो के छिपे गोदामों का पता लगाओ। उस जगह का घेराव किया तो जनता भी तुम्हारे साथ होगी।'

हरमुख बोला हां यार बिल्लू की बात में दम है। सुहागी भी इन बातों के प्रभाव में धीरे धीरे आ चुका था। सहसा झटके के साथ बोला 'इसका एक गोदाम तो मै जानता हूं। हमारे कटारीपुर की चौहद्दी के पास है। शेषनाग वाले टीले से जरा आगे ही जमीन के अन्दर उसका गोदाम है।

तुम्हें कैसे मालूम सुहागी ?

अरे अपनी आखिन देखा है भैया। जब सेसनाग की महिमा नहीं फैली रही और ई जगह जंगल रहा। तब हम अपने ढोर चराने वहां जाया करते रहे। तब छ सात बार हमने वहां ट्रकें आकर खड़ी होती देखी थी। एक गुण्डा साला साधू बाबा बनाकर बैठाया गया है वहां। वहि की झोपडी से गुदाम का रस्ता है। हमारे गांव वाले सब जानित है। मगर अब उधर गऊए चरान की मनाही हुय गई है। सुहागी ने बतलाया।

हरमुख की आखो में भी स्मृति की चमक आई। बोला सुहागी की बात में दम है बिल्लू। तुम्हें याद होगा कि मास्टर प्लान में शेषनाग मार्ग को आगे बढ़ाकर सीधे ग्राण्ट ट्रंक रोड से जोड़ने की बात उठी थी। लेकिन लाला चुन्नालाल ने ही वह स्कीम ठप्प करवा दी थी।

बिल्लू ने कहा मैं इसका पता लगवाऊगा।

पता लग जाने के बाद बिल्लू की यह चिन्ता हुई कि श्रमदान आरम्भ करते ही चुन्नीलाल अपना चेहरा बचाने के लिए हर तुक-बेतुक का चाल बाजियां चल जाएगा। उसने एक सुन्दर योजना बनाई। प्रदेश की नई सरकार के स्वायत्त शासन मंत्री श्री अशर्फीलाल से एक डेपुटेशन लेकर मिला। बिल्लू ने आवेदन-पत्र दोनों हाथों से आगे बढ़ाते हुए कहा अब प्रगतिशील युवकों की सरकार आ गई है माननीय और हम छात्रगण भी उसमें सहयोग करना चाहते हैं।

माननीय अशर्फीलाल नेतावत मुस्कराए। आवेदन-पत्र लेकर पढ़ना शुरू किया तो मुस्कराहट कुछ और बढ़ी। अर्जी मेज पर रखते हुए प्रसन्नतापूर्वक बोले अरे भाई आपके क्षेत्र के मंत्री कुंवर उत्तमसिंह हैं

उनसे उदघाटन कराते। बहरलाल विचार बहुत अच्छा है आपका।"

बिल्लू खट से बोला हम लोग प्रगतिशील छात्र हैं माननीय। कुवर साहब तो हमारे है ही मगर यह काम आपके शुभ कर कमला से हो तभी हमारा हौसला बढेगा। क्योंकि आप ही तरुण कबिनेट म सबसे तरुण मत्री हैं।

चौधरी अशर्फीलाल अपनी तरुणाई पर फूल गए। बोले लिखवा दो भाई किस दिन करोगे ?'

'परसा, सुबह दस बजे।"

मत्री जी पी० ए० को दखकर बोल 'डायरी म नाट कर लो।"

पी० ए० बोला, लेकिन परसा हुजूर आपको आठ बजे सवेरे आलम पुर दौरे पर जाना है।

यह लो और भी अच्छा है। आप नौ बजे उदघाटन कीजिएगा और उधर स ही आलमपुर चले जाइएगा। उधर स सिर्फ दो-ढाई फर्लांग कच्ची सडक स जाना होगा यह अवश्य है परन्तु युवको का नायकत्व यदि युवा मत्री जी करेंगे तो इससे हमारा मनोबल बढेगा।

सब बात तय हो गई। उद्घाटन के दिन जानबूझ कर सवेरे के अख बारो म इस सम्बध की कोई सूचना नही दी गई। लेकिन छात्रो की एक अच्छी-खासी भीड वहा उपस्थित थी। नगर के प्राय निधन जन जनादन को भी लडके घर लाए थे। श्रमदान का उद्घाटन समारोह बडी धूमधाम म हुआ। पहला फावडा माननीय स्वायत्त शासन मत्री न ही चलाया। उसकी फोटो भी ली गई। छात्रो के रचनात्मक उत्साह की मत्री जी ने भूरि भूरि प्रशसा की। मत्री जी विदा हुए।

सडक निर्माण की सूचना पाकर चुन्नीलाल चौक मगर बाजी एकाएक उनके हाथ से निकलती हुई नजर आ रही थी। लडके उस भूमि पर जब दस्त घेराव किए हुए थ और जाश म खुदाई काम कर रहे थ।

पहला धावला झोपडी क नकली साधू बाबा न ही मचाया।

मारो सार को साला चोरो का दलाल है। साधू बाबा ठोंक-पीट कर मुजा िए गए। नकली साधु पत्ते छू भागा।

मत्री जी क अचानक उद्घाटन की खबर राजधानी से जब कस्बे क थाने पर पहुची और उद्घाटन उसी स्थल का जहा चुन्नीलाल का गोदाम है तो दरोगा जी क कान ठनक। उन्होंने मत्री जी क साथ आए हुए कप्तान साहब क कान म कुछ कहा। तब तो घर का नही चल

सकता था।

सबस पहल यापडी ही गिराई गई। जहा नकली बाबा का चूल्हा था उस स्थान का सुहागी क निर्देश पर पहले खोदा गया। दो हाथ खोदते ही भुरभुरी मिट्टी उठा के फेंकते ही पत्थर की चटिया मिली। लडको म उत्साह आ गया। जिन्ह मालूम था व नय उल्लास म थ और जिन लडको को इस रहस्य का पता नही था वह कौतूहलवश आग चुके चुके पडत थे। पत्थर बहुत भारी नही था। आठ दस कुदाला की नोक से ही ऊचा उठन लगा। नीचे दरवाजा और दरवाज पर ताला। बिल्लू चिल्लाया, देखो भाई यह है शहर के सबसे बडे चोर चुन्नीलाल का छिपा हुआ गोदाम। यही है वह जाली शक्ति जिसके बल पर उनके लडके स्वतत्र कुमार ने सुहागी का घर उजाडा है। कितन बेचारे-बेचारिया का कलेजा जलाया है।'

बदला लो बदला लो की आवाजें उठने लगी। ताले का कुण्डा तोड डाला गया। नीचे सीढ़िया नजर आ रही थी। बिल्लू ने रमश के कान म धीरे से कहा 'तुम इसकी फोटो लेकर कमर सहित भाग जाओ। थोडी देर म ही अब कुछ न कुछ उत्पात होने वाला है। फोटो डेवलप कराके रखना।

झापडी क आसपास की जमीन और भी जोश स खुदने लगी। मिट्टी हटाते ही गोदाम की छत चमकने लगी। लडका का उन्मादकारी विजयोल्लास हुल्लड क रूप म लगभग आधे कस्बे म गूज उठा।

चुन्नी का खबर लग गई थी। नकली साधु पहरेदार भी उनकी कोठी तक पहुच चुका था। पुलिस की दो ट्रकें थाने से चल पडी। बिल्लू पहले से ही होशियार था। चौहान को चौकसी के लिए पहले से ही खडा कर दिया गया था। जसे ही उसने आकर खबर दी वसे ही बिल्लू ने अपने साथिया से कहा पकडाई मे न आना यारो इधर उधर छितराकर भाग चलो। भागो भागो।

हरसुख बोला अमा अब तो तुम्हारे बबलू राठौर मत्री हैं।'

बिल्ल न कहा बकवास न करो। तुम सुहागी सत्तार वगरह को लेकर भागो। बिल्लू न दोना हाथा स उन्ह लगभग ठेल ही दिया। कुछ लडका न सुना, कुछ ने नही सुना। बेईमानी का एक स्पष्ट प्रमाण उनके सामने था और वे बड जोश म थ। सत्य और आदश क दूध म उबाल आया था। ट्रकें मदान के पास पहुच गई। थानदार ट्रक मे लगे लाउड

स्पीकर से गरजने लगे, 'आप लोग यहा से चले जाइए।''

कोई विद्यार्थी चिल्लाया हम यहा श्रमदान कर रहे हैं।''

''यह श्रमदान नही होगा।'

बिल्लू ने चीखकर कहा, जरूर होगा। खुद मत्री जी इसका उद्घाटन कर गए हैं।

ट्रक के लाउडस्पीकर स दरोगा जी का आदेश गूजा, 'मैं पाच मिनट का समय देता हू। भीड तुर त यहा स चली जाए।'

ट्रकों के सिपाही लाठिया ले लेकर नीचे उतर पडे। बिल्लू चिल्लाकर बोला 'भाइयो तुम लोगो म स जो नामर्द हो वे चले जाए।' फिर पुलिस से ललकार कर कहा आप लोगो को लज्जा नही आती है। यहा एक चोर बाजारिये का गोदाम छिपा है और आप लोग उस समाज विरोधी का ही पक्ष ले रहे हैं? याद रखिए यदि पुलिस की लाठिया चली तो हम भी बदला लेने क लिए तयार हैं। छात्रो के हाथ मे फावडे और कुदालें हथियारो की तरह उठ खडी हुइ। लकिन वे थी ही कितनी! अधिकाश लडके व जनता तो दशक बनकर आई थी और निहत्थी थी। ट्रक से हुकुम गरजा— शुरू करो।'

खाकी वर्दी की लाठिया इधर-उधर घूमने लगी। आधी स ज्यादा भीड छट गई। दरोगा वाली ट्रक फावड-कुदालें लिए हुए लडको की ओर बढने लगी।

फावडे कुदालें कुछ न कर सका। लाठिया का जार अधिक था। बिल्लू की पीठ पर लाठी पडी। वह लडखडाया गिरा। फावडा उसके हाथ से छीन लिया गया। भागते भागते भी दो लडके बिल्लू को बचाकर ले जाने लग लकिन पुलिस के घेरे म आ गए। बिल्लू समेत दस प द्रह लडके थोडे सघर्ष के बाद पुलिस की गिरफ्त म भी आ गए। जो स्थान मेल की तरह उल्लास से गूज रहा था वह मरघट की तरह सूना हो गया।

दस

कस्ब भर म तरह-तरह की खबरें फली हुई थी। बिल्लू क गिरफ्तार हान का सूचना गुरसरन बाबू को भी मिल गई थी। पुत्रमोह की रसायन स उनका स्वाथ भरा कायर हृन्य रूपी पत्थर भी पिघल उठा। मन के बावलेपन म पहुचे घर क भीतर ही गए और अपनी पत्नी पर ही चिल्लाने लग न्ख ली न अपन सपूत की लीला। उल्लू के पटठे ने मेरी नाक ही कटवा नी। पुश्त दर पुश्न की आबरू चुल्लू भर पानी म डुबो नी नालायक न।

बिल्लू की मा घबराकर बाली अरे हुआ क्या ? किसन क्या किया ?'

और कौन करेगा ? आपक बड होनहार सपूत बिल्लू गिरफ्तार हा गए है।

ह ! मा के दोनो हाथ कलजे पर आ गए। आखें फटी फटी सी हो गइ और एक क्षण क लिए उनक मन म स्तब्धता छा गई। गुरसरन बाबू आवेश म आकर बोलत ही जा रहे थ। चुन्नीलाल से लडन चले थ सरऊ। अर करोडपती आन्मी है। सभी साल बईमानी म घन पदा करत हैं। काई नइ बात है। भगवान वेन्व्यास जी खुद अपनी कलम स लिख गए है कि धन कोरी सच्चाई से इक्टठा नही किया जाता। मगर आपके साहबजान ता दुनिया क सबस बड अक्लमद है।

बिल्लू की मा घबराकर पति से चिपट गइ और कहा कुछ भी करा मेरे बिल्लू को बचाओ। अब ता छटकन्नू का दोस्त मतरी है। जाओ उसके पास। तुम्हे मेरी कसम। मैं तुम्हारे पैरा पडती हू।

क्या बताऊ छुटकन्नू इस दम हैं नही। वही मामला सुलझा सकते थे। खर एक बार तो राजधानी जाना ही पडेगा। देखो बबलू क्या करत है ?

अब्दुल सत्तार चौहान और हरसुख तीनों ही अपने-अपने कामा म मुस्तद थ। सुहागी रमश क घर म भूसे वाली कोठरी म छिपा दिया गया

था। रमेश के घर का बूढ़ा नौकर मेंकू जात का अहीर और दूर पास के रिश्ते में सुहागी का कुछ लगता भी था। रमेश मेंकू बाबा के हाथ-पर जाकर सुहागी की रक्षा का भार उन्हें दे आया था। मौके की तस्वीरें रमेश ने खींची थीं। उन्हें लेकर वह और अब्दुल सत्तार राजधानी की ओर माइकिला पर दौड़ चले। रमेश चौरानी चाल से कस्बे भर में डोलते हुए मामले के सत्य का उद्घाटन करने लगा। ऐसे ही न जाने और भी कितने गोरखधन्धे होंगे। पब्लिक को परेशान करके ही ये लोग धनी बनते हैं और धन के जोर पर ही पुलिस को अपने हाथ का खिलौना बनाते हैं। चुन्नी का लड़का माना गरीब की औरत उठा के ले गया और जनता के कानों में जूं तक न रेंगा। इतने बड़े पाप का उद्घाटन हुआ और पापी को न पकड़कर उद्घाटन करने वाले हमारे वीर नेता बिल्लू श्रीवास्तव को पुलिस पकड़कर ले गई। याद रखो आज एक गरीब की औरत उठाई गई है कल दूसरे की परसों तीसरे की उठाई जाएगी।

क्रुद्ध जनता के जुलूस में सबसे पहले कस्बे के रिक्शे वाले ही शामिल हुए। फिर धीरे धीरे भीड़ बढ़ती गई। 'चुन्नीलाल हाय हाय। स्वतंत्र कुमार हाय-हाय।' चिल्लाते हुए वे सीधे थाने के सामने पहुंच गए। नारा बदल गया। सुहागी की औरत को पुलिस आजाद करे। दरोगा जी बाहर आ गए। हाथ जोड़कर बोले 'आप सब लोग शांत हो जाएं।'

शांत कैसे हो जाएं जी। रक्तबीज का शानदार साथी लाठी चार्ज करवा गया और आप कहते हैं कि शांत हो जाएं। चुन्नीलाल का लड़का सुहागी की औरत को उड़ाने के लिए इतना बड़ा षडयंत्र करे और हम चुप रह जाएं। आप भी हमारे भाई हैं। आपके घर की स्त्रियों के साथ ऐसा अनाचार हो और आप क्या खामोश बैठेंगे?'

थाने का फाटक बन्द था। बरामदे में दरोगा जी और दो चार पुलिस वाले चुपचाप खड़े थे और फाटक के बाहर रमेश गरज रहा था। दरोगा समझदार था। उसने शांतिपूर्वक कहा 'देखिए सुहागी की औरत के गायब किए जाने की रिपोर्ट तो आप लोग दर्ज करवा ही चुके हैं। हम विश्वास दिलाते हैं कि

रमेश फिर गरजा 'हम किसी का विश्वास नहीं करते। जब तक सुहागी की पत्नी तलाश करके पुलिस नहीं लाएगी तब तक हम यहीं बैठकर धरना देंगे।'

'महाशय मैं आपकी बात का पूरा समर्थन करता हूं। मगर मेरी

प्रार्थना है कि अगर धरना देना है तो कप्तान साहब की कोठी पर जाकर दीजिए। हम छोटे लोगों पर नाराज होने से आपको क्या मिलेगा। दूसरे हमारी यह चौकी तो कस्बे के इलाके में आती भी नहीं है। हमें क्यों परेशान करते हो?

लोगों की मीठी और समझदारी भरी बातों में रमेश पन्त ने पुलिस कप्तान की कोठी की ओर बढ़ना शुरू किया। किन्तु श्रीवास्तव को रिहा करो, चोर-बाजारियों को फाँसी दो, सरस्वती देवी का अपहरण करने वालों को दण्ड दो। कप्तान की कोठी के बाहर फुटपाथ पर हुल्लड़ का पहाड़ खड़ा हो गया। कप्तान साहब की कोठी पर पहरा देने वाले सन्तरियों की बन्दूकों पर संगीनें भी चढ़ गईं। घण्टे-सवा घण्टे तक अनवरत क्रम से नारे चलते रहे। एकाएक जेल की दो ट्रकें आ गईं। लड़के गिरफ्तार करके ट्रकों में भरे जाने लगे। भीड़ का बहुत-सा भाग जो उत्साहपूर्वक चिल्ला रहा था दुम दबाकर भाग गया। फिर भी दोनों ट्रकें ठसाठस भर गईं। धरना समाप्त हो गया लेकिन पिंजरे में बंद युवा शेर जेलखाने पहुँचने तक सड़कों पर नारे दहाड़ते रहे। नगर के वातावरण में क्षोभ भर उठा। नई सरकार के लिए क्रोध भरे वचन जगह जगह जबानों से बाहर निकलकर जनता और सरकार के बीच में मनोमालिन्य बढ़ा रहे थे।

बबलू राठौर एक पुराने छोटे ताल्लुकेदार के उत्तराधिकारी थे लेकिन अपने छात्रकाल से ही वे समाजवादी विचारधारा के पोषक थे। आरम्भ में छात्र नेता फिर बाद में अपने कस्बे के परम उत्साही नेता बन गए थे। बाद में संजय गांधी की युवा सेना में भी भरती हो गए और जनता सरकार के दिनों में महँगाई विरोधी कई आन्दोलनों का नेतृत्व किया। भरी सभाओं में कई चोर-बाजारियों के नाम धड़ल्ले से लिए और सरकार से उन्हें पकड़ने की माँग की। उनका नहले पे दहला यह पड़ा कि अपने फार्म को अपनी पुरानी किसान प्रजा को साथ लेकर कोआपरेटिव फार्म बना लिया। श्रमिक किसानों को कोआपरेटिव में मजदूरी मिलती थी लेकिन त्याग के नाम पर निर्धन सहायता कोष में लिए सबके वेतनों का कुछ भाग हजम भी हो जाता था। डिवीडेण्ड बाँटते समय भी बबलू राठौर कुछ न कुछ अर्थशास्त्रीय जादूगरी के करिश्मे कर ही दिखलाते हैं लेकिन सब मिलाकर उनका प्रजावादी चेहरा अब तक आमतौर से उजला ही रहा है। चुनाव जीत गए यही नहीं गृह विभाग के राज्य मंत्री भी नियुक्त हुए। कस्बे और आसपास के गाँवों में उनके अभिनन्दनों की होड़ लगी। सबसे अधिक

चमत्कारी तमाशा उ होने यह दिखलाया कि अपनी हर अभिन दन सभा म व साइकिल पर ही गए। उनक झडा आदि सरकारी सुरक्षात्मक पुछल्ला को भी साइकिलो पर ही चलना पडता था। बदलू राठौर अभी तक तो राजी-खुशी हीरा बन रह पर तु इस चूना क गोदाम काण्ड क कारण उनकी मन स्थिति साप छछू दर की सी हो गई, निगले तो अधा उगल तो कोढी।

बाबू गुरसरन लाल बस स राजधानी पहुचे और रिक्श स कुवर उत्तमसिंह की सरकारी कोठी तक। पहल तो प्रवेश की गुजाइश ही न दिखलाई दी। सतरी ने टके सा जवाब द दिया जनता से मिलन का टाइम चार से पाच बजे तक का है।

'भया मत्री जी मुझे अपना बुजुग मानत ह मेरे लडक के बड अच्छे दोस्त ह मैं उन्हीक मतलब क एक बडे जरूरी काम से आया हू। जाकर मेरे नाम की एक पर्ची तो द दो।

पर्ची पहल स ही लिखकर जब म रख लाए थ, जो पाच रुपय क नोट के साथ सतरी जी के हाथो म रख दी। सतरी नाम की पर्ची भीतर अदली को देकर चला आया। घडी की बडी सुई ही रही छोटी भी आग बढती रही मगर एक घटे तक कोई जवाब ही नहीं। गुरसरन बाबू की बुजुर्गी और आबरूदारी को धीरे धीरे ताव भी आ चला। मगर सतरी से बोले, ' भया मत्री जी अगर यह सुनेंग कि मैं उनक दरवाजे स बिना मिले ही लौट गया तो आप लोगो पर नाराज हो जाएग। मैं मामूली आने वालो म नहीं हू। व मुझे चाचाजी कहकर पुकारत हैं। क्या समझे ?'

सतरी बोला उनके सेक्रेटरी से पूछिए।

गुरसरन बाबू अदर पहुच गए। अदली स कहा, मैंन पर्ची भेजी थी।

अदली बोला, माननीय मत्री जी बिजी है।

गुरसरन बाबू को ताव आ गया। चिक उठाई और सेक्रेट्री के कमर म घुस गए। कहा मैं मत्री जी का चाचा हू। फोन मिलाकर कहिए कि सतापी के फादर बाबू गुरसरन लाल आए हैं।

कहन का रौबीला ढग प्रभावित कर गया। पी० ए० न टेलीफोन उठाकर मत्री जी से कहा। दो मिनट म ही राज्य गहमत्री चटपट आ पहुच और गुरसरन बाबू के चरन छूकर बोल बस तकलीफ की चाचाजी? आइए अ दर चलिए। कमरे से निकलत समय गुरसरन बाबू की नजरें

पी०ए०न इस तरह मिली मानो पूछ रही हा अन समझे बटा, मैं कौन हू ?'

अन्त म बठकर चु नी न गाम का सारा हाल सुना। जिलू की गिरफ्तारी का समाचार भी सुना। घण्टी बजाई। अन्ली आया। पी० ए० को बुलाआ। पी० ए० आया।

हमार कस्ब क डी० एम० पी० का फोन मिलाओ और ह र लाइन दा। फिर पूछा सतापी क्य तक आ रहा है चाचा ?'

अभी तक तो कोई खबर मिली नही कुवर साहब। पिछन लटर म आया था कि हागकाग स यूथाक भी जाएगा।'

बिल्लू का अब कण्ट्रोन म नता हागा चाचा। इसका किसी न किसी गवरमट पास्ट पर लगा ही दना हागा।

अब यह सब ता आप ही नाग कर सकत हैं मर बश का ता रहा नही बिल्लू। क्या बतलाऊ इसकी चिन्ता मुझ चन स बुढापा भी भागन नहा दगी।

तब तक लाइन मिल गई। राज्य गहमत्री बोन गिरफ्तार किए हुए सब लडका को फौरन छोड दा। आर चुनीलाल क लडक स भी कहला दा कि सुहागी की औरत अगर चौबीस घण्टे क अन्दर अपन घर न पहुची तो मैं उनक खिलाफ सख्त कायवाही करूगा।

चौबीस घण्टे के अन्दर सरसुतिया की लाश उसके घर क पिछवाड नाल म मिला। खबर बिजला का तरह दौड गई। तब तक बिल्लू आदि भी आजाद हा चुक थ। उधर सुहागी बावला हा उठा था। रमश और हरसुख न जबन्स्ती उस पकडकर एक कमरे म बद किया और बाहर स कहा, दिमाग ठण्डा करो सुहागी, तुम्हारी पत्नी का हत्यारा बचकर नही जाएगा यह हम वचन दत है। घण्टे ड घण्टे म ही तुम्हें सूचना मिल जाएगा कि हमन क्या किया ?

बिल्लू क कमरे म बठक जुडी। पडास क घर से कुछ फोन राजधानी किए गए। कुछ अपन कस्ब के दो इण्टरमीडिएट कालजो क छात्र नताओ क पास दौडे। परीक्षा के दिन पास थ। घण्टे भर म ही पाच सौ क द्द लडको न चुनीलाल की हवेली घेर ली। सरस्वती क हत्यार का बाहर निकालो।' उनकी काठी क टलीफोन तार काट दिए गए। उनकी कोठी क दरवाजा और चौखटों पर पेट्रोल छिडककर आग लगा दी गई। लडका की इस कायवाही स पुलिस दल सतक ता अवश्य हुआ पर उपकप्तान स लकर सब इस्पेक्टर तक कोई कारवाई करन म हिचक रह थ क्योकि कल स्वय राज्य

मन्त्री जी ने ही आदेश देकर लडको को छुडवाया था। उ हें फान पर सारी घटना की सूचना गई। राज्यमत्री जी का आदेश हुआ लाश क चारा तरफ कडा पहरा लगा दिया जाए। चुनीलाल के फाटक पर जा आग लगाई गइ है उसे फौरन बुझान का प्रब ध किया जाए। इसम लडके अगर विरोध करें ता आसू गस का प्रयाग किया जा सकता है। सरस्वती देवी का शव बडी धूमधाम म निकलगा। इसका इतजाम कर रखिएगा। म यहा स रिजव पुलिस के दस्त भी भेज रहा हू।

चु नीलाल की काठी का फाटक जल रहा था। ऊपर के दरवाजा पर मशालें तान-तानकर फेंकी जा रही थी। पचास पुलिसमना की टुकडी और पाच सौ अधाध छात्रा की भीड। भला मुकाबला ही क्या था। फिर भी पुलिस दल क दिखलाइ पडत ही लम्बे माच करत हुए बाहर निकलन लगे। सरस्वती दवी की मौत का बदला ला पूजीवादियो का नाश हा 'यह सरकार बदलनी है आदि नार लगने लग। चुनीलाल की काठी का मार्चा छोडकर आग बरसती हुई छात्र भीड से छेडछाड करना पुलिस ने शायद अच्छा नही समझा। वह आते ही चुनीलाल के जलते फाटक को बुझाने क प्रयत्न म लगी। नक्काशीदार फाटक चौखट इस तरह स तर की गई थी कि लकडी का बाहरी भाग लगभग जलकर विद्रूप हो चुका था। चौखट स लगी आयल पेण्ट की दावारा पर भी कुछ जरब आ गई थी। ऊपर फेंकी हुइ कई मशाला म स भी एकाध कारगर साबित हुई। ऊपर क बरामदे का तखत कुर्सिया जलने लगी था।

लडका क जान और पुलिस के आन की बात सुनकर चुन्नी और स्वतन्त्रकुमार दोना ही रुस्तम सोहराब की तरह अकडत हुए ऊपर के बरामद म दिखलाई दिए। नौकर भीतर स भी पानी की बाल्टिया भर भर फेंक रहे थ और बाहर स भी पुलिस वाल और मोहल्ले के दस-पाच लोग भी बाल्टिया पर बाल्टिया डाल रहे थ। दस-पाच मिनट म आग का तमाशा खत्म हा गया। चु नी की काठी का अधजला फाटक फिर खुला और चुन्नी बाबू क्रोध स तपते हुए बाहर आए इन्सपेक्टर स कहा, यह देखा आपन शरीफा का रहना मुश्किल कर दिया है।

इन्सपेक्टर ने आग बढ़कर उनक कान म कहा "अपन बट को दो चार दिन क लिए गायब कर दीजिए। आप भी शात रहिए। कुवर साहब राज धाना स चल चुके हैं। दोनो ही दर म यहा होंगे। आपकी रक्षा क लिए मैं आठ राइफलधारी कांसटेबुल छाड जाता हू। क्या तूफान मचाया है

साला न। अब तो पुलिस की नौकरी साली क्या कहूँ। खैर मैं चलता हूँ। आप भी शांत बैठिएगा। मुझे रिपोर्ट मिल चुकी है कि राजधानी से भी लड़के चल चुके हैं। चुन्नीलाल का जोश चूहे की तरह कान दबाकर बैठ गया।

जुलूस सड़कों से गुजर रहा था। दूकानें पटापट बन्द हो रही थीं। कालाबाजारिया मुनाफाखोरों को खुली धमकियाँ दी जा रही थीं कि इस नगर का एक भी गुलाम जनता की आँखों से ओझल न रह पाएगा। शहर में आतंक छा गया। कस्बे की सड़कों पर विद्रोही नारे लगाकर घूमती हुई छात्रों की भीड़ सरस्वती देवी की लाश के पास आ पहुँची। तब तक बबलू राठौर की झंडेदार गाड़ी घटनास्थल के निकट वाली सड़क पर आ पहुँची थी। बबलू को देखते ही बिल्लू उत्तेजित हुआ मगर बबलू मंत्री ने अपनी चतुराई से विद्रोह का क्षण अपने हाथ में ले लिया। कार से उतरते ही नाटकीय ढंग से बिल्लू को कलेजे से लगाकर बिलखते स्वर में कहा,' इस अन्याय का बदला अवश्य लिया जाएगा बिल्लू अवश्य लिया जाएगा।

बात इतनी जोर से कही गई कि औरों ने भी सुनी। बबलू मंत्री की आँखों में आँसू भरे हुए थे। आलिंगन मुद्रा छोड़कर पूछा कहाँ है सरस्वती देवी का शव?

पुलिस आगे पीछे। भीड़ छटती गई। शव की ओर देखा और फिर आँसू बहाते हुए आवेश की मुद्रा में उत्तेजित भीड़ को सम्बोधित करने लगे, 'पूँजीपतियों के द्वारा पिछड़े वर्गों की नारियों पर आये दिन अत्याचार बढ़ते ही जा रहे हैं। हमें इसका दमन करना होगा। उन बहादुर युवाओं को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ जिन्होंने एक कालेबाजारिये के गोदाम का उद्घाटन किया। बिल्लू श्रीवास्तव हमारे कस्बे का रत्न है। आदि आदि बहुत सी बातें कहीं। और यह भी कहा कि इस शहीद बहन का शव सम्मान से निकाला जाए। सारा खर्चा व्यक्तिगत रूप से मैं दूँगा। तब तक राजधानी से भी साइकिलों पर लड़के आने लगे थे लेकिन जब घरवालों का मन ही ठण्डा किया जा चुका था तब बाहर वालों को मनाने में भी देर न लगी। शव के सम्बन्ध में पूरी कानूनी कार्यवाही की जा चुकी थी लेकिन शव को श्मशान ले जाने से पहले एक बार सुहागी को दिखला देना जरूरी था। बबलू राठौर की झंडेदार सरकारी गाड़ी पर बिल्लू हरसुख और चौहान रमेश के घर पहुँचे। सुहागी के कमरे का द्वार खोला गया। अपनी ही धोती बिजली के पंखे की छड़ में बाँधकर सुहागी ने अपने

आपको फासी लगा ली थी। जब द्वार खुला तो सबके सब देखकर धक् रह गए। पति-पत्नी की लाश एक साथ उठी। सारा नगर, वकील मन्त्री और बडे-बडे धनी-मानी भी शवयात्रा म शामिल थे। सुहागी और सरसुतिया मरकर युवको के मन मे क्रान्ति की ज्वाला बन गए थ।

ग्यारह

मरघट से लौटती भीड़ क्या सवर्ण क्या असवर्ण सभी का मन करुणा और क्रोध से मथ रहा था।

अब पैसे वालों का जमाना है भैया। गरीब की आबरू खतरे में है।

सुहागो का पिता आग का पूला लिए हुए जब चिता की परिक्रमा कर रहा था तो लड़खड़ाया, गिरा और बेहोश हो गया। आग का पूला गिर गया। एक भीड़ उसे बचाने के लिए चिता के पास और लग गई। बिल्लू ने जलते पूले को अपनी चप्पलों से बुझा दिया, जो ठीक सुहागो के पिता के सिर के बगल ही में गिरा था। अकस्मात पहचानने वाले ने देखा कि प्रसिद्ध डाकू छिद्दा सुहागो के बेहोश पिता को कन्धे पर डाल रहा है। वह उसे भीड़ में से निकालकर ले गया। मन्त्री, पुलिस और भीड़ चुपचाप देखती ही रह गई।

सरसुतिया के बूढ़े माता पिता भी मरघट पर आए थे। किसीने कहा, इन्हींसे आग जलवा दो। बिल्लू नाराज हो गया। बोला, मैं धर्म-कर्म की यह फार्मेलिटीज नहीं मानता। चिता में आग मैं दूंगा। हरमुख, ए चौहान, तुम दोनों बूढ़े-बुढ़िया को संभाले रखना।

चिता की उठती ज्वालाओं के साथ ही बिल्लू का नारा गूंजा। 'पूंजीपतियों का नाश हो।' सैकड़ों कण्ठों से यह नारा गूंज उठा। धनी मानी जनता धीरे धीरे पीछे होने लगी, गायब होने लगी। बबलू मन्त्री ने बिल्लू के कन्धे पर हाथ रखकर प्यार से कहा, अपने आवेश को शान्त करो भाई। तुम बिगड़ोगे तो यहां का वातावरण उन्मादी हो जाएगा। मैं वचन देता हूं कि इस स्त्री के हत्यारों को छोड़ा नहीं जाएगा।

सरसुतिया के वृद्ध माता पिता को बिल्लू और उसके साथी सम्भाल कर उन्हें घर की ओर ले चले। गृह राज्य मन्त्री ने डी०एस०पी० को धनी मुहल्लों और बाजारों की रक्षा करने के लिए विशेष आदेश दिए। 'आतंकवादियों पर नजर रखें। बिल्लू मेरे मित्र का भाई अवश्य है परन्तु उसपर

और उसके साथियो पर पूरा भरोसा नही किया जा सकता। ये और भी कुछ गोदामो की तलाश करेंगे। तुम दो चार अनइम्पार्टेण्ट किस्म के बनियो-वक्कालों को पकड़ लेना, कुछ सामान भी निकाल लेना। इसमे जन-आक्रोश थोड़ा काबू मे आएगा। समझे।'

"जी सर, आपके आदेशानुसार ही सब काम कर दिया जाएगा।

'दो चार दूकानो पर तो छापे आज ही डाल दीजिए इससे वातावरण पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा और लड़के तब भी कुछ अशांति उत्पन्न करें तो कल-परसों तक बिल्लू और साथियो को भी किसी विशेष षडयन्त्र का आरोप लगाकर अपने कब्जे मे रख लीजिएगा। मेरे कस्बे मे हर हालात मे शांति रहनी चाहिए।

गृह राज्यमंत्री की झंडेदार गाड़ी नायब कप्तान और दूसरे पुलिसमनों के सल्यूट लेकर चली गई।

राजधानी से आए हुए और कस्बे के छात्रों का बिखरा बिखरा जुलूस फिर सदर के खास बाजारो से पूंजीपतियो के प्रति क्रोध भरे नारे लगाता गुजर गया। बाजार पहले से ही बन्द था। धनिको के मोहल्ले पुलिस के दलों से भरे हुए थे। यहा तक कि आसपास की छतों पर नजर रखने के लिए कुछ हथियारबन्द पुलिस वाले कई छतो पर टहल रहे थे। सारा कस्बा रात के मरघट की तरह सुनसान लग रहा था। सड़कें, गलियां सब सुनसान। बाजार मे पुलिस की गश्त। गरीब घरो मे धनिको के अनाचारो के लिए गालियां। हाय बेचारा जवान पति पत्नी का जोड़ा!

बिल्लू और उसके साथी जिस समय सरसुतिया की माता के घर मे उन्हें सात्वना दे रहे थे बहुत-से नाते रिश्तेदारो की हाय-हाय भरी भीड़ घर-बाहर भरी हुई थी। तभी अचानक छिद्दा अहीर भीड़ मे धसता हुआ आया। कुछ लोग उसे पहचानते थे। कुछ देखते ही कांप गए छिद्दा सरसुतिया के बाप के पास आया और उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा, 'घबराना मत आज से परसो तलक के बीच मे चुन्नी और उसके लड़के से बदला ले लिया जाएगा। मैं शिउदयाल को भी वचन देकर आ रहा हूं। इस बखत अहीर-पासी सब एक हैं।'

बिल्लू ने उठकर छिद्दा को गले मे लगा लिया और कहा, "अहीर-पासी ही नही सारे गरीब एक हैं। बात छिपी न रह सकी। पुलिस तक सूचना पहुंच गई। सतमाद प्रसाद उर्फ बिल्लू श्रीवास्तव, बनराज चौहान हर मुख यादव रमेश गुप्त और अब्दुल सत्तार अब इन चारो की गिरफ्तारी

के वारण्ट जारी कर दिए गए। संयोग से पुलिस के आने के लगभग पन्द्रह-बीस मिनट पहले ही सत्तार के पिता अवकाश प्राप्त हवलदार अब्दुल गफ्फार हाँफते भागते हुए बिल्लू के कमरे पर पहुंचे और भीतर पहुंचते ही गरजना शुरू किया सालेहरामियो शरीफ मा-बाप की औलाद हो और डाकुओं से मिलते हो नालायको। जल्दी से भागो। पुलिस तुम्हें गिरफ्तार करने आ रही है। भागो यहां से जल्दी।

पांचों युवकों में सनसनी फैल गई। बिल्लू ने अधेड़ गफ्फार मियां के पांव छुए और कहा आपने मौके से खबर दे दी। अब पुलिस हमारा कुछ न बिगाड़ सकेगी। साइकिलें उठाओ यारो।

पांच मिनट में ही चारों साइकिलें फकरियां टोले की गली में निकली और ये जा वो जा। पुलिस जब पहुंची तो शिकार गायब हो चुके थे। रईस मोहल्ला में खास तौर से सेठ चुन्नीलाल की कोठी पर पहरा और बढ़ा दिया गया था। साठ सत्तर हजार की आबादी के कस्बे में बिजली की तरह यह सूचना फैल गई। रात में कस्बे के अहीर पाड़े पर अचानक आक्रमण हुआ। घरों के दरवाजे मशालों की आग से जल उठे। सुहागी के पिता शिउदयाल उसकी माता और छोटी बहन तीनों ही की हत्या कर दी गई। साफे से मुंह ढके हुए लुटेरों में से एक व्यक्ति बार-बार यह कहता था कि 'सालो अगर किसी की सांस भी सुनाई दी तो फिर देख लेना।'

जलते हुए मकानों को छोड़कर अहीर पाड़े की भीड़ बाहर मैदान में ठिठुरी हुई एक जगह खड़ी हुई थी। इस धमकी के बावजूद भी तब कुछ बेबस चीत्कारें निकल ही गई। जब लुटेरों ने जवान स्त्रियों का सार्वजनिक अपमान करना शुरू किया कुछ अहीरों का शौर्य फिर से लौट आया। एक डाकू दो व्यक्तियों की पकड़ाई में आ गया लेकिन दूसरे ही क्षण वे दोनों व्यक्ति गोलियों के शिकार हो गए। डाकू भाग गए।

दूसरे दिन कस्बे में और अधिक सनसनाहट फैल गई थी और रात कटारीपुर के पासियों पर छिद्दा अहीर के गिरोह का आक्रमण हुआ। वहां शीघ्र पुलिस पहुंचने की संभावना नहीं थी इसलिए पूर्ण स्वतंत्रतापूर्वक हत्यायें, अनाचार और अत्याचार हुए। कटारीपुर के भूतपूर्व जमींदार ठाकुर रिपुदमनसिंह अपनी बन्दूक लेकर अपने घर के ऊपर वाले छज्जे पर खड़े थे। डाकू उधर ही से भागे। रिपुदमन ने गोली चलाई। एक की बांह घायल हुई और दूसरे ही क्षण रिपुदमन अपनी बन्दूक सहित छज्जे से

नीचे लाश बनकर गिर पड़ ।

मामला भारत व्यापी प्रचार पा गया। मुख्यमत्री गृहमत्री, राज्य गहमत्री और पुलिस वाला के चीटी दल सी भीड कस्बे और कटारीपुर म भर गइ। न छिद्दा अहीर और न पाचा युवक।

कस्बे स आठ कोस दूर लालपुर गाव की टूटी मस्जिद मे पाचा युवक बठ थ। सुहागी और सरसुतिया के परिवारा की हत्यायें उन्ह गुस्मे से भर रही थी। बिल्लू बाला, इतन बेगुनाह मारे गए पर वह हरामी का पिल्ला स्वतत्र कुमार अभी तक जीवित है। उस मारे बिना मुझे चन नहीं मिलगा।"

सत्तार बोला, मैं खुद भी यही सोच रहा था।'

हरसुख न कहा, 'जब तक स्वतत्र कुमार अण्डरग्राउण्ड रहेगा हम लाग कुछ न कर सकेंगे। और तब तक पुलिस हम गिरफ्तार भी कर चुकी होगी।

'एसी-तसी साला की। पुलिस की सात पुश्तें भी हमारा पता न पा सकेंगी। लेकिन ववलू साले की गद्दारी भी मैं नही भूलूगा। मुख म राम बगल म छुरी। चौहान बाला।

हरसुख बाला 'अरे यार, य लोग पूजीपति समाजवादी हैं पूजी पहले समाज बाद म। हम यदि कुछ करना ही है तो इनको पोषण करने वाली व्यवस्था का बदलना होगा। बात के प्रभाव से सब लोग कुछ क्षण स्तब्ध रह फिर रमश बाला यार खाने-पीने का क्या डौल लगेगा?'

गम्भीर मुद्रा म कुछ सोचत हुए बिल्लू ने एकाएक रमेश की ओर देखा और हस पडा। तुम्हारी इस यथार्थवादी समस्या पर विचार करना ही होगा। मैं समझता हू एक साइकिल बेच दी जाए। कम मे कम चार छ दिन ब्रड चने चाय और बीडिया मे गुजारा चल जाएगा।'

सत्तार बोला एक नहीं दो बिकेंगी। मैं रामगज के एक लोहार को जानता हू। एक दिन बातो बातो म ही अब्बा स सुना था कि वह कट्टे बनाता है और बचता है।

'अब माने मुश्किल म चालीस-पचास रुपये म तो य हमारी सेकेण्ड हैण्ड साइकिलें बिकेंगी। कट्टे क्या आसानी म आ जाएग?'

हरसुख की बात पर चौहान ने तड से उत्तर दिया बेच दो साली मर साइकिलें। कट्टा की सख्त जरूरत है। स्वतत्र कुमार की जान लिए बगर मुझे चन नहीं आएगा।

दूर पास का बहुत-सी बातें साथ लेने के बाद तीन साइकिलें ही बची गई एक राख ली गई।

आज यह खंडहर तो कल वह। शाम होते ही जगह बदल जाती है। जमाना को चाय पीते हुए चार दिन हो गए थे। बीड़िया भी खत्म हो चली थी। उनके टुकड़े बचाकर रख लिए जाते और फिर तलब के वक्त एक ही कश में वह तलब भी राख हो जाती। कट्टे तो आ गए मगर गोलियां के लिए पैसे कहा से आए। अभी तो निशाना सीखना है गोलियां छोड़ते वक्त हाथ का झटका बर्दाश्त करने की आदत डालनी है। रात में बित्तू साइकिल पर कस्बे के चक्कर लगाता किसी भगाम के दोस्त का दरवाजा खटखटाता और स्वतंत्र कुमार के लौट आने की खबर के सम्बन्ध में टोह लगाता था। एक दिन पता लगा कि स्वतंत्र कुमार शहर ही में है लेकिन अपनी हवेली से बाहर नही निकलता। चुन्नीलाल की हवेली का पुराना नक्काशीदार फाटक इतना विरूप हो गया था कि नये सिरे से जंगल दार फाटक लगाना पड़ा और उसके पीछे शटर लगाना पड़ा। जब तक फाटक सुव्यवस्थित न हुए तब तक आठ बंदूकधारी पुलिसमैनों की दामाद की तरह खातिरें होती रहीं। चुन्नीलाल की हवेली में घुसना मुश्किल था। कटारीपुर का गोदाम खाली हो चुका था और नई सरकार ने पुराने बलक पर पर्दा डालने के लिए गोदाम के खंडहरा में फिर मिट्टी कुटवाकर मास्टर प्लान की सड़क को कटारीपुर के आगे लालगंज और फूलियामऊ तक श्रमदान से बनवाने का लग्गा लगवा दिया।

रोज शरणस्थलियां बदलते हुए बित्तू और उसके साथी गुन्नारपुर की हद पर आ पहुंचे। अपने जिले से निकल चुके थे। यहां से कस्बे या राजधानी जाना अधिक श्रमसाध्य था। इन पाचों लोगों को लुकते छिपते और भागते अब बारह दिन बीत चुके थे। लइया चने या सत्तू सान-सान कर खाते हुए अब पाचों बोर हो उठे थे। चाय-बीड़ी की तलब भी सता-सता मारती थी। गुन्नारपुर के पास से ही रेल लाइन गुजरती थी। किनारे एक टूटा हुआ परित्यक्त रेलवे क्वाटर नई शरणस्थली की तरह ढूंढा गया। कोठरी का फर्श पक्का था मगर उसके दो कोनों पर बड़े-बड़े बिल नजर आ रहे थे। छोटी मोमबत्ती के सहारे मुआयना करते हुए जब बिलों पर नजर गई तो सत्तार बोला यार बाहर से मिट्टी के ढले लाकर इन्हें भर देना चाहिए। हो सकता है इन्हें कभी चूहों ने खोदा हो और अब सांप रहते हों कहकर सत्तार मोमबत्ती लिए हुए बाहर पड़े गुम्मों

के टूटे टुकड़े बटोरने लगा। बिल्लू यह ठिकाना देखने के बाद तुरंत ही साईकिल पर अपने कस्बे की ओर दौड़ पड़ा था। फुलियामऊ के छोड़े हुए मंदिर में आग की ऐसी लपटें उठ रही थी जैसे चूल्हा जल रहा हो। दो एक छायाएं भी शिवालय में इधर-उधर टहलती हुई दिखाई दी। बिल्लू की उत्सुकता बढ़ गई। शिवालय के चबूतरे से साइकिल टिकाकर सीढ़ियां चढ़ा। आड़ में छिपकर मंदिर के भीतर ताक झांक करने लगा। पीछे गर्दन पर सख्त हाथ पड़ा, 'कौन है बे?'

आवाज ने सारा भय दूर कर दिया। छिद्दा जी आप। मैं बिल्लू हूं।'

'अरे भया, खूब मिले।' छिद्दा की आवाज इतनी जोर की थी कि मूर्ति विहीन शिवालय के भीतर बैठे लोग उठकर बाहर आ गए। छिद्दा ने एक से कहा 'कन्नू।'

'हां दादा।

"चबूतरे के नीचे भया की साइकिल खड़ी है, उठाकर छिपा दे। आओ बिल्लू भया, अंदर आओ।' दोनों शिवालय के खंडहर में गए। बिल्लू को बैठाते हुए छिद्दा ने कहा, हम बड़े परेशान रहे कि तुम लोग आखिर कहां गब हुइ गए।'

बिल्लू ने सारी कथा कम में सुनाई।—कल रात वह भी इसी खंडहर शिवालय में छिपे थे। तीन साइकिलें बेच दी जिसमें दो कट्टे आए और कुछ चना चबेना इकट्ठा हुआ।'

कट्टे क्या खरीदे बिल्लू भया?

जिसके कारण इतना बड़ा हत्या काण्ड हो गया उस स्वतंत्र कुमार को अपने हाथों से मारूंगा छिद्दा जी। बिल्लू बड़े तैश से बोला।

छिद्दा ने उतनी ही ठण्डी आवाज में प्रश्न किया 'तो अब तक मारा क्यों नहीं?

'छः गोलियां हमारे पास है और परसों ही कस्बे से खबर लाया हूं कि अभी चुन्नी की हवेली पर आठ दस पुलिसमैनों का पहरा लगा है।

छिद्दा एक ठण्डी सांस छोड़कर बोला मैंने परन किया था बिल्लू भया कि चार दिन में साले बाप-बेटा को इस दुनिया से उठा दूंगा। लेकिन अभी तक जुगाड़ नहीं बैठा पाया। तुम लोगों में हौसला जरूर है मगर यह काम तुम्हारे बस का नहीं हम ही करेंगे।'

'हम क्यों नहीं कर सकते?'

'सेर की माद म घुसकर सर को मारना है। पहले निसानेबाजी सीख लेआ। कहा हैं तुम्हारे साथी ?'

"गुलनारपुर म एक उजड हुए रेलवे क्वाटर म रात का डेरा डाला है। अब तो घर स चालीस किलामीटर दूर हैं हम लोग। रोज राज कस्ब तक टोह लाने म भी अब मुश्किल हो गई है। कल हम लोगा ने इस गाव म पुलिस का दस्ता देखा था।'

छिद्दा हस पडा, 'अरे यार सब अपने ही आदमी पुलिस की वर्दी मे है। तुम चकमा खा गए। खर आज तो मजे से गरमागरम रोटी-दाल खाओ। तुम्हारे साथियो को भी बुलवाए लेता हू। जब तक चुन्नी और स्वतन्त्र कुमार मारे नही जाते तब तक तुम हमारे साथ ही रहो। खाओ पीओ और मौज करो।

छिद्दा के तीन साइकिलधारी साथी बिल्लू के मित्रा को लाने लिए गुलनारपुर चल पडे।

बारह

छिद्दा के दल के साथ दाल, रोटी बकरा माग और मलाई पत्ता अथ और दूध पीते हुए तीन दिन बीत गए। बीरापुर का जगल पास ही था। तीसरे पहर छिद्दा उन्हें अपने साथ ले जाता और निशानेबाजी सिखलाता था। उसके भेदिये कस्बे म दिन रात चुन्नी सेठ की हवेली पर बराबर निगाह रखते और टोह लेते रहते थे। ऊपर के छज्जे पर अकड कर सिगरेट पीते हुए स्वतन्त्र कुमार को मगू ने एक दिन देख लिया। हवेली म नगमरा नामक एक नौकर का अनाथ लडका काम करता था। मगू ने उसे परचा लिया था। पहली मजिल मे क्या है दूसरी और तीसरी म कौन रहता है यह सब ठिकाना भी लग गया। एक दिन थाने से टोह मिली कि भूतपूर्व मत्री महेशनाथ सिंह के साले का लडका इस्पेक्टर जगदेव सिंह आज शाम से अपनी टुकडी के साथ चुन्नी सेठ की खुली हवेली का पहरा देने जाएगा। सुनते ही छिद्दा के मन प्राणो म पख उग आए। टोह लगाई जगदेव की मुट्ठी गरम की, मत्री पक्ष की पराजय का बदला लेने के लिए जगदेव का सिंहत्व भी पैसा की गरमी से गरमा उठा। सब तय हो गया। छिद्दा का गिरोह रात के ग्यारह बजे पुलिस की वर्दियो म हवेली पर पहुचेगा और जगदेव का खुले आम यह खबर देगा कि अभी अभी यहा छिद्दा के धावा बोलने की खबर मिली है। जगदेव सिंह थाने का जाली रवन्ना पढकर उन्हें भीतर जाने देगा। लूट के माल म भी पुलिस की हिस्सेदारी तय हो गई। एक तो वर्दिया अधिक नहीं थीं दूसरे नौसिखिये बाबुओ को लेकर जाना उचित नहीं था। इसलिए छिद्दा ने बिल्लू और उसके साथियो को वहीं रहने के लिए कहा 'दो ढाई बजे तलक लौट आएगे। फिर रातोरात अड्डा बदलना है।'

काम सब कायदे से हुए लेकिन बाजी उलट गई। राजधानी से आए हुए जासूसो को समय से कुछ पहले ही टोह लग गई थी। नायब पुलिस कप्तान खुद पुलिस के एक बडे दल का नेतृत्व करते हुए चुन्नी की कोठी

की ओर चल पड़े। छिद्दा का गिरोह पहुचा। हवेली के भीतर भी चला गया। तब तक नायब कप्तान अपने दल के साथ पहुच गए। दसों पहरेदारो से कुछ लोगो ने राइफले छीनी और सीधे भीतर चले गए। छिद्दा का आधा गिरोह ऊपर की सादियों पर चढ चुका था आधा नीचे था। पुलिस की भारी भीड को अन्दर आते देखकर एक चिल्लाया होसियार।' देशी बन्दूक भी दाग दी। पुलिस ने भी फायरिंग शुरू कर दी। नीचे वाले पाचो डाकू भुन गए। नायब कप्तान साहब का आडर गरजा 'छिद्दा तुम्हारा खेल खत्म हो चुका है सरेण्डर करो।

ऊपर की मंजिल के बन्द दरवाजे पर अभी एक भी कुल्हाड़ा न पड सका था और नीचे आगन में पुलिस भरी हुई थी और छिद्दा के साथियो की लाशें पडी थी। सब डाकू सीढ़ियो से उतरने लगे परन्तु छिद्दा ने अपने आपको सरेण्डर करने के बजाय कनपटी पर पिस्तौल रखकर मौत के हवाले कर दिया। ऊपर के साथ हुए लोग पहले ही जाग उठे थे। आसपास के महल्लो के घरो में भी जाग हो चुकी थी। बन्द घरो की खुली खिडकियो में क्या हुआ क्या हुआ की कौआ रोर मची थी। थोडी ही देर में चारो ओर खबर फैल गई कि चन्नीलाल सेठ की हवेली में डाका पडा किन्तु डाकू पकडे गए और छिद्दा मारा गया। चक्रपाणि चौबे की मोपेड मोटर साइकिल भी अपने नए मालिक के रिश्तेदार की हवेली पर जा पहुची।

दूसरे दिन दैनिक आजकल में इस काण्ड की बडी विस्तार से चर्चा की गई थी। गद्दार पुलिसमैनो में एक भूतपूर्व मंत्री का रिश्तेदार भी पकडा गया है। उधर सवेरा होने पर बिल्लू और उसके साथी बडे परेशान थे। छिद्दा तो रात ही में आने को कह गया था। क्या हुआ जो ये लोग अब तक नहीं आ सके? खाने पीने का सामान कुछ कपडे लत्ते के ट्रक अभी वहीं पडे थे। तय हुआ कि बाकी लोग बीरापुर के जगल में पोखर के पास जाकर वहीं अपना पडाव डालें। खाने पीने का थोडा सा सामान साथ लेकर तीन साथी बीरापुर गए और बिल्लू साइकिल पर छछूंदर की तरह छिपता हुआ कस्बे की ओर चला। रौनकपुर गाव में पहुचते ही खबर लग गई कि छिद्दा और उसके कई साथी मर गए, कुछ पकडाई में भी आए हैं। कस्बे में बडा हल्ला मचा हुआ है। थाने के सामने छिद्दा और उसके साथियो की प्रदर्शित लाशो को देखने के लिए भीड उमड पडी है। एक दूसरे से कह रहा था, चलो हमहू देखि आई जिनके नाम सुनि के पवन कांपि जात रहै ऊ सार कैसे मरे चलो देखि आई।

'हम न जाब भाई' पाच कोस धरती नापो और मरे मुरदन क मुह निहारो। ई ठनुआई हमत न होई।

बिल्लू का मन भावबुद्धि विचार सबमे एकाएक सूना हो गया। साइकिल पगडण्डी की लीक-लीक आगे छोडती चली गई। तहसीलगंज की भीड को देखकर होश आया कि आज बाजार का दिन है। वहीं एक होटल म उसने रंगीन आजकल खरीदा। सन्नाटे म बठकर पढा। मुह स एक आह निकल गई। कुछ क्षण स्तब्धावस्था म रहे फिर उसकी साइकिल सनसनाती हुई बीरापुर की ओर दौड चली।

उस समय सूरज सिर पर आ पहुचा था। जगल म पाखर के पास चारो साथी मिल गए। रमश खिचडी खा रहा था। सत्तार चौहान और हरसुख खाना खाकर आराम स लेटे लेटे सिगरटें पी रहे थे।

बिल्लू को देखते ही सत्तार न कहा अमा आ गए चडडागुलखरू ? अमा क्या हुआ, चहरे का बल्ब फ्यूज क्यों हो गया है !

बिल्लू न साइकिल एक किनारे फेंकी। आजकल उनके सामने फेंका और हँडिया म बची-खुची खिचडी को पत्तल पर परोस बगैर ही गपागप खाने लगा।

उधर सत्तार और हरसुख की नजरें आजकल पर जमी हुई थीं। कुख्यात डकत छिद्दा ने आत्महत्या कर ली —शीर्षक सुनकर रमेश खात-खाते चौंक पडा। पत्तल छोडकर खबर पढन क लिए उठन ही लगा था कि बिल्लू न बाह पकडकर फिर स बठा दिया। 'पहले खाना खाओ बाद म सोचा जाएगा। सत्तार जोर जोर स अखबार पढने लगा। सब सुनते रहे। खबर के नीचे सम्पादकीय टिप्पणी थी कि डकतों के चित्र कल के अक म छाप जाएगे। चुन्नीलाल सेठ को पुण्यात्मा लिखा गया था। सत्तार न अखबार एक ओर फेंक दिया और बुझी सिगरेट फिर से जलाई। खाकर हाथ धोने के बाद बिल्लू और रमश भी पास आकर बठ गए। रमेश ने तो फिर स अखबार उठा लिया लेकिन बिल्लू अब्दुल सत्तार की डिबिया स सिगरेट निकालकर डिबिया पर ठक ठक करता हुआ मुस्कराता हुआ बोला साले डाकुओ का माल लूट लाए हो। कितनी डिबिया ह तुम्हारी जेब म ?

अमा उनकी फिक्र न करो। यह बतलाओ कि अब हम लोग क्या करेंगे ? हमारा ठिकाना कहा लगेगा ? चौहान ने परेशानी भरे स्वर म पूछा।

हा यार यही तो समस्या है। न खुदा ही मिला न विसाल सनम है।

'पुलिस के हाथो से आखिर हम लोग कहा तक बच सकेंगे। चलो, लट अस सरेण्डर। जो सजा मिलगी भुगत लेंग। आग दखा जाएगा।'

हरमुख की बात पर चौहान जोना क्या देखा जाएगा? हमारा फ्यूचर ही क्या रहा! बेगुनाह बन घूम रह है। भाग्य न कहा ला पटका। जिस साल की वजह न हमारा फ्यूचर अंधेरे म डूब गया है जिसन सुहागी और सरस्वती सी भली आत्माओ का नाश किया जिसके कारण अहीरो पासियो की बस्तिया उजडी वहा मूछो पर ताव दिए शान स घूम रहा है और हम निरपराध लोग सत्य का पक्ष लेने के कारण ही इधर उधर मारे मारे डाल रहे हैं। इन सालो का सत्यानाश हो।

सत्यानाश ही नही साढ सत्यानाश हो साला का। पर यह बतलाओ कि अब हमारा फ्यूचर प्रोग्राम क्या होना चाहिए?

हरमुख बोला छात्रो को सगठित करेंग।

इतना आसान नहा है हरमुख। छात्र स्वय राजनीतिक दलो की गाटिया बने हुए हैं। कौन साथ दगा किसपर भरोसा किया जाए? फिर यूनिवर्सिटी साली बन्द कर दी गई है। लडके अपने अपन घरो म भगा दिए गए ह। हास्टल खाली करा लिए गए हैं। यह देखो आज ही के पेपर म तो यह खबर भी है।'

बिल्लू सब सुनता रहा। सिगरेट फूकता रहा फिर एक गहरा कश खीचकर सिगरेट का टु ना दूर फेंकत हुए बोला घबरा मत आखिरी दाव फेंकने जाता हू। या तो आज स कल के भीतर हम आजाद हो जाएगे या फिर जलखान म ही रोटी दाल का प्रब ध हो जाएगा।

क्या कराग?

बाद म बतलाऊगा। तुम लोग भी यहा से खिसको। गुलनारपुर म पटरी के सहारे सहारे तुम आज रात तक रसूलपुर पहुच जाओग। वहा छिपन का ठिकाना कर लना। मैं जा रहा हू।

कहा?

बाद म बतलाऊगा। बिल्लू न साइकिल उठाइ और चल पडा।

पुलिस की नजरो से बचन के लिए छछून्दर चाल स छिप छिपकर चलत हुए राजधानी पहुचना इतना दुष्कर काय था कि बिल्लू के दातो पसीने आ गए। गुलनारपुर स राजधानी तक की दूरी सीधे सडक स भी

लगभग चालीस कि० मी० थी किन्तु इस टेम्पो मद्धी चाल म आठ कि० मी० और बढ़ गई। राजधानी पहुंचत पहुंचत शाम हो गई। नम्बर वाईस चौराम्बा रोड पहुंच गया। राज्य गृहमंत्री माननीय उत्तमसिंह राठौर उप बबलू जी की कोठी पर सन्तरियो का पहरा था। बिल्लू भीतर कस जाए

फिर जी कड़ा किया, सोचा हर सिपाही मुझ थोड ही जानता है जो पकड जान का डर हो। मगर बबलू हो यदि अपन मन्त्रीपन क रौब म ही मात करें? ऊंह, करेंगे भी तो जेल भेजन स अधिक क्या कर सकेंगे। इस फरारी जीवन स तो जल ही भली। हिम्मत कर जा बिल्लू शान स घुस जा। जब म रखा एक कागज निकालकर उसपर अपन नाम क बजाय लिखा—' मनापी अनुज बबलू भाई की सवा म काम अर्जेंट। पर्ची लेकर फाटक पर गया। अकडकर पूछा माननीय मंत्री जी सचिवालय से आ गए ?'

सिपाही अकडकर बोला क्या काम है?'

मैं उनक घर स आया हू। उन्हीस काम है।

माननीय मंत्री जी क परवान की सन्तरी न दफ्तर वाल कमर म भेज दिया। अब निजी सचिव महोदय अकडे कहा 'माननीय कुवर साहब इस समय बहुत व्यस्त हैं। आपको उनस क्या काम है?

बिल्लू को क्रोध तो आया किन्तु उस दबाकर मुस्कराते हुए कहा, मेरी यह पर्ची उन तक पहुंचा दें और फिर मुझ पर रौब दिखाए।

निजी सचिव महोदय न एक बार घूरकर बिल्लू की तरफ देखा। पर्ची रख ली और काम म लग गया। बिल्लू को बुरा लगा। तनिक तेज स्वर म बोला आप जितना भी विलम्ब करेंगे उतना ही माननीय मंत्री जी आपक ऊपर नाराज होंग याद रखिए।'

निजी सचिव महोदय भुनभुनाते हुए उठे। पर्ची लेकर ड्राइंग रूम म चले गए। पर्ची देखकर कुवर साहब चौंक। फिर कहा "पीछे वाले कमर म ले जाकर उन्ह आराम स बिठा दो। किसी नौकर स चाय वगैरह द आन क लिए कह दना। मैं पन्द्रह-बीस मिनट म आता हू यह उनस कह दना।'

लगभग आधे घण्टे क बाद बबलू आए।

'तुम !'

बिल्लू न उठकर पर छुए और कहा अरेस्ट कराना चाह तो करा सकत हैं बबल भया।

'क्या बकते हो ? आराम से बैठो। यहां तुम्हें कोई अरेस्ट नहीं कर सकता लेकिन तुम लोगों ने यह क्या तमाशा बना रखा है भाई ?"

'तमाशे की बात तो चुन्नी या स्वतंत्र कुमार से पूछनी चाहिए बबलू भैया। जिन्होंने हमें फरार बनाकर इतने दिनों में तरह-तरह की यातनाएं भोगवा दी।"

बबलू राठौर ने कोई उत्तर न दिया। जेब से एक सिगरेट निकाली, उसे होंठों में दबाकर फिर पूछा खाना वगैरह खा चुके हो कि नहीं ?"

जी कल रात अवश्य खाया था। सुबह एक प्याला चाय पीकर चला था। रास्ते में मानीपुर आकर एक प्याला और पिया और अब भूख और थकान के मारे

अरे मंगरु' माननीय मंत्री जी ने आवाज़ दी, भैया के लिए नाश्ता लाओ। और देखो मेरी एक बनियान और लुंगी भी इनके वास्ते लाकर दो। (बिल्लू से) तुम पहले नहा धोकर फ्रेश हो जाओ तब बातें करेंगे '

कहकर माननीय राज्य गृह मंत्री उठ खड़े हुए। दरवाज़े तक पहुंच कर एक बार फिर मुड़, पूछा 'संतोषी कब तक लौट रहे हैं ?

बिल्लू ने हंसकर कहा आप बड़े गलत आदमी से पूछ रहे हैं बबलू भैया। बबलू भैया मुस्कराकर चले गए।

हाथ मुंह धोके कपड़े बदले चाय पी नाश्ता किया और सिगरेट मुंह में दबाकर भविष्य की चिंता को धुए की तरह अपनी मन दृष्टि के सामने फैलाने लगा। थोड़ी देर में भाभी साहिबा आई। उनके हाथों में खादी की एक रेशमी बुश्शर्ट और पतलून थी। बिल्लू अदब से खड़ा हो गया। पांव छुए। भाभी ने कहा कैसे हैं बिल्लू लाला ?'

फिलहाल तो फरार हूं और माननीय राज्य गृहमंत्री के घर में इस समय छिपा हुआ हूं।

सुनकर भाभी मुस्कराई। कहा, अब यहां से आज़ाद होकर ही जाएंगे आप। मैंने आपके भैया को अल्टीमेटम दे दिया है। ये कपड़े रख जाती हूं। अपने पुराने कपड़े दे दीजिए लाला।

'क्यों ?

'देवरों की क्यों का जवाब भाभियां नहीं दिया करती। आपके नाप के कपड़े मंगवाने हैं। संतोषी भैया कब आएंगे ?'

जो जवाब मैंने अभी थोड़ी देर पहले बबलू भैया को दिया था वही आपको भी देने से काम चल जाएगा ?'

भाभी कुर्सी पर बठ गइ। कहा, मैं समझ गई आप यही कहेंग कि मैं क्या जानू मैं तो फरार हू।'

भाभी की हल्की हसी म दवर की मुस्कराहट घुल गई। श्रीमती उत्तम सिंह ने कुछ रुककर फिर कहा 'उस औरत के मार जान का मुझ भी बहुत दुख है। सी० आई० डी० वाले जाच भी कर रहे है।'

जाच करके भी क्या होगा भाभी ? अपराधी इतना शक्तिशाली है कि कभी पकडा न जा सकेगा।"

"वह पकडा जाएगा। मैंने आपक भया स बहुत पहले ही यह साफ साफ कह दिया है कि स्त्रिया के लिए मैं भी न्याय मागूगी।

'मैं जानता हू कि भया पर आपका कितना प्रभाव है। मगर म यह भी जानता हू कि बडे राजनेताआ का प्रभाव आपस भी अधिक शक्तिशाली है।"

भाभी चुप हा गइ। एक ठडी सास छोडी फिर कहा आपके भया घण्टे भर के लिए बाहर गए है। आप कहगे तो मै आपका खाना पहले लगवा दूगी।

मुझे जल्दी नही है। साथ ही खाएग। भया स बात करनी है। हो सक ता मुझे पढने के लिए काई किताब या पत्र पत्रिका भिजवा दीजिए।"

भैया लगभग साढे नौ बजे आए। दस मिनट बाद बिल्लू के कमरे म कदम रखा। कहा तुमको काफी दर भूखे रहना पडा।

मुझे रोटी से ज्यादा आपसे बातें करने की भूख सता रही है।

वह भूख भी शात होगी। चला पहले खाना खा लें। बडी भूख लगी है। आज सब बाहर वाल टाल दिए गए हैं। बस मैं तुम और तुम्हारी भाभी।

'तब तो लुगी-बनियान की इस राजसी वेशभूषा म चलूगा।'

भोजन के समय बात श्रीमती बबलू ने ही चलाई। पूछा 'एक भाई गृहमत्री और दूसरा अपराधी। अच्छा व्यग्य है। मैं आपक इन भयाजी स भी कह चुकी हू कि अगर सतोषी भैया न हाते तो यह इलक्शन जीत न सकते थे।

बबलू बाल, मैं इससे इन्कार नही करता और मुझ सचमुच बहुत दु ख है कि तुम लोगा के खिलाफ वारण्ट जारी करवाना पडा। मैं शम के मारे गुरसरन चाचा को मुह नही दिखा सकता।

खाते-खाते बिल्लू बोला 'भाभी की स्पष्टवादिता का अनुकरण

उनका दवर भी करेगा, बबलू भया। आप कल मुझे छुड़वाएंगे और परसों गिरफ्तार करवा लेंगे। राजनीति भला किसकी सगी होती है।'

बबलू कुछ न बोले। बिल्लू ने बात आगे बढ़ाई, पहले सिद्धांत और उद्देश्य स्वार्थ थे अब सत्ता और अर्थ स्वार्थ है। पहले इमर्जेंसी का समय देखा फिर चार घोड़ों वाली जनताई बग्घी की सवारी देखी अब यह समाजवादी लोकतंत्र भी देख रहा हूं। समय की हवा का हर झोंका ज़हर भरा है। जान के लिए कहीं से भी आस्था नहीं मिलती।'

बबलू चुप रहे। श्रीमती बबलू ने एक बार पति की ओर देखा कि शायद कुछ कहें पर वे मौन निवाला तोड़ते रहे। बिल्लू अपने जोश में था, कहता ही चला गया आप ज़िंदगी की असलियत को झूठे सच्चे दलगत नारों से बहलाकर हमको यानी सारे देश को कब तक धोखा देते रहेंगे ?

अब बबलू मंत्री तेज हुए। कहा खाली बातों से काम नहीं चलेगा बिल्लू। हमको अस्तित्व की रक्षा के लिए कभी कभी झूठ का भी सहारा लेना पड़ता है। लेकिन वह झूठ झूठ नहीं नीति होती है। क्या समझते हो कि हमारी ही पार्टी अकेली झूठी है और दूसरे सच्चे हैं ?

मैंने यह कभी नहीं कहा बल्कि मैं तो कह चुका मुझे आज देश के किसी राजनीतिक दल पर विश्वास नहीं। सबकी राजनीति आज जनता का दुःख भुनाने पर आमादा है उन्हें दूर करने के लिए कोई भी प्रयत्नशील नहीं। दुग्धालय के साइन बोर्ड सामने टांग कर सभी ने अपने अपने शराबखाने खोल रखे हैं।

तो इसका सारा दोष तुम केवल मेरी ही पार्टी पर क्यों थोपते हो ? क्या (तुम सोचते हो कि) दूसरी पार्टियां चोर डकैत और ऐसी ही बुरी संगतों से जुड़कर अपनी रोटी सेंक करें और हम सत्यवादी हरिश्चन्द्र बनकर त्याग तपस्या की ढोलक बजाएं ? मैं पूछता हूं कि दबे-कुचले वर्ग की औरतों पर यह बलात्कार कब नहीं हुए ? यह अन्याय क्या आज ही हो रहा है ? दरअसल दूसरी पार्टियां बात बात पर पब्लिसिटी कर करके हमारी इमेज बिगाड़ रहे हैं।' जब बबलू मंत्री जोश में देर तक बोलते ही चले गए तब बिल्लू का जोश भी गमाया और जल्दी जल्दी निवाले निगलने लगा। गोया प्लेट में परोसे हुए सारे भ्रष्टाचार की सफाई कर रहा हो। जब वह चुप हुए तो चटनी चाटकर कुंवरानी साहबा की तरफ देखकर बोला

' भाभी आप ईश्वर को मानती हैं या नहीं ?'

क्या मैं हिन्दू नहीं हूं जो न मानूंगी ?'

ईश्वर क्वल हिदुआ का ही नही सवका है ?"

' बिल्कुल ठीक मगर तुम कहना क्या चाहत हो ? '

क्वल इतना हो कि हमारी सस्कारगत मायताओं क अनुसार हम किए का दण्ड भुगतना पडता है। सरसुतिया और सुहागी की आत्माए आप स अपना हिसाब भी मागेंगी। उह किसी पार्टी स मतलब नहीं। वह आपस पूछेंगे कि माननीय मत्री जी, आपके चुनाव क्षेत्र म दो निरपराधा की जानें क्यो ली गइ ?"

कुवरानी साहबा की ठकुराती अहता सतीत्व की अग्निमणि का मुकुट धारण कर बोल उठी बिल्लू लाला, य तो नता आदमी ह, जवाब न देंगे मगर मैं पद्रह-बीस हजार खच करने को तयार हू। आप एक अच्छा सा स्मारक बनवाइए सरसुतिया सुहागी का। मैं इनकी कमाई स या पतृक सम्पत्ति स एक कानी कौडी भी न लूगी। मरे बाप ने मुझको बहुत कुछ दे रखा है।'

वकलू पत्नी का मुह दखत रह फिर उठे पत्नी की कुर्सी क पास पहुच, एक घुटना टक कर दोनो जूठे हाथ ऊपर उठाकर हथेलिया क सिर जोड दिए पाहिमाम देवी जी, शरण म आए हुए की रक्षा करो।'

कुवरानीजी मान स हस पडी, हाथ स उनकी बाह को हल्का-सा धक्का दकर कुर्सी स उठत हुए कहा, शरणार्थी को अपनी नेकनीयती का सबूत दना होगा।

मैं बिना माग ही यह वचन दता हू कि कल तुम्हार दवर और उसके साथिया का वारण्ट वापस ल लिया जाएगा।'

' इसक साथ ही आपको स्मारक के लिए जमीन भी अलाट करवानी होगी।

'इसका उपाय भी बतलाता हू। आजाद होत ही बिल्लू यह घोषणा करेगा कि हम प्रेमी युगल का स्मारक बनवाएग। दूसरे दिन फिर यह घोषणा भी इसी की तरफ स प्रसारित की जाएगी कि श्रीमती मजुला उत्तमसिंह न स्मारक बनवाने के लिए निजी रूप स पूरा खच दन की उदारता दिखलाई है।

बिल्लू मुस्कराकर बोला 'और यह भी घोषित कर दू कि श्रीमती सिंह स्मारक म अपन मायक का पसा लगाएगी।"

तीनों हस पड। बकलू बोल, अरे इनके मायक का पसा भी तो मेरी ससुराल का ही है।' जब माननीय मत्रीजी हाथ धो रह थ तब हाथ धोने

के लिए पीछे खडे बिल्लू ने कहा 'यह स्मारक आपके भावी इलेक्शन के लिए मुनाफा बन जाएगा। पालिटिशियन हर काम में मुनाफा देख लेता है।"

बबलू दाश बेसिन से हटकर हैंगर पर लटका तौलिया उतारते हुए मुस्कराए फिर कुछ रुककर गंभीर स्वर में कहा 'राजनीति वेश्या का प्रेम नाटक भर हो गई है लेकिन भाई—अब तो मेरी गति सांप छछूंदर केरी। जाओ आराम करो। तुम्हारे दूसरे साथी इस समय कहां होंगे ?"

मैं उनसे कह के चला था कि रसूलपुर में कहीं रात बिताना। मैं सोचता हूं इसी समय चला जाऊं।'

बबलू मंत्री से अधिक बडे भाइ के रौब से बोले जाइए आराम कीजिए। सुबह पांच बजे मेरी कार तुम्हें रसूलपुर पहुंचा देगी। दो घण्टे वहीं रुककर आप लोग चलिएगा। तब तक वारण्ट वापस ले लिए जाएंगे।

पडे पडे बिल्लू सोचता रहा क्या यही है स्वतंत्र भारत का मन्तव्य। हवेली की दीवालें नींव से लेकर ऊपर तक चिटक चुकी है। दरारें बढ़ती जा रही है। इस खस्ता इमारत को पूरी तरह से गिराकर नई बनाने का काम तो नहीं हो रहा बस उन दरारों पर हल्का पलस्तर चढाकर ढांकने का प्रयत्न किया जा रहा है। राजनीति का सत्य चुनाव के वादों तक सीमित हो गया है—चोर से हो और शाह से भी हो। तुम अपना स्वार्थ पूरा करो और मैं अपना। क्या यही है स्वस्थ समाज के निर्माण का स्वरूप। *आखिर कहां जाएगा यह भारतीय समाज ? क्या हालत होगी* हमारी ? सोचते सोचते बिल्लू के सामने एक विराट शून्य समा गया। शून्य में भी किसी न किसी रूप में प्राण हलचल करते ही रहते हैं किन्तु यह शून्य तो लाशों से भरा है। कहां जाएं क्या करें ? आज़ाद हुए पर भविष्य के जटिल प्रश्न जाल में कैद हो गए

पीडा भरी चिन्ताओं की सूली पर चढे चढे ही नींद न जाने कब आ गइ।

तेरह

बिल्लू और उसके साथियों के फरार हो जाने से गुरसरन बाबू दुखी तो बहुत थे किन्तु उस दुख को मिटाने के उपाय भी निरंतर करते ही रहे। अपनी पीडा की आग पर वे अपनी दफ्तरी राजनीति की हंडिया चढ़ाकर उसीको पकाने में दत्तचित्त हो गए। वह और रिपोर्टर चक्रपाणि, हल्के अफ्सर और उनके गुर्गों के पीछे हाथ धोकर पड़े हुए थे। सुनन्दा तो पहले ही उनकी शरणागत हो गई थी। उसके पति भगत जी० लाल जी उर्फ श्री घूरेलाल जी अब छुटकन्नू के दफ्तर में काम करते हैं। सुनन्दा सतापी के साथ विदेश में है। जी० लाल घर में बच्चे पालते हैं और दफ्तर में कबीर की साखियां सुनाते हैं। कल रात जब बिल्लू बबलू की काठी में था तब भगत घूरेलाल जी ने गुरसरन बाबू के दरवाजे की कुण्डी खटखटाई, 'बाबू साहब—बाबू साहेब।

गुरसरन बाबू की आंख अभी थोडी देर पहले ही लगी थी कि पत्नी ने जगा दिया,' देखो कौन आया है?'

गुरसरन बाबू नीचे उतरकर बैठक के दरवाजे के पास आए पूछा, कौन है?'

'मैं हूं बाबू साहब, जी० लाल।'

लाइट खुली दरवाजा खुला जी० लाल भीतर आए और आते ही गुरसरन बाबू के चरणों पर लोट गए। रोनी आवाज में कहा, मेरे प्राण बचाइए बाबू साहब।

'क्या क्या क्या हुआ, क्या हुआ। भगत जी बोलो तो।'

उंगली से आंखें पोंछते हुए घूरेलाल बोले क्या कहूं बाबू साहब, कुछ कहा नहीं जाता। बस सतगुरु साईं के सबद याद आ रहे हैं कि

गूंगा होइगा बावला बहरा होइगा कान।
पावन तें पंगुल भया गोयल मारा बान।

अब मैं बच नहीं पाऊंगा बाबू साहब। अब मुझे कोई बचाय नहीं सकता,

आप ही मेरे सतगुर धन हो शायद मेरे और मेरे बच्चा के प्रान बच जाए।'

गुरसरन बाबू ने हाकिमाना रौब से जी० लाल का यह बावलापन रोका कहा पहले बात बतलाओ जी। साखिया बाद म सुन लूगा। गोयल ने क्या किया ?'

जर अभी अभी बसी आया रहा।

कौन बशी ?

वह छीपी टोले का गुण्डा है हुजूर। डाक्टर गायल ने उसे अभी-अभी भेजा था। वह गया है कि हाथ पर तोड के धर देंगे घर म आग लगाय देंगे। बच्चा को भून भून के क ब क बाब बनाय देंगे। अरे मेरा क्या होयगा नाथ ?'

'बच्चा की देखभाल के लिए किसको छोड आए हो ?

किसका छोड आता सरकार। लडकी से कह आया हू कि दरवाजे म ताला जडके बठना मैं आपको खबर दके आता हू। चलके पुलिस म रिपोट लिखवाय दीजिये सरकार मेरी तो थाने म कोइ सुनेगा नही कबिरा सिरजन हार बिनु मेरा हितू न कोय अब आप ही बचाय सक्त हैं सरकार।'

गुरसरन बाबू कुछ सोचकर बोले चलो पहल चक्करपानी चौबे के घर चलते है। उसको साथ लेकर थाने चलेंगे।

चक्रपाणि चौबे की कृपा से और दस रुपय के नोट की बदौलत थाने म गोयल के खिलाफ जी० लाल की रिपोट दज हो गई। यही नही दूसरे दिन सवेरे ही आजकल म प्रकाशित होने लायक एक उम्दा खबर भी बन गई। गुरसरन बाबू दनिक 'आजकल' की एक प्रति जेब म डालकर लखनऊ चल गए। शिक्षामत्री के पी० ए० जगदम्बा सहाय उनके सगे फुफेर भाई के दामाद है, उनसे स्वास्थ्य सचिव के पी० ए० की कुछ रिश्तदारी है। उनसे उन्ह फोन करवा के डाक्टर गोयल की फाइल पर होने वाली काय वाही के सम्बन्ध म पूछताछ की कहा कि हमारे अकिल इन लॉ बाबू गुरसरन लाल तुम्हार पास आ रहे है।

वहा स गुरसरन बाबू स्वास्थ्य विभाग पहुचे जेब म एक डिब्बी सिगरेट और बनारसी पान वाले की दूकान से आठ पाना की पुडिया अपने प्लास्टिक के ब्रीफकेस म रखकर लाए। जगदम्बा सहाय के रिश्तदार यानी स्वास्थ्य सचिव के पी० ए० साहब भी गुरसरन बाबू के नामरासी थ। अतर केवल

इतना ही था कि वे अपना नाम शुद्ध गुरशरण वर्मा लिखते थे और कहते थे। गुरसरन बाबू ने गुरशरण बाबू को पहले पानों की पुड़िया खोलकर पेश की। बात आगे बढ़ी। धीरे धीरे पता लगा कि गुरशरण जी गुरसरन बाबू के बड़े चिरंजीव के सगे साढ़ू हैं। उनके बड़े दामाद से भी उनका संबंध निकल आया। अब बात बन गई। गुरशरण जी गुरसरन के बेटे बन गए। गुरसरन बाबू डाक्टर गोयल और नौबतराय के विरुद्ध चार्जशीट का मसौदा बनाकर लाए थे। गुरशरण वर्मा ने उसे देखा और सहमति प्रकट की। मसौदा कुछ सुधारों के बाद टाइप हुआ। कस्बे की नगरपालिका के प्रशासक के नाम स्वास्थ्य सचिव का आदेश हो गया कि डाक्टर गोयल और नौबत-राय को निलंबित कर दिया जाए। पोस्ट किए जाने वाले पत्रों की सूची में प्रशासक के नाम सचिव का आदेश पत्र रजिस्टर करवा के गुरसरन बाबू ने उस लिफाफे को अपने ब्रीफकेस में रखा और खुशी-खुशी घर लौट आए।

घर में खुशियों के फौवारे छूट रहे थे। उसके छोटे तो अपनी गली में घुसते ही उनपर पड़ने लगे थे। कुण्डी खटखटाई तो मिन्टू ही द्वार खोलने आया। देखकर बाबू जी की बाछें खिल गईं। बेटे ने पाँव छुए। 'मम्मी' और 'पापा' ने एक दूसरे को उतनी आनंद और गदगद नेह भरी आँखों से देखा कि गुरसरन पापा निछावर हो गए। बेटे से सब बातें सुनीं फिर मलाप में बात ''आज मेरी बड़ी खुशी का दिन है। लो यह सिगरेट का पाकिट तुम्हीं रख लो हम तो पीते नहीं। स्वास्थ्य विभाग में गए थे किन्तु वहां पानों से ही काम चल गया। कल साले गोयल और नौबतराय का पत्ता साफ हो जाएगा। इतने में बिल्लू की मुक्ति पर उसे बधाई देने के लिए कुछ और लोग आ गए। बात खुशी के दूसरे रंगों में बह गई।

दूसरे दिन सवेरे दस बजे ही गुरसरन बाबू प्रशासक के दफ्तर पहुंचे। उनके पी० ए० चन्द्रप्रकाश अग्रवाल ने बड़ी आवभगत की, पूछा 'कैसे कष्ट किया, बाबू जी ?

'अरे भाई कस्ट-वस्ट क्या समझ लो साधन सर्विस ही है। कल राजधानी गया था वहां हेल्थ सक्रेटरी के पी० ए० हमारे एक नामरासी हैं कुछ रिश्तेदारी भी निकल आई। कहने लगे जाड़स हो गए हैं पालन करने वाला हूं। मैं ने कहा डिस्पैच रजिस्टर पर चढ़वा कर मुझ ही दे दीजिए, कल सवेरे हो पहुंचा दूंगा सो यह ले आया हूं। कहकर ब्रीफकेस से एक चिट्ठी और पानों की पुड़िया निकालकर मेज पर रख दी। चन्द्र

प्रकाश मुस्कराए पान की पुडिया खोलते हुए कहा, मेरी बेअदबी क्षमा कीजिए बाबजी। दरअसल आपको तो गुरुजी कहना चाहिए और हम सब लागा का गुरमरन। चन्द्रप्रकाश ठहाका लगाकर पान मुह म रखने लगे। गुरमरन बाबू मुस्कराए।

ब्रीफकेस म हाथ डालकर एक और कागज निकाला और उसे चन्द्र प्रकाश के सामन रखते हुए कहा ड्राफ्ट बनाके ले आया हू। देख लो और टाइप करवा के अभी प्रशासक महोदय से हस्ताक्षर करवा लो जिससे लच के पहले ही गोयल और साले नौबतराय का मुह काला हो जाए। गोयल से चार्ज लेने वाले का नाम मैंने छोड दिया है। अपने किसी भरोसे के आदमी को गोयल स चार्ज लेने के लिए भेजना। एसा जो साले की थोडी बे आबरुई भी कर। साले ने मेरी आत्मा को बहुत बहुत सताया है। इसे कौडी का तीन बनाना है। यहा भी सब काम खत्म किया फिर चक्रपाणि के घर फोन मिलाया। सयाग से वह मिल भी गए कहा अरे भाइ चौबे जी तुम्हारे अखबार के लिए एक ताजा खबर गोयल सस्पण्ड हो गए हैं और नौबतराय एस्टेब्लिशमेण्ट क्लक भी। हेल्थ सेक्रटरी ने लिखा है कि भ्रष्टाचारिया का कडी से कडी सजा मिलनी चाहिए। प्रशासक के दफ्तर स उतरकर गुरमरन बाबू नाचे अपने पुराने दफ्तर म आए। दफ्तर म एस० डी० शर्मा और मानस महोदधि पडित रामखेलावन मिश्र बठे बतिया रहे थे। डाक्टर कुलश्रेष्ठ स्क्रेनो की मशीन भी खटखटा रही थी। गुरसरन बाबू के दफ्तर म घुसत ही आइए-आइए की धूम मच गई। वे मानस महोदधि के पास ही कुर्सी पर बठ गए। मानस महोदधि की जाघ पर थपकी दकर पूछा और सुनाइए पण्डित जी आज आप सबेरे सबेरे दफ्तर कसे आ गए?

एमा है बाबू जी कि मैं आज तीन राज से छुट्टी पर हू। कल और परसा कनकपुर म हमारा प्रवचन था सो वहा गए थे। रुवर आए ता पता चला कि शर्मा जी की बबी कल शाम जब स्कूल स आ रही थी तब स्कूटर स टक्कर लग गई। मैंने सोचा कि हाल चाल ले आव।

अर राम राम शर्मा जी अब क्या हाल है उसका कितनी बडा है बेबी?

शर्माजी बाल चिन्ता की कोई बात नही बाबूजी भगवान ने बचा लिया। झटक स दाहिन कधे की हड्डी उतर गई थी। एडजस्ट करवा ली। प्लास्टर चढवा लिया है। कुछ दिना म ठीक हा जाएगी।

"भगवान रक्षा करें। आजकल तो शर्माजी पूछिए ही मत गाड़ियाँ ऐसे अंधाधुंध चलाई जाती हैं कि आए दिन एक्सीडेण्ट होते ही रहते हैं।"

मानस महोदधि बोले, 'अजी कुछ मत पूछिए। हम तो समझते थे कि इंदिरा शासन में अनुशासन आ जाएगा पर यहाँ तो अभी आरम्भ से ही और भी चौपट होने लगा।

डाक्टर कुलश्रेष्ठ श्रीमती गांधी के बड़े भक्त थे, बोले, 'वे बेचारी क्या करें? जब हम-आप ही सब तरह से चौपट हो गए हैं। दरअसल ये विरोधी पार्टियाँ उनकी सरकार को चलने ही नहीं देना चाहतीं।

शर्माजी बोले विरोध तभी होता है जब कोई न कोई कमी होती है।'

'अरे कमियाँ तो पचासों हैं। झंझटी नाव का खेना आसान नहीं है, शर्माजी,' डाक्टर कुलश्रेष्ठ बोले।

बातों को राजनीति के चक्र से निकालने के लिए शर्माजी से गुरसरन बाबू बोले 'और सुनाइए शर्माजी, बाबू नौबतराय कहाँ गए?'

'वह आजकल अपने कमरे में बैठते हैं बाबू साहब, और इस वक्त तो साहब भी आए हुए हैं '

साहब की बात हो ही रही थी कि एकाएक उपप्रशासक महोदय श्री रासबिहारी टण्डन और उनके पीछे प्रशासक के पी० ए० बाबू चन्द्रप्रकाश ने कमरे में प्रवेश किया। सब लोग आदर से उठ खड़े हुए। हेल्थ अफसर डाक्टर गोयल के कमरे की ओर जाते हुए चन्द्रप्रकाश ने बाबू गुरसरन को आँख मारी और दोनों मुस्करा दिए। मानस महोदधि मिश्र जी की दृष्टि में ये मुस्कराहटें छिपी न रह सकीं। उनके भीतर जाने के बाद पूछा 'यह टण्डन और चन्द्रप्रकाश यहाँ क्यों आए हैं?

शर्मा बोले 'पता नहीं। मगर कोई एक्स्ट्राआर्डिनरी बात है जरूर। अरे भाई डाक्टर कुलश्रेष्ठ, प्रश्नकुण्डली तो लगाओ।

गुरसरन बाबू ने बीच ही में टोक दिया। क्या प्रश्न-व्रश्न की बात करते हो यार इतनी बड़ी ज्योतिष विद्या को इतनी छोटी छोटी बातों के लिए तकलीफ देने की जरूरत ही क्या है?

ठीक कहा। इसमें प्रश्न कुण्डली क्या करेगी शर्माजी? अब तो उत्तर कुण्डली बनानी चाहिए। प्रश्न तो मानस महोदधि की बात अधूरी रह गई। एच० ओ० साहब के चपरासी ने आकर शर्माजी से कहा, टण्डन

साहब आपको याद कर रहे हैं।

शर्माजी जल्दी से उठकर चल गए। मानस महोदधि अपनी कुर्सी गुरसरन बाबू के पास खिसका लाए और धीमे स्वर में पूछा गायन क्या ?'

'सस्पेंडेड। गुरसरन बाबू का स्वर धीमा किन्तु आखें ज़ोर से बोल उठी "नौनितराय भी।

एक गहरी सास के साथ डकारी छोडकर मानस महोदधि अपनी कुर्सी पर तन कर बैठ गए। तभी रत्ना ज्योतिषी अपना हिसाब पत्रा-समटकर प्रसन्न मुद्रा में बोले रिटायरमेण्ट के बाद हमारे पूज्य बाबू जी की चरण रज आज पहली बार आफिस में पडी है कोई बडी बात तो हानी ही चाहिए। यहा हमारे मानस महोदधि जी बैठे हैं सुदर काण्ड की एक चौपाई याद आती है कि उहा निसाचर रहहि ससका। जब ते जारि गयऊ कपि लका। चौपाई पूरी करके मानस महोदधि हस फिर गुरुशरन बाबू को मीठी दृष्टि से देखते हुए कहा हमारे बाबू गुरसरन लाल जी की जन्म कुण्डली में शत्रुहता योग पडा है डाक्टर साहब। मैं तो पिछले बीस वर्षों से देखता चला आ रहा हू 'वरुन कुबेर सुरेस समीरा। रन सनमुख धरि काहु न धीरा।

बडे साहब के कमरे से डाक्टर गोयल सिर लटकाय बुझी लालटेन-सा मुह लिए उपप्रशासक टण्डन जी के साथ निकले। सारा दफ्तर खडा हो गया। उपप्रशासक की नजर गुरसरण बाबू पर पडी मुस्कराकर पूछा 'कहिए आप यहा कैसे ?

'जनम भर की आदत है हुजूर। कभी-कभी पुराने मित्रों से मिलने चला आता हू। गुरसरन बाबू के कहते ही उपप्रशासक का साथ छोडकर डाक्टर गोयल तेजी से दफ्तर के बाहर निकल गए। टण्डन साहब उत्तर सुनकर धीमी चाल से निकले। जब शेर निकल गया तो दफ्तरी चिडिया चहचहाने लगी। मानस महोदधि गुरसरन बाबू की जाघ थपथपाकर बोले, जय हो। जय हो। जय जय धुनि पूरी ब्रम्हण्डा। जय रघुवीर प्रबल भुजदडा। (आखें मूदकर अपने दोनों कानों को लवें छुइ और हाथ जोडे) अब हमारे सहयोगी हरवचन सिंह सरदारे का क्या होगा भाई। वह भी तो लिस्ट में थे। ये हमारे जनम मरन बाबू माताप्रसाद भी थे।'

माताप्रसाद सुनकर काप उठे। उसी समय गुरसरन बाबू कुर्सी से उठते हुए गदगद वाणी में बोले अरे, अरे शेर तेंदुये तो मर ही गए अब

भेडियों, स्यारों को भी देख लिया जाएगा। चलूं, ज़रा शर्माजी को बधाई और नौबतराय को विदाई की शुभकामना देता ही आऊं।'

गुरसरन बाबू अपने पुराने कमरे की तरफ गए जहां शर्माजी नौबतराय से राज ले रहे थे। उनके चले जाने के बाद मानस महोदधि ने कुर्सी छोड़कर उठते हुए एक अंगड़ाई ली, फिर कहा समय अब कठिन से कठिनतम आ रहा है, कुलश्रेष्ठ बाबू। सोचता हूं प्रीमेच्योर रिटायरमेण्ट लेके घर बैठ जाऊं और श्रीराम सीरकार के ध्यान में ही समय बिताऊं। कुर्सियां अब तेज़ी से उछलेंगी। (न्वे स्वर में) ये हमारे बाबू साहब दफ्तर से गए नहीं हैं यह समझ लो सब जन।

"अब यहां कौन आएगा, मिश्रा जी ?'

'मिश्रा यहां होती तो उत्तर देती '

गलती हुई महाराज क्षमा चाहता हूं लेकिन चलता बात को न तोड़ें। मैं समझता हूं कि मुश्ताक अहमद ही आएंगे अभी तो।'

हां चीफ सेक्रेटरी इंस्पेक्टर हो दर्जा दोयम हैं फिलहाल वही आ सकते हैं। किन्तु अभी कुछ कहा नहीं जा सकता। आजकल राजनीति में भया जिसका पौवा पसेरी बैठ जाय वही सच्चा हकदार है।'

"आपकी बात सच है। ज्योतिष के अनुसार भी सन 85 तक तो बहुत ही कठिन समय है। बड़े बड़े उलटफेर हो सकते हैं।"

उसी समय बाबू नौबतराय बाहर आए। चेहरा फकफकाया हुआ लेकिन ओढ़ी हुई मुस्कराहट के साथ सबको हाथ जोड़कर कहा, अच्छा खुश रहो अहलेवतन हम तो सफर करते हैं।

सब चुप रहे।

छज्जू चपरासी नौबतराय के पीछे पीछे दस पांच कदम गया पर उन्होंने पीछे मुड़कर भी न देखा मराल हुए निकल गए। छज्जू जब लौटकर दफ्तर के कमरे में आया तो मेज़ों के बीच में खड़ा होकर नाच उठा। खिचड़ी दाढ़ी मूछों वाले दुबले-पतले छज्जूराम की नाचत देखकर सभी हंस पड़े। बात मजाक की ओर बढ़ने से पहले ही बाहर बाबू गुरसरन लाल का मंद मंद मुस्कराता दिप दिप-सा चमकता हुआ भव्य मुखड़ा अपने पुराने कमरे के दरवाज़े पर झलका। कुछ-कुछ शाही कदमों की चाल से चलते हुए वे बाहर आ रहे थे। मानस मातंड ने नज़र पड़ते ही उन्हें अपनी जयजयकारों से लपका 'जय जय हो। आपकी प्रबल पराक्रम की गाथा स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने के योग्य है। वाह, वाह क्या कहना।"

छज्जूराम न घर हो दफ्तर न हा —एस स्वर म ललकार कर कहा 'अर मिसरा जी आप तो खाली कथा ही बाचत हैं। मुला रावूजी न यहा प्रितच्छ रामलीला कर दिखलाइ। कहकर छज्जूराम गुरसरन बाबू क चरणा पर झुक गए। यह शायद पहला ही अवसर था जब मानस महोदधि उन्हें मिश्रा जी कहने वाले की टाग न खाच सके। बाबू साहब की आवाज़ म अफ्सरी रौब झलका चपरासी को झिडककर कहा अब तुम्हार रिटायरमण्ट क दो-ही तीन बरस रह गए है। आदतें बदलो। तमीज सीखो। जाओ।

सबस रामाश्यामा करके दरवाज़े के पास जाकर फिर पलटे कहा अरे भाई मिसिर जी महाराज आपके साथ जरा एक काम था।

मानस महादधि जूत म पर डाल चटपट अपने कोट की सिलवटें सीधी करते हुए गुरसरन बाबू क पास आए। गुरसरन बाबू ने उनके कधे पर हाथ रखा और दफ्तर की सीढिया उतरने तक कुछ न बोले सडक पर आकर कहा गुरुजी तुम्हार बिजनेस की बात है।

आना कीजिए।"

हागकाग से हमारे बेटे के साथ एक वहीं के रहने वाल सिंधी और एक अमरीकी सेठ आ रहे हैं। अरबपति पार्टिया है। ता सतापी ने मुझे लिखा है कि सिंधी सठ रामलीला देखना चाहता है। उसने लिखा है कि सगीत नित अकादमी जाओ। मैंन सोचा पहले आप ही से क्या न पूछ लू।

मानस महादधि ने गभीरतापूवक कहा जब अरबपति और विदशी है ता प्रभु मूरत भी जाकी रही भावना जसी' क अनुरूप होनी चाहिए। कुछ नत्य कुछ गान कुछ कुछ मुखौटा और वशभूषा की तडक भडक —मतलब यह है कि नव रस सिद्ध विलायता आरकस्ट्रा क माथ।

बाबू गुरसरन की बाछ खिल उठा बडो प्यार भरी दष्टि से उनका दखन हुए मीठ स्वर म कहा हमारे कस्ब क रत्न है आप तिजोरी म रखन लायक।

हम एक एस प्रदशन म भाग ल चुक हैं। तब खाली हम अपने प्रवचन अग्रजा म बोलना पडा था बाकी हमारे रामायण पाठ स विदशी बडे प्रभावित हुए थे। खर रामकृपा स आपका आयाजन बडा सफल हागा। राजधानी म सगीत नाटक अकादमी है म्यूजिक कालेज है सबम हमारा प्रम व्यौहार है। रुपये दस म बारह हजार लगेंग।'

'जरा ज्यादा है मिसिर जी।"

अपनी दक्षिणा मैंने इसमे जोडी ही नही महाराज। अरे डासरा, म्यूजिशियना आर्केस्ट्रा वेशभूषा, राजधानी से आर्टिस्टो को यहा तक लाने ले जाने का खर्चा इन सबका अनुमान लगाइए और रही मेरी दक्षिणा तो उसके लिए तो जब श्री राम जानकी सरकार की आरती करू तब जो श्रद्धा हो चन्दा दीजिएगा।'

बाबू गुरसरन कुछ देर सोचते रहे फिर कहा, ठीक है, आप कल हमारे सतोषी परशाद के दफतर मे चले आइए। खर्च के लिए कुछ एडवास ले लीजिए मगर एक शर्त है, वह भी सुन लीजिये।

'सुनाइए।

'इस महीने की पच्चीस तारीख का शो होगा। कहा होगा यह आपको बाद मे बतलाया जाएगा। मेरा ख्याल है कि राजधानी के फाइव स्टार होटल 'मौर्या' मे जहा वह लोग ठहरेंगे उन्ही का आडिटोरियम बुक करा लू। वही और भी बडे-बडे लोग मत्री वत्री बुलवा लिए जाएगे।

'अरे अभी सत्रह दिन है। कल से दौड धूप पर लगूगा तो पन्द्रह दिनो मे रिहर्सल पक्के हो जावेंगे। खैर सब ठीक होगा। आप निश्चित हो जाए।

चौदह

दिन का तीसरा पहर। पिल्लू के कमरे में और सब थे केवल चौहान अभी तक नहीं आया था। स्टोव पर केतली में चाय के लिए पानी गर्मा रहा था और जवानों पर बहस। सत्तार चिढ़कर कह रहा था मेरे साले नवमली। हमारी नेशनल लाइफ पर आखिर क्या असर डाल सके ? हम जैसे कितने जवानों की जिंदगियां चौपट हो गई साली।

अमां यार उल्लूपंथी की बातें न कर। असल में यह सोच कि यह वाममार्गी एक अच्छे उद्देश्य के लिए इतना जोश इतनी दीवानगी रखते हुए भी जगह जगह असफल क्यों हुए ? जैसे हम लोगों को सुहागी और सरमुतिया काण्ड पर यथायुक्त और उचित क्रोध आया था वैसे ही मार्क्सिस्ट कम्युनिस्टों में के उग्रवादी गुट ने इसे शुरू किया। वह फेल हो गए। हम भी फेल हो गए। समझा बेटा हवलदारज़ाद।" हरसुख ने कहा।

केतली जोरदार सुस्कारे छोड़ने लगी थी। सत्तार ने स्टोव बन्द किया। चाय की पत्ती डालने के लिए ढक्कना खोला और बंद किया फिर अपनी दाहिनी ओर तख्त पर रखे प्याले शीशे के गिलास आदि हाथ से दीवार की ओर खिसकाये और उधर मुंह करके आमने सामने बैठ गया। ठंडे स्वर में हाथ जोड़कर बोला 'मेरे बाप थे, रिश्वतें ली इससे मैं इन्कार नहीं कर सकता मगर ए इंटलेक्चुअल आला सेठजादे जनाब रमेश गोयल साहब और जनाब वकीलजादे हरसुख यादव साहब आप दोनों के वालिदेबुजुर्गवार तो भ्रष्टाचार के ममदर के हूं वंस और शार्क हैं। सूप बोले तो बोले छननी क्या बोले जिसमें बहत्तर छेद।

रमेश ने हंसते हुए कहा 'मान लिया यार। अब झगड़ा मत करो। लाओ चाय दो झटपट। ये बिल्लू कहां गया है यार हरसुख ?'

शैतान को याद करो शैतान हाजिर। पीछे के दरवाजे से निकल हंसता हुआ बोला सत्तार क्या बात है बेटे मुंह क्या फूला है तेरा ?'

रमेश ने हंसकर कहा अरे इस हरसुखवे ने बिचारे की खोपड़ी पर

नक्सलिया की भस चढा दी, चुटीला हा गया है तुम कहा थ इतनी दर से ?"

'वो ज़रा, मकान मालकिन ने बुलवाया था मा '

' बाबू साहिब ! अर बाबू बिल्लूसरण जी हैंग ? ' सीढिया की पतली सुरग से आवाज़ आई।

कौन आया ?

केतली म दूध चीनी डालते हुए सत्तार का हसी आ गई 'वाह क्या नाम लिया है बिल्लू सरन। अब मैं भी यही कहा करूगा।

कौन है भाई ?" कहत हुए बिल्लू उठकर सीढिया की तरफ झाकने चला गया। दखते ही कुछ-कुछ पहचाना मगर चुप रहा।

टरीलीन की पतलून बुशर्ट खादी की टापी से झाकती चुटिया और बुशर्ट म झाकती कण्ठी के साथ कपाल पर कुकुम का रामानदी चूल्हा। दोहरे बन्न के दाढी मूछा वाले भगत जी० लालजी हाथ म सुभाष छाप झाला लटकाय सीढिया के दरवाज़ तक आ गए। बिल्लू सरककर एक किनारे हो गया। रमेश और हरसुख सम्हलकर बठ गए। सत्तार कपा और गिलासा म चाय आजता रहा। सबकी तरफ दोना हाथ उठाकर खीसें निपोरते हुए 'ज सदगुर साहेब किया और पास खड़ हुए बिल्लू की तरफ देखा। बिल्लू बोला कहिए।

भगत जी सामने बठे हुए रमेश का ही बिल्लू समझ रह थे इसलिए अकडकर बोले कहूगा मगर आपस नहीं। मैं श्रीमान बिल्लूसरण जी

सत्तार बोला अजी भगत सुन्दासरन जी साहब आप बिल्लू सरन स ही बात कर रहे हैं। (रमश की ओर सिर घुमाकर) ये तो बिल्ली सरन है।'

चौककर भगतजी क तवर बदल गए, गिडगिडाते हुए बिल्लू को दखा कहा, "आप ही बाबू गुरसरण लालजी क सुपुत्र हैं ? '

जी हा आइए बठिए।

' छिमा कीजिएगा। आपको कभी दखा नहा था

' कोई बात नहीं। बैठिए चाय पीजिए। सत्तार न पहला गिलास उनके सामने रखा फिर औरों की तरफ चाय क प्याले बढाते हुए चहककर कहा 'अरे भाई हरसुख, पहचाना नहीं इन्हें। य द फेमस भगत सुन्दा सरन

"हा ऽ। सदगुर साहब तो अपने आपको राम जी का कुत्ता कहते थे पर मैं तो कुत्ता राड का, घूरा मरा नाऊ।" कहकर दम तोड सा दिया, गदन लटका ली फिर एक गहरी सास ढीलकर चाय का गिलास उठाया एक घुडका लगाया और फिर एक ठडी सास ली। चारो मित्र ध्यान से भगतजी की एक एक भाव भगिमा देख रहे थे मद मन मुस्कराते हुए एक दूसरे को कनखियो से ताक रहे थे। एक चुस्की लेकर बिल्लू ने कहा "कहिए भगतजी कैसे कष्ट किया ?

'क्या कहूँ। सत्गुर साहेब (कान पकडकर) नई नई रहीम साहेब का सबद है कि जापर बिपता पडत है सो आवत यहि देस। कहते हुए आखें भर उठी भर्राये गले से कहा आप सब लोगो ने सरसुतिया सुहागी की मरजाद बचाने के लिए जुद्ध किया अब मेरी लाज बचाइय। क्या कहू ससुरी के पहले यार की लौंडिया ने आज भरे बजार मे मेरे ऊपर जूता खीच मारा और उल्लू का—(रोना शुरू) प प पटठा कहा। भगत जी फूट-फूटकर रोने लगे।

दाढी मूछो वाले तीस बत्तीस बरस के जवान का हुदक हुदककर रोना देख चारो को हसी आ रही थी और दुख भी हो रहा था। और लोग चाय पीते रहे मगर बिल्लू ने उनकी बाह पर हाथ रखकर पूछा शात हो भगत जी यह बतलाइए कि किस लडकी ने भरे बाजार मे आपका अपमान किया ?

हाथो से आसू पोछकर रूमाल तलाशने के लिए बुशर्ट और पतलून की जेबें टटोल डाली न मिला तो झोले से मैला अगौछा निकालकर मुह पोछने लगे फिर कहा किसकी लडकी बतलाऊ भया। जनम मरन रजिस्टर पर तो पिता की जगह मेरा ही नाम चढा हैगा और वो भी इस पापी अधम को अपने हाथ से ही चढाना पडा था क्योकि बेटी का बाप उस समै नगरपालिका का अधच्छ था मेरा सगा चाचा साला हरामी की औलाद! जब वो पेट मे आई तो ससुरे ने जबरदस्ती मेरे साथ उसकी मयो के फेरे डलवा दिये। सदगुर साहब उसी के लिए कह गए हैं कि जारू जूठन जगत की

अरे तो तलाक दीजिए हरामजादी को। किस्सा पाक कीजिये। ये भा भा भा भा रोते क्या हैं ?

सत्तार का इस तरह कहना, विशेष रूप से सुनन्दा को हरामजादी कहना भगत जी० लाल को बुरा लगा। रोना सिसूरना बिसार कर सतेज स्वर मे बोले, "एक कनक अरु कामिनी निसफल किया उपाय। वह तो

सदगुर साहब मेरे लिए सैकड़ों बरस पहले लिख गए थे। मगर करम लिखा भी कुछ होता है। मेरी अम्मा क्या अपने बस मे होकर ठाकुर बन्कू सिंह मेरे पिता की तावेदार बनी? उनकी दा दा ठकुराइन साथ निकली और मेरी अम्मा ने मुझे जनम दिया। ठाकुर बन्कूसिंह की जैजाद का इकलौता वारिस होके भी मैं अधिकारी नहीं हू। कारन कि मेरी अम्मा मेरी जगदम्बा नीच जात की थी। वो क्या हरामजादी कहीं जाएगी? मेरी सुनन्दा को फिर हरामजादी क्या कहोग? और अगर है तो उसे हरामजादी बनाने वाले ऊची जात वाले—ताकत वाले—पैसे वाले अर्थात आप सब लोगों को भी हरामजादा बल्कि हरामजन्दर नहीं कहा जायगा?" प्रश्न की लकीर अपनी आखों से सत्तार की आखों म सीधी खीचने क लिए गदन उधर घुमा दी।

भगत जी की उलट बासी ने थोड़ी देर के लिए सबको अपने प्रभाव मे बाध लिया। वह सबसे बिल्लू न तोड़ा, पूछा तो आप यहा किसलिए पधारे है?

'हा अब आपने काम का प्रश्न किया है। बात य है कि कल लता के पास नियूयाक स सुनदा की एक चिट्ठी आई है, साथ म एक फोटू है। आपके सिरीमान भाई साहब और वो ससुरी गलबहिया डाल खड़े है और आस-पास ढेर सारे गुड्डे-गुड़िया, खिलौने और चीज वस्तुओं का प्रदरसन हो रहा हैगा और लिखा है, टु लता, मयक एंड रस्मी विथ लौ फ्राम मम्मी पापा। खैर, पापा चाहे जितने बनाओ हम कुछ नहीं कहेंगे। हमारा आसिरवाद है। बाकी जो य लिखा है कि अकर अर्थात मैं ठीक तरह स तुम्हारी देखभाल करते हैं क नहीं करते और जो न करें तो वह दखा कि आकरके मैं उन्हें ठीक कर दूगी। सो इससे हमारा भारी अपमान हुआ है। लड़किया अवश्य यारो की हैं परन्तु मयक तो मेरा है और य सबा भी भयी कि क्या वो ससुरी आयके मुन्ने ननाके ला नहा द दगी।

लम्बी बातो का क्रम झटके से तोड़कर बिल्लू न पूछा, 'इसका उत्तर भला मैं क्या द सकता हू?

"सो तो नहीं द सकत मैं जानता हू। मैं तो यह अरदास करन आया था कि आप अपने भाइ साहेब से कहिएगा कि उस चौरीस घण्टे भर ही अपने पास रखें बाकी हमारा घर उसमे न छुन्वार्ये। हम आपके पाव पड़ते हैं। हमारी आबरू न गिराइये।

'आपकी आबरू अब है कहा। व तो लुट चुकी।' सत्तार ने फिर

धरा खेल दिखला कर भगत जी को ताने दिया। व बोले— जब तलक सुनन्दा मिसज जी० लाल है और उसको म ताना वे बाप की जगह मेरा नाम दज है तब तलक मेरी आबरू कौन ले सकता है। बस मेरी यही प्रार्थना है आप से।'

यह सब बातें पापा से कहिए।

बात असल म य है कि बाबू गुरमरन लाल जी मेरे आफीसर रह हैं और अब तो मेरे मालिक क पिता भी हैं। उनसे बहुत लज्जा आती है। आप कह सकते है। और यह भी कह दीजिए कि अगर उनसे बच्चे होंगे तो उनके बाप की जगह भी मैं अपना नाम लिखा दूगा। बाकी मेरी जाउका न जाय घर न बिगड यही आरजू है मेरी। आखा म फिर आसू कुछ-कुछ सुबकनें भी सुनाई दी।

चौहान आ गया। कमरे म भगत जी का नया नमूना देखकर चौंका। बिल्लू ने त्यौरियाँ चढाकर भगत जी से कहा भगत जी मुझे आपसे कोई सहानुभूति नहीं। मैं भाई से इस मामले म कुछ न कहूगा। आप जा सकते है।'

भगत जी० लाल ने उन्ह घूर कर देखा फिर एक क्रोध भरी हुकार सी छोडी। झोला उठाया खडे हुए कहा हज काब ह व ह के गया कती बार कबीर। मेरा मुगमा क्या खता मुरवा न बोन पीर। एस पीर हम को क्या बचावगे। आप लोगों के कारण देस रसातल म जाय रहा है।" और भी कुछ बड-बड करते निकल गए।

डर्टी। पवर्टेड। हरसुख धिना कर बोला। सत्तार ने चौहान से पूछा क्या वे साले अब तक कहा मर गया था?

'अरे मरा नहीं जिंदा हाक आ रहा हू और तेरे लिए भी जिंदगी का पगाम लाया हू।

सब लोग उत्सुक नजरो स उसे देखने लगे चौहान बोला अभी दोपहर म बिल्लू के पापा ने चपरासी भेज कर मुझे इसके भैया के दफ्तर म बुलाया।

नरसा छुटके नू भया के स्मगलर किंग्जा का काफिला आ रहा है न उनके स्वागत—

'हा हा मुझसे कहा कि बिल्लू तो नासमझी कर रहा है। दो तीन दिन इधर दो तीन दिन उधर—पाछ छ दिन का काम है। सौ रुपये रोज देंगे।

"सौ रुपये रोज ?" सत्तार उचक पड़ा।

'हां यह भी कहा कि बाद में परमानेंट कामकाज में भी लगवा देंगे चाहे तो गवर्नमेंट में या बिजनेस में।'

मुझे तो चल गया। बकवू मनरी में सतरी बनवा देने के लिए सिफारिश कर दें इसके पापा — बस। चौराहे पे 'गो स्टाप' का नाच नाचते हुए रोजी रोटी कमाऊंगा। फिर एक बीवी हो साथी—अब जवानी भड़कती है यार।

हरसुख आखें निकालकर गुर्राया 'साल अभी कुछ दिन पहले तो एण्टी ब्लैकमार्केटियर बन कर हम लोगों के साथ नाम कमाया और अब स्मगलरों के साथ नाक कटाएगा ? मिन्नू को देख, बाप भाई सब को छोड़ कर

बिल्लू कर सकता है मैं नहीं। मां-बाप दो ब्याहने लायक बहनें उनके लिए रोटी कमाना ही मेरे लिए सच्ची देश सेवा है।'

हां यार मेरे साथ भी यही समस्या है। पिता लकवे से पीड़ित। बड़े भाई फिल्मी हीरो बनने की धुन में ही दो बरस पहले अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़कर बम्बई गए सो जीरो बनकर वहीं लटके हैं। सालभर से तो चिट्ठी पत्री भी नहीं आई। खेत बटाई पर देकर गुजारा चलाया जा रहा है। जीविका मुझे भी पुकार रही है। जब रास्ता खुला है तो बंद नहीं करूंगा। जनता अभी विद्रोह के पड़ाव पर नहीं आई। आदर्शों के पाठ इतने जीवनों से जुआ खेलना मेरी आत्मा को गवारा नहीं है।'

'जाओ साला गद्दारी करो। अभी बिल्लू और रमेश मेरे साथ हैं।'

सत्तार चिढ़ गया बोला तुम्हारे पिता ने ढाई तीन लाख कमा लिए हैं। रमेश के बाप तो दस-बारह लाख के आसामी हैं। तुम्हारे बाप तुमसे लाख नाराज हों मगर वारिस तो तुम्हीं होगे। रमेश को भी '

बात का पटा देकर रमेश बोला, 'भई, तीन चार दिन पहले इसके पापा हमारे यहां आए थे। कम्बे की रामलीला कमेटी की प्रापर्टी—मुकुट कपड़े आदि—देने। मुझसे उन्होंने मेरे फादर के सामने भी कहा था कि बड़ा अच्छा मौका है। लम्पा और दुनिया की मेर का लाभ होगा। मैंने मना कर दिया। फादर भी बोले कि मेरे तीन लड़कों में अगर एक नेता बने तो हर्जा नहीं। वह प्रथ में नहीं आएगा।

हां भाई, अगर उनके पास बारह लाख हैं तो चार लाख तुम्हारे हिस्से में लिख जाएंगे। बस मुफ्त की कमाई से गुलछर्रे उड़ाना और मूल

तारों के मद्धम प्रकाश में नाचते पत्ते। सितारे फिर चमकने लगे।

इस बार टप्पर के नीचे दिखाई पड़ रहे थे ... गया अब कुछ रहस्य का प्रकाश होता जा रहा है गरीबों का जिन्दगी में प्रकाश होता जा रहा है। आदमी के इन्सान बनने का विश्वास अपने ही समाजवादी साथियों का पारस्परिक प्रेम ध्यान के लिए।

रमेश की हँसी गूँजी। तुम कितने बदल गये हो।

वह कहना चाहता है कि यही बात तो है समाजवाद की। इस बात का आज एक विशेष रूप से महत्त्व है। ... उनका रंग नया और निखरा था और हम गरीब लोग मात्र उनके चलते हो गए। ... पचता हो ...।

सितारे की मद्धिम-मद्धिम रोशनी रमेश का चेहरा साफ न था। तुम भी इन्सानियत और भाई समाजवाद लिए हो

किन्तु बीच में पड़ा चाँद और पास में आया हो मानो।

तुम चुप रहो किन्तु। मैं भी एक बार इस रमेश को दिखा दूँ ना मूँछ वाला। तुम वकील भी बड़े अच्छे बनोगे रमेश? तुम्हें न आएँगी फिर मुद्दत तक। गुमाश्तों-सरमायेदारों के न्याय से बचाना हो जान और माल की रक्षा के लिए वकील तुम्हें पूरा पुलिस का सहारा है। यार रे समाजवाद। किन्तु हमारा अन्त हो और इनका रूमाल जैसा उनका छत्रछाया में मार खायें और ऊपर भी गालागलौज करें? वाह रे समाजवाद।

चौकी का मजदूर का हमेशा के लिए न होना तुम भी तो जा रहे हो उसी सरमायेदार की राह में? उसी वकील की के आगे गवाह पास के लिए नाक रगड़ोगे?

जरूर रगड़ेंगे। समाज भी जान में आया जब हम यह महसूस कर चुके कि हम अपने और अपने घरवालों के लिए रोटी रोजी कमानी है और यह तुम्हारे साथ रहने से हम जिस रहनसहन की आदत वहाँ जाएँगे। आज मुफलिस काम पाने का लालच जरूर है मगर मान लो कि वह न भी मिल सका तो छः-सात रोज में यह छः-सात सौ रुपये तो कमा ही लेंगे। तुम्हारा समाजवाद जब तक पूँजीपतियों की कठपुतली बनकर नाचता रहेगा तब तक हम अपनी रोटी-सालन का जुगाड़ करने के लिए ऐसे ही सिसक सिसककर जीना होगा हमको। दिमाग में।

नस यार यों बहसें तो बहुत लम्बी खिंच जाएँगी। बहसबाजी

की पुरानी आदत का लाल सलाम कर और चल। देर हो रही है।"
चौहान ने सत्तार का हाथ पकड़कर घसीटा और सीढ़ियों की तरफ बढ़ा।

रमेश देखता रहा फिर मुस्कराकर कहा, 'यारो हमारा आठवें नवें दर्जे से यह एम० ए० तक का साथ क्या इतनी आसानी से भुलाया जा सकेगा?

नहीं, जब तक घुटे दिलों में हिलोरें उठाने के लिए यहां आए बगैर गुज़ारा नहीं। और भाई गुस्से में तुम दोनों को कोई अगर कड़वी

रमेश ने चौहान के गले में हाथ डालकर अपना और घसीट लिया फिर दूसरे हाथ से सत्तार की बांह दबाई कहा यार बहस का एक मुद्दा तो हल हो ही नहीं पाया। तूने छेड़ भर दिया खाली।

सत्तार बोला कौन सा मुद्दा?

'वही जवानी भड़कने वाला?

सुनकर सबके चेहरों का तनाव टूट गया हंसी लहरा उठी। हरसुख चहककर बोला मुनादाओं की कमी नहीं यारो। एक ढूंढो हजारों मिलता है। बाकी जिनकी किस्मत में जोरू होगी वे खुशी से गुलाम बच्चों की संख्या बढ़ाकर अपनी भड़कने शांत कर लेंगे।'

हंसी खुशी महफिल बर्खास्त हुई। रमेश भी फिर न रुका, चला ही गया।

कमरे में रह गए केवल बिल्लू और हरसुख। सन्नाटे के समंदर में थोड़ी देर दोनों ही डूबे रहे फिर चुप्पी तोड़ी बिल्लू ने। अपने कमरे में सरसरी दृष्टि घुमाकर बोला पिछले पांच बरसों में जब से मैंने यह कमरा लिया है हम पांचों की बहसें गाली गलौज हंसी-ठहाके इतने भर गए हैं इसमें कि अब उनका सूनापन अखरेगा बहुत अखरेगा।

हां यार मुझे तो लगता है कि एक जन्म में ही हमारा पुनर्जन्म होगा। आज की बहस में एक लाभ मुझे अवश्य हुआ है। मैं भी तुम्हारी तरह घर से अलग रहूंगा। पिता के पैसों पर समाजवाद का नाटक नहीं खेलूंगा। यहां नहीं राजधानी में रहूंगा। वहां नेशनल के दफ्तर में मेरी घुसपैठ है। रस्ता निकाल लूंगा। फ्री-लांस जर्नलिज्म। मेरे लिए अब यही पुनर्जन्म का जीविकोपार्जन कम बनेगा। पार्टी के दलदल में उतरकर अपनी गर्मी से उसे सोखना भी मेरा उद्देश्य होगा। मैं अब आतंकवादी दर्रे से संसदीय प्रणाली को बेहतर समझता हूं। उसी का सहारा लूंगा। मैं इन सा र राक्षसों की लंका में विभीषण बनूंगा। विभीषण गद्दार नहीं था

अपने घर में आसुरी सत्ता का विरोधी था।'

मैं सहमत हूं। हम भले ही यह दिन सा न सकें जो हमारे सपनों में बसा है मगर उसके लिए भरसक अपने समाज में बयारिके हिलोरें तो उठा ही दें।

तो तुम भी मेरे साथ राजधानी में क्या नहीं रहते?

नहीं, मैं अब यहीं रहूंगा। मुझे कहानी-उपन्यास लिखने की प्रेरणा इधर कुछ दिनों से अनायास मिलने लगी है एकाध लिख भी डाला है नाम रखा है मानव और स्वाति बूंद।

हरसरन मुस्कराया पूछा औरों से छिपाने में तुम अवश्य सफल रहे हो मगर मेरी नजरों में आ गई है बाबू तुम्हारी स्वाति बूंद।

जितू झेंपा मुस्कराया पूछा क्या देखा?

परसों की नरमी। तुम नीचे सिगरेट लेने गए थे। मैं आकर बैठ गया। ये पीछे के दरवाजे का पल्ला खुला

हंसते हुए हरसरन के कंधे को दबाकर कुछ कुछ झेंपते हुए कहा विधवा है बेचारी। दो बरस पहले केवल फेरों की गुनहगार हो गई थी। मेरी मकान मालकिन में एक तरफ मातृत्व भी भरपूर है और दूसरी तरफ अपनी दकियानूसियत में कठोर भी है। श्यामा भी हठीली है। दो बरस कठिन तप से काटे। मैं फरारी से लौट के आया तो ऐसी श्रद्धाभिभूत थी कि पहली बार यह पीछे का दरवाजा खोलकर आरती का थाल लिए कमरे में आई। आरती की, पैरों पर फूल चढ़ाए, पैर छुए। भावविह्वल बनी मुस्कराती हुई चली गई। फिर आई है पूछा आप खाना खाके तो नहीं आए? मैंने कहा भारी नाश्ता किया है भूख नहीं है। कुछ बोली नहीं सीधे हाथ पकड़कर भीतर ले गई। खाना खिलाया। माजी ने भी भद्रता की मिठास दी। अच्छा लगा।

फिर?

फिर दो चार दिनों के बाद ही हम दोनों बहोश हो गए। दोनों का पहला अनुभव। मैं फिर बहुत लज्जित हुआ कहा यह ठीक नहीं। अच्छा है तुम किसी से विवाह कर लो मैं एक अपनी बात से बंधा हूं और कोई बंधन न स्वीकारूंगा।

फिर?

'बोली मेरी जिन्दगी में जो पहली बार आया है उसे ही मन में पति भी मान लिया। अब ब्याह हो न हो तुम चाहे छोड़ दो मैं न छोड़ूंगी।

हठीली है। मा से भी मेरे सामने ही साफ-साफ कह दिया।"

"मा क्या बोली ?"

"पहले जरा उदास और खिची खिची रही। अब ठीक है। कहने लगी कि आबरू न लुटे। मैंने कहा आबरू जाने का डर हुआ तो शर्तिया विवाह कर लूगा। पर अभी तो सब ठीक ठाक है आगे की कौन जानता है। अच्छा यह तो हुई उप बात अब मुख्य पर आ जाओ। हम अपने उद्देश्य को लेकर एक हैं।'

"एक हैं।"

"लेकिन मैं अब शायद सक्रिय राजनीति म उतरना अपने लिए कम उचित नही समझता हू। टयूशनें पत्रकारिता जसे चलती है चलती रहेगी। अगर यह कथा उपन्यास लेखन मुझसे सफलतापूर्वक निभ गया तो फिर यही मेरा करियर भी बनेगा।'

' राजधानी तो आया करोगे न ?"

"नित्य। बिना नागा। लायब्रेरी आए बिना कही मेरा गुजारा है भला। फिर वही से खबरो की रोटिया भी भुनेंगी।"

"अच्छा, मैं चलूगा। एक बार पापा स दो दो बातें तो होनी ही हैं।'

हरसुख भी चला गया। बिल्लू सोचने लगा पापा ने मुझे अकेला करने के लिए मेरे मित्रो को भी फोड लिया लेकिन व मुझे डिगा न पाएगे। थोडी देर बाद उठा। नीचे के दरवाजे बन्द करने गया। जब ऊपर आया तो देखा, कमरे मे श्यामा उसकी आशा के लिए उत्सव बनकर खडी है। •

—अमृतलाल नागर
16 अप्रल 1982
11 बजे रात्रि

संजय प्रिंटस मानसरोवर पार्क शाहदरा, दिल्ली 281014

अपने घर में आमुरा गया का दिया था।

मैं सहमत हूँ। हम लोग तो वह दिन भी देख चुके हैं जब हमारे समाज में बना है मगर उनके लिए आज भी समाज में वैधानिक दिक्कतें तो रहा है।

तो तुम भी इस गलत रास्ते पर क्यों गए?

नहीं मैं अब यही कहता। पर कहा तो उस दिन लिखा था इतना स्पष्ट कुछ लिखा न जाता देखकर दिन तो मानी है रुचाड़ लिए भी कमी है नाम रखा है पावन और स्वाति वन।

हलका मुस्कराया पूछा और तो हिचकिचाते कुछ अवसर पर कहते कहे हो जाए मेरी नजरों में आ गई है यानी तुम्हारी स्वाति वन।

किन्तु ऐसा मुस्कराता पूछा कब देखा?

परसों फिर देखा। तुम साथ सिगरेट पीने गए थे। आप यह गया। वे पीछे के दरवाजे का पता था।

हँसते हुए हरगुप्त ने कश को छोड़कर कुछ सोचते हुए कहा, 'विधवा है बेचारी। दो बरस पहले बचपन पति की गुनहगार हो गई थी। मेरी मकान मालकिन में एक तरफ मातृत्व भी भरपूर है और दूसरी तरफ अपनी दकियानूसियत में कठोर भी है। श्यामा भी हठीली है। दो बरस कठिन तप से पार। मैं पहली में लौट के आया तो ऐसी श्रद्धाभिभूत थी कि पहली बार वह पीछे का दरवाजा खोलकर आरती का थाल लिए कमरे में आई। आरती की फिर पर फूल चढ़ाए पैर छुए। भावविह्वल मुस्कराती हुई चली गई। फिर आई है पूछा आप खाना खाएँ या नहीं आए? मैंने कहा भारी नाश्ता किया है भूख नहीं है। कुछ बानी नहीं सीधे हाथ पकड़कर भीतर ले गई। खाना खिलाया। मांजी ने भी मन्नत की मिठाई दी। अच्छा लगा।

'फिर?

फिर दो चार दिनों के बाद ही हम दोनों बहोश हो गए। दोनों का पहला अनुभव। मैं फिर बहुत लज्जित हुआ कहा यह ठीक नहीं। अच्छा है तुम किसी से विवाह कर लो मैं एक अपनी बात से बंधा हूँ और कोई वचन न स्वीकारूँगा।

'फिर?

'बोली मेरी जिन्दगी में जो पहली बार आया है उसे ही मन में पति भी मान लिया। अब ब्याह हो न हो तुम चाहे छोड़ दो मैं न छोड़ूँगी।

हठीली है। मा से भी मेरे सामने ही साफ-साफ कह दिया।"

"मा क्या बोली ?"

'पहले जरा उदास और खिंची खिंची रही। अब ठीक हैं। कहने लगी कि आवरू न लुटे। मैंने कहा आबरू जाने का डर हुआ तो शर्तिया विवाह कर लूगा। खैर अभी तो सब ठीक ठाक है, आगे की कौन जानता है। अच्छा यह तो हुई उप बात अब मुख्य पर आ जाओ। हम अपने उद्देश्य को लेकर एक हैं।'

एक हैं।'

"लेकिन मैं अब शायद सक्रिय राजनीति म उतरना अपने लिए कम उचित नही समझता हू। ट्यूशनें पत्रकारिता जसे चलती है चलती रहेगी। अगर यह क्या उपन्यास लखन मुझसे सफलतापूवक निभ गया तो फिर यही मेरा करियर भी बनेगा।'

'राजधानी तो आया करोगे न ?'

"नित्य। बिना नागा। लायब्रेरी आए बिना कहीं मेरा गुजारा है भला। फिर वही से खबरा की रोटिया भी भुनेंगी।"

"अच्छा मैं चलूगा। एक बार पापा से दो दो बातें तो होनी ही हैं।'

हरसुख भी चला गया। बिल्लू सोचने लगा, पापा ने मुझे अकेला करने के लिए मेरे मित्रो को भी फोड लिया लेकिन व मुझे डिगा न पाएगे। थोडी देर बाद उठा। नीचे के दरवाजे बन्द करने गया। जब ऊपर आया तो देखा, कमरे म श्यामा उसकी आखा के लिए उत्सव बनकर खडी है। •

—अमृतलाल नागर

16 अप्रल 1982

11 बजे रात्रि

संजय प्रिंटस मानसरोवर पार्क शाहदरा दिल्ली 281014